

# नीराजन



पं. दीन दयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय

## हमारा साध्य

प्रचण्ड तेजोमय शारीरिक बल, प्रबल  
आत्म-विश्वास-युक्त बौद्धिक क्षमता  
एवं निस्सीम भाव सम्पन्ना मनः  
शक्ति का अर्जन कर, अपने  
जीवन को निस्पृह भाव  
से भारत माँ के चरणों  
में अर्पित करना ही  
हमारा परम  
साध्य है ।

पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय  
कानपुर

# नीराजन

वार्षिक पत्रिका

१९९०-९१



संरक्षक  
श्री ओम शङ्कर

प्रधान सम्पादक  
महेन्द्र प्रताप दुबे 'सुमन'

सह-सम्पादक

अंग्रेजी- श्री कृष्ण कुमार गुप्त 'निश्चल'  
श्री गया प्रसाद वर्मा  
संस्कृत- श्री गणेश शंकर बाजपेयी

# कहाँ क्या पढ़ें

## हिन्दी विभाग

रचना	रचनाकार	पृष्ठ
१- वन्दना		I
२- सम्पादकीय		IV
३- नीराजकों से		१
४- हमारी अस्मिता	जे० पी० श्रीवास्तव	३
५- सहज साधना और कबीर	शशिभाल सिंह सेंगर	५
६- जीवन	निशांत प्रताप सिंह	६
७- ऐतिहासिक पुनरावलोकन (सांस्कृतिक हत्या पर विशेष)	दिनेश सिंह भदौरिया	१०
८- राम जन्मभूमि-कितना सच कितना झूठ	अमित गुप्त	१३
९- राम-जन्मभूमि-मन्दिर- बोट-बैंक का शिकार	विश्वम्भर दयाल	१६
१०- जो अब इतिहास हो गया	आशुतोष तिवारी	१८
११- इतिहास के वे काले क्षण	अनुभव वर्मा	२०
१२- सरयू की लाली का उत्तरदायी कौन ?	यत्नेश पाण्डेय	२२
१३- राम जन्म-भूमि के बारे में कुछ तथ्य	मनीष महाजन	२४
१४- क्या यह मन्दिर नहीं ?	वेद प्रकाश सिंह	२६
१५- एक युग का अन्त	अश्विनी कुमार	३५
१६- गीता : ज्ञान का सागर	बृजेन्द्र सिंह यादव	३६
१७- चरित्र-निर्माण ही राष्ट्र निर्माण है	विकास अग्रवाल	३७
१८- भाषा-विवाद : एक साहित्यिक दृष्टिकोण	पंकज श्रीवास्तव	४०
१९- पं० दीनदयाल उपाध्याय	शैलेन्द्र कुमार	४१
२०- ॐ का महत्व	शैलेन्द्र गुप्त	४३
२१- गतवर्ष	अश्विनी कुमार	४७
२२- संकट की घड़ियाँ हैं	अखिल कुमार तिवारी	४९
२३- देश की संपर्क भाषा हिन्दी ही क्यों ?	विनय कुमार शुक्ल	४९
२४- देश की आजादी निशाचरी मूहूर्त में मिली थी	निर्मल पाण्डेय	४९
२५- रक्षा के बिना विकास भारतीयों से खिलवाड़	विकास मिश्र	४९
२६- क्या आप जानते हैं ?	आनन्द अवस्थी	४९
२७- हमारा विद्यालय	प्रवीन कटियार	४९
२८- सहानुभूति का फल	विशाल गुप्त	४९

रचना	रचनाकार	पृष्ठ
२९- प्राचीन विश्व के सात आश्चर्य	आनन्द कुमार श्रीवास्तव	५०
३०- भक्त की आस्था	योगेश श्रीवास्तव	५१
३१- तथाकथित छात्र (एक रासायनिक विश्लेषण)	अक्षय माथुर	५२
३२- लोकोक्तियों में स्वास्थ्य-चर्चा	डा रमाकान्त मणि	५३
३३- मंगल : एक चुनौती	दीपक अग्रवाल	५५
३४- राशियों और तारों के कल्पित रूप	दीपेश सिंह	५७
३५- भारतीय प्रक्षेपास्त्रों का संक्षिप्त परिचय	राजेश अवस्थी	५९
३६- लेसर किरणें	राजेश अवस्थी	६०
३७- आग्रह	परितोष श्रीवास्तव	६२
३८- क्वार्क क्या हैं ?	अमित राय	६३
३९- अति सघन अदृश्य आकाशीय पिण्ड 'ब्लैक होल'	प्रवीण कुमार सिवाच	६४
४०- डापलर प्रभाव किसे कहते हैं ?	कैलाश उपाध्याय	६६
४१- यह भी आपने कभी सोचा है ?	हिमांशु कटियार	६७
४२- कुछ और जानकारियाँ	अमित कुमार सिंह भदौरिया	६९
४३- विज्ञान सम्बन्धी कुछ रोचक तथ्य	श्रद्धेश चतुर्वेदी	७१
४४- अनोखी शीलें व नदियाँ	वेद प्रकाश सिंह	७४
४५- प्रसाद की अनुपम छाया	पंकज श्रीवास्तव	७५
४६- मैं हूँ अनादि, मैं हूँ अनन्त.....	ओम शंकर त्रिपाठी (प्राचार्य)	८०
४७- राम जन्म-भूमि	अवस्थी	८२
४८- वे जो गरल पी गये	कृष्ण कुमार गुप्त 'निश्छल'	९५
४९- क्रीड़ा विभाग		९४
५०- वार्षिक आख्या		९१
५१- शिक्षक परिवार		

### संस्कृत विभाग

रचना	रचनाकार	पृष्ठ
१- श्री राम	गणेश शंकर बाजपेयी (आचार्य)	१
२- श्री रामस्य चरित्रम्	संदीपगुप्ता	४

रचना	रचनाकार	पृष्ठ
३- अस्माकं विद्यालयस्य वार्षिकोत्सवः	प्रवीन कटियार	५
४- मातृ देवी भव पितृ देवी भव आचार्य देवो भव	विश्वम्भर दयाल	७
५- भारतीया संस्कृतिः	अभिनव मिश्र	९
६- अस्माकं मातृभूमिः	नरेश चन्द्र गुप्ता	११
७- कालिदासस्य काव्य-प्रतिभा	अक्षय माथुर	१३
८- शिष्टाचारः	शोभित श्रीवास्तव	१५
९- अणुबम्बोऽणुशक्तिश्च	दीपेश सिंह	१६

## English Section

1. Unto God		1
2. The Message of Ayodhya	Mr. J. P. Srivastawa	2
3. Some Ashes & Sparks from an Extinguishing Hearth	Mr. S. S. Sharma	5
4. What is Most Invaluable in life	Mr. Chandra Pal Singh	7
5. Life Without Newspaper	Ashish Kumar Singh	9
6. My Sweet Love	C. P. Singh Senger	10
7. National Integration	Rajiv Kumar Rane	11
8. What is Beauty in Real Sense	S. B. Singh Senger	12
9. Insat 1D	Ajay Kumar Shukla	13
10. Mahatma Gandhi	Arun Yadav	15
11. 'A' To 'Z' of Success	Anurag Singh	16
12. If I were the Prime Minister	Ankur Saxena	17
13. Dowry : A Curse	Bhowjeet Singh	18
14. Press & U. P. Government on Ayodhya Issue	Vineet Mishra	19
15. Jokes	Manish Gupta	20
16. Ram Janm Bhoomi us Babari Masjid	Shambhu Shanker	21
17. Karsewa Satyagrah	Ram Kinker Sharma	22
18. Decline & Fall of Spiritual Value	Nishant Pratap Singh	24
19. Drown Memory Lane	Shashank Gupta	25
20. Star Wars Threats & Counter	Deepak Agarwal	26
21. Hindu & Hinduism	Adarsh Srivastava	28



## 卐 राम-स्तुतिः 卐

( १ )

रामोराजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे,  
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः ।  
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्यदासोऽस्म्यहम्,  
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे हे राम ! मां पालय ॥१॥

( २ )

यन्मायावशवति विश्वमखिलं ब्राह्मादि देवासुराः,  
यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्ध्रमः ।  
यत्पादप्लव एक एव हि भवांभोधेस्तितीर्षवितां,  
वन्देऽहं तमशेषकारण परं रामाख्यमीशं हरिम् ॥२॥

# ममतामयी पूज्या 'बू' जी

विद्यालय के कण-कण में जिनका वात्सल्य प्रतिभासित हो रहा है।



ओ ममतामयि ! वात्सल्यमयी ! श्रद्धापूरित हम सबके मन । करते हैं तुमको कोटि नमन ।

# माननीय बैरिस्टर साहब

शिक्षाजगत के भीष्म पितामह



मेघ-खण्डों से तुम्हारे ये अमृत आशीष-  
जलती-धूप के एहसास को कम कर रहें हैं।  
प्रेरणा है यह तुम्हारी ही कि इस गहरे तिमिर में-  
दीपकों से ही सही, कुछ तो उजाला कर रहे हैं।

नरेन्द्रजीत सिंह  
बैरिस्टर

विक्रमाजीतसिंह मार्ग  
कानपुर  
टेलीफोन : ६२५२९

## सन्देश

प्रिय दुबे जी,

सादर नमस्कार ! आप विद्यालय की पत्रिका को इस बार बलिदानी रामभक्तों के प्रति श्रद्धाञ्जलि के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं जानकर प्रसन्नता हुई ।

राम भारतीय संस्कृति के प्राण हैं । उन्होंने शौर्य और धैर्य, सत्य और शील, त्याग और तपस्या के जो आदर्श हमारे सम्मुख रखे हैं उन्हीं से आज एक हजार वर्ष के आक्रमणों के बाद भी हिन्दू समाज जीवित है । हमारी संस्कृति ही वह बात है जिससे हमारी हस्ती नहीं मिटी ।

आक्रमणकारियों ने हमारे मनोबल को तोड़ने के लिये हमारे श्रद्धा केन्द्रों को ध्वस्त किया । राम के नाम पर सारा हिन्दू समाज आज एकात्मकता का अनुभव कर रामराज्य की स्थापना हेतु जागृत हो गया है । इसी कड़ी में अनेकों कष्टों और बाधाओं को पार करते हुए रामभक्त अयोध्या पहुँचे । वह रामराज्य की शिलार्यें स्वयं ही बन गये । अपना बलिदान दे दिया किन्तु उन्होंने जो नींव डाल दी है उस पर जागृत समाज भव्य मन्दिर बना कर रहेगा । यहीं से रामराज्य की भी नींव पड़ेगी ।

ऐसे बलिदानियों के लिये श्रद्धा व्यक्त करने के लिये शब्द ढूँढ़ पाना अत्यन्त कठिन है । उन्हें हृदय से प्रणाम करता हूँ ।

आपका :  
नरेन्द्रजीत सिंह



## सुभाषितानि

संकलनकर्ता : रमेश अवस्थी

सप्तम् "ख"

विद्या विवादाय धनं मदाय, शक्तिः परेषां परिपीडनाय ।  
खलस्य, साधोः विपरीतमेतत् ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय ॥१॥  
नमन्ति फलिनो वृक्षाः, नमन्ति गुणिनो जनाः ।  
शुष्क वृक्षाश्च सूर्याश्च, न नमन्ति कदाचन ॥२॥  
हस्तस्य भूषणं दानं, सत्यं कण्ठस्य भूषणम् ।  
श्रोत्रस्य भूषणं शास्त्रम्, भूषणं किं प्रयोजनम् ॥३॥  
अयं निजः परोवेति, गणना लघु चेतसाम् ।  
उदारचरितानान्तु, वसुधैव कुटुम्बकम् ॥४॥  
विदेशेषु धनं विद्या, व्वसनेषु धनं मतिः ।  
परलोके धनं धर्मः, शीलं सर्वत्र वैधनम् ॥५॥  
विद्या ददाति विनयम्, विनयात् यातिपात्रताम् ।  
पात्रत्वाद्दानमाप्नोति, धनार्द्धर्मं ततः सुखम् ॥६॥  
कोऽतिभारः समर्थानां, किं दूरं व्यवसायिनाम् ।  
को विदेशः सविद्यानाम्, कः परः प्रियवादिनाम् ॥७॥  
महाजनस्य संसर्गः, कस्य नोन्नति कारकः ।  
पद्मपत्र स्थितं वारि, धत्ते मुक्ताफलश्रियम् ॥८॥  
मातृवत् परदारेषु, परद्रव्येषु लोष्ठवत् ।  
आत्मवत् सर्वभूतेषु, यः पश्यति सः पश्यति ॥९॥  
मूर्खाणां पण्डिताः द्वेष्याः, निर्धनानां महाधनाः ।  
व्रतिनः पापशीलानाम् असतीनां कुलस्त्रियः ॥१०॥  
न विश्वसेदसविश्वस्ते, विश्वस्तेऽपि न विश्वसेत् ।  
विश्वासाद् भयमुत्पन्नं, मूलान्यपि निकृन्तति ॥११॥



## ॥ वन्दना ॥

यो वो शिवतमो रसस्तत्त्व भाजयतेह नः  
उसतीरिव मातरः । ( अथर्व० १/५/२ )

[ जो आपका उत्तम आनन्दामृत है, हमें तो वही प्रदान करो । सन्तान का शुभ चाहने वाली माता के समान हमें तृप्त और पुष्ट करो । ]

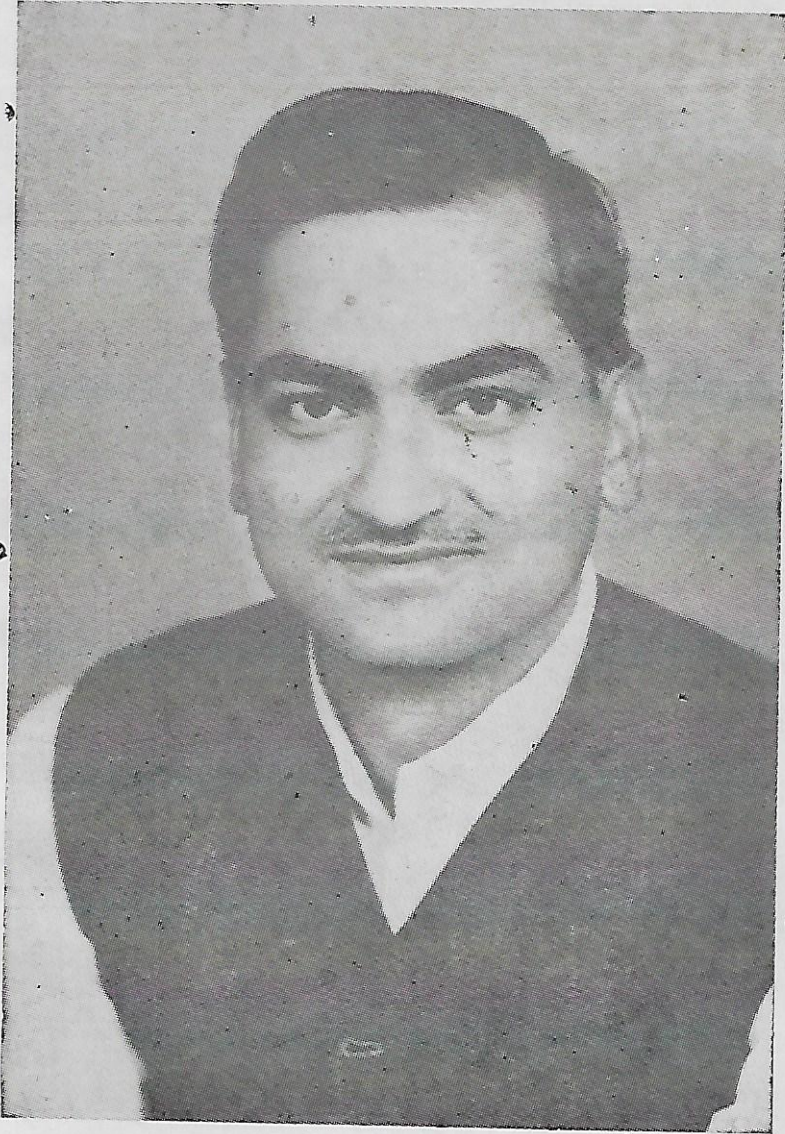
( नारद कृत जाड्यापह स्तोत्र )

नवार्क विम्बद्युतिमुद्गलज्ज्वलत्ता-  
टंक केयूर किरीट कङ्कणाम् ।  
स्फुरत्कणन्तूपुरावरंजितां  
नमामि कोटीन्दुमुखीं सरस्वतीम् ।  
वंदे सदाहं कलहंस उद्गते-  
चलत्पदे चंचल चञ्चुसम्पुटे ।  
निर्धौंतिमुक्ताफलहार संचयं-  
संधायंतोम् सुभगां सरस्वतीम् ।  
वराभयं पुस्तकबल्लकीयुत-  
परं दधानां, विमले, करद्वये ।  
नमाम्यहं त्वां शुभदां सरस्वतीम्-  
जगन्मयीं ब्रह्ममयीं मनोहराम् ।  
तरंगितक्षौम सिताम्बरे परे-  
देहि स्वरज्ञानमतीव मंगलै ।  
येना द्वितीयो हि भवेयमक्षरे-  
सर्वोपरि स्यां पर राग मण्डले ।

(गर्ग संहिता २१/४१)



# प्राचार्य श्री ओम शंकर त्रिपाठी



एक ऐसा व्यक्तित्व जिसमें सहृदय अध्यापक और त्रिवैकशील प्रशासक के गुणों का समन्वय है ।

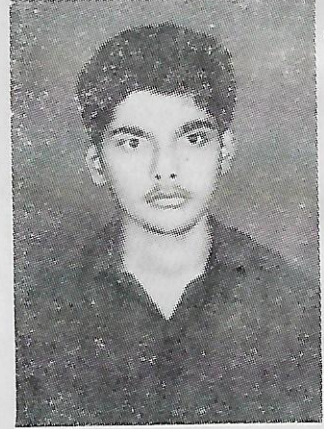
# हाई स्कूल परीक्षा १९९०

## विद्यालय - रतन



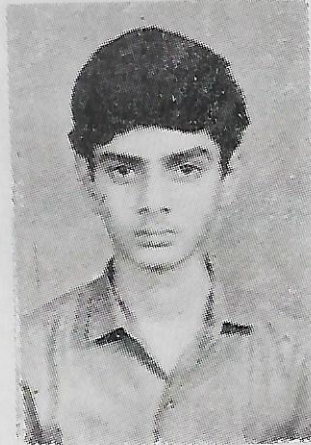
**प्रवीण गंगवार**

८६% अंक प्राप्त कर प्रदेश में  
द्वितीय स्थान



**अमित कुमार**

८७.३% अंक प्राप्त कर प्रदेश में  
अष्टम स्थान



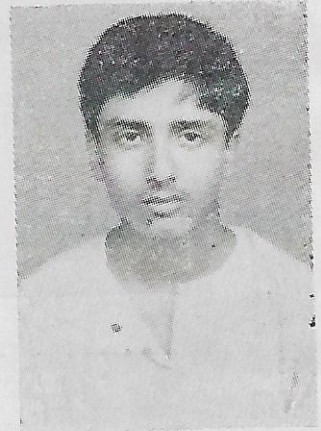
**आनोक पोरवाल**

८७.५% अंक प्राप्त कर प्रदेश में  
सप्तम स्थान



**मनीष शर्मा**

८८.६% अंक प्राप्त कर प्रदेश में  
तृतीय स्थान



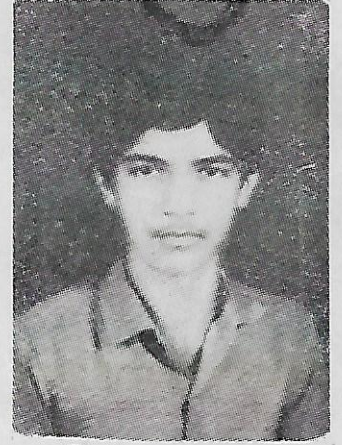
**आशीष स्वरे**

८७% अंक प्राप्त कर प्रदेश में  
नवम स्थान



**राजीव प्रताप सिंह**

८६.८% अंक प्राप्त कर प्रदेश में  
दशम स्थान



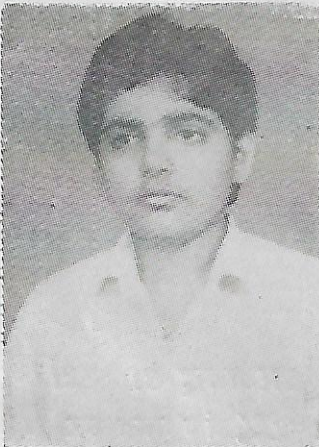
**निमेष यादव**

८६.५% अंक प्राप्त कर प्रदेश में  
बारहवाँ स्थान



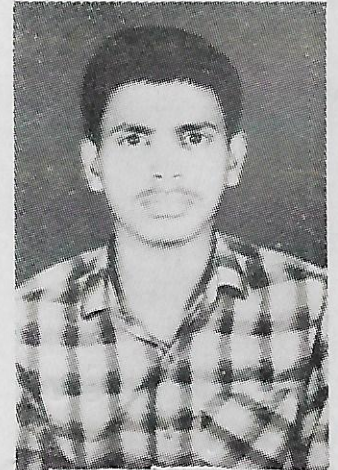
**अंकुर अग्रवाल**

८६.६% अंक प्राप्त कर प्रदेश में  
ग्यारहवाँ स्थान



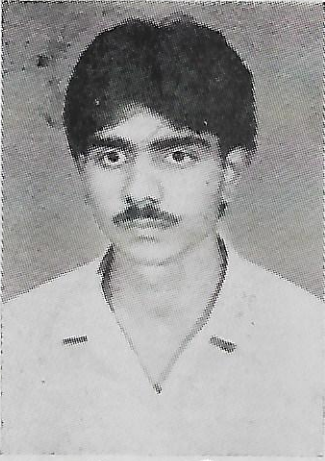
**प्रवीण कुमार**

८६.६% अंक प्राप्त कर प्रदेश में  
ग्यारहवाँ स्थान



**अमरीष चन्द्र तिवारी**

८६.५% अंक प्राप्त कर प्रदेश में  
बारहवाँ स्थान



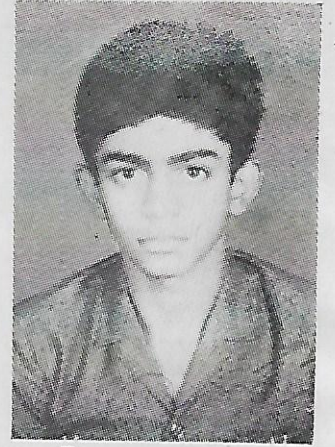
**सुशील कटियार**

८५.६% अंक प्राप्त कर  
प्रदेश में सत्रहवाँ स्थान



**अनुराग गुप्त**

८५.५% अंक प्राप्त कर  
प्रदेश में अट्ठारहवाँ स्थान



**अमित कुमार गुप्त**

८५.३% अंक प्राप्त कर  
प्रदेश में उन्नीसवाँ स्थान



**अविरल पाण्डेय**

८५.३% अंक प्राप्त कर  
प्रदेश में उन्नीसवाँ स्थान



**नमित जैन**

८५.१% अंक प्राप्त कर  
प्रदेश में बीसवाँ स्थान



**आनन्द अवस्थी**

८५% अंक प्राप्त कर  
प्रदेश में इक्कीसवाँ स्थान



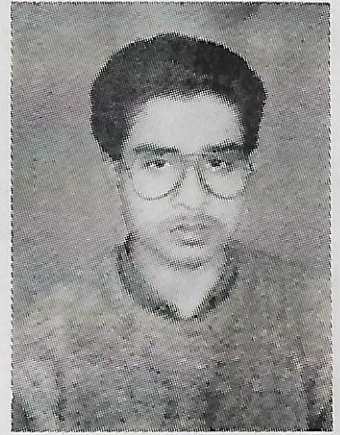
**गौरव गुप्त**

८६.५% अंक प्राप्त कर प्रदेश में  
बारहवाँ स्थान



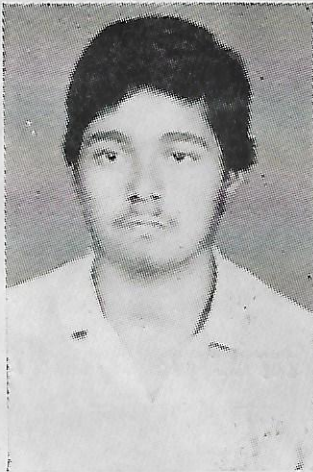
**अमित गुप्त**

८६.३% अंक प्राप्त कर प्रदेश में  
तेरहवाँ स्थान



**अभिषेक कुमार**

८६.१% अंक प्राप्त कर  
प्रदेश में चौदहवाँ स्थान



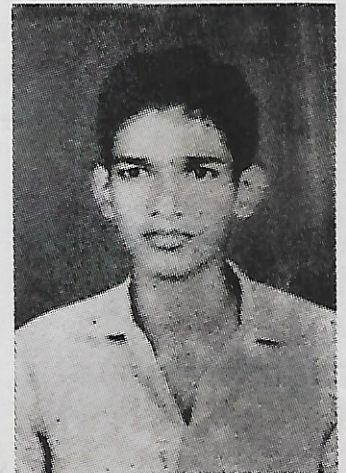
**मुनिरुप त्रिपाठी**

८६.१% अंक प्राप्त कर  
प्रदेश में चौदहवाँ स्थान



**आशुतोष मिश्र**

८६.१% अंक प्राप्त कर  
प्रदेश में पन्द्रहवाँ स्थान



**सुधीर कुमार सिंह**

८५.६% अंक प्राप्त कर  
प्रदेश में सत्रहवाँ स्थान

# इण्टरमीडिएट परीक्षा १९९०

## विद्यालय - रत्न



**नारायण स्वरूप निगम**

८३% अंक प्राप्त कर प्रदेश में  
सप्तम स्थान



**राघवेंद्र सिंह चौहान**

८२.८% अंक प्राप्त कर प्रदेश में  
अष्टम स्थान



**सौम्य त्रिपाठी**

८१.८% अंक प्राप्त कर प्रदेश में  
तेरहवाँ स्थान



**संतोष कुमार मल्ल**

८२.८% अंक प्राप्त कर प्रदेश में  
अष्टम स्थान



**आशीष कुमार तिवारी**

विद्यालय के सर्वश्रेष्ठ  
धावक

## सम्पादकीय

सुमन दुबे

‘नीराजन’ का यह अंक उन्हे समर्पित है जो राम-काज की धुन में राममय हो गये। धन्य हैं वे जिन्होंने राष्ट्र की अस्मिता के लिये प्राणों की आहुति दे दी। शत-शत नमन हैं अयोध्या के उन अमर शहीदों को जिन्होंने आसुरी प्रवृत्ति वाले “अधम अभिमानी” लोगों को यह बता दिया कि राम का प्रभाव, जो युगों-युगों से भारत-भूमि के साथ जुड़ा रहा है, आज भी है और सदैव ही बना रहेगा। यह भी बता दिया कि हिन्दू-चेतना प्रतिबंधित नहीं हो सकती। इसीलिये, आइये ! हम सब मिलकर उस चेतना से जुड़ें। अपने हृदय के श्रद्धाभाव को संव-बद्ध करते हुये सात्विक संकीर्तन का रूप दें। राष्ट्रीय अस्मिता से जुड़ी राम-जन्म की समस्या को निर्मूल करने में सहभागी बनें।

राम-जन्म-भूमि की समस्या राष्ट्रीय अस्मिता की ही समस्या है। क्यों कि राम कोटि-कोटि भारतीयों के आराध्य राम राष्ट्रीय के स्मिता के प्रतीक हैं। राम का आदर्श ही तो भारतीय आदर्श है। बिना राम के भारत कहाँ ? भारतीयता कहाँ ? राम तो हर भारतीय के रोम-रोम में रमे हैं। सदाँ की मिट्टी के कण-कण में व्याप्त हैं।

जो लोग आज राम के विरोध में खड़े हैं वे भारत में रहते हुये भी भारत के विरोधी हैं—भारतीयता के विरोधी हैं। वे राष्ट्रीय धारा के सहज प्रवाह में अवरोध उत्पन्न करने वाले विषम शिला-खण्ड हैं।

लेकिन यह धारा रुकने वाली नहीं है। यह बहेगी और निर्बाध बहती रहेगी। पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक, भारतीय परिवेश को अपने में समेटे हुये। स्वयं राम ने भी तो यही किया था। पूरी उत्तर-दक्षिण धुरी को एकता के सूत्र में बाँधने का प्रयास। समुद्र पार के उस तामसी प्रभाव को, जो उत्तर की ओर धीरे-धीरे बढ़ रहा था, रोक कर सात्विक सनातन संस्कृति का विस्तार सुदूर दक्षिण तक फैलाने का प्रयास किया था राम ने।

राम के अस्तित्व—बोध से विमुख या भयभीत होने वालों को क्या कहूँ ? निशाचर ! पशु ! या उलूक ! या फिर तीनों की प्रवृत्तियों का मिला जुला रूप ! तभी तो ये लोग अँधेरा—केवल अँधेरा चाहते हैं तकि उस अँधेरे में इनके दुष्कृत्य फलते-फूलते रहें। स्वार्थ के खूँटे से बँधे इन लोगों का विश्वास इनके गले में पड़े मोह-पाश में ही सीमित है। इनकी आस्था इनके चारे से जुड़ी है। उजाला इन्हें अन्धा बना देता है। इसीलिये सूर्यवंशी राम के नाम से भी इन्हें भय लगता है। इनका अहंकार इन्हें सत्य को नहीं स्वीकारने देता। क्योंकि वे जानते हैं कि सत्य स्थापित हो गया तो उनका अस्तित्व खतरे में होगा। इसीलिए वे असुरी ढंग से संगठित हो रहे हैं। गाँव की पगडण्डी से संसद के गलियारों तक इन्होंने अपनी माया फैला दी है। इनके चारों ओर अनीति और भ्रष्ट आचरण का समुद्र खाई के रूप में भरा हुआ है। इस समुद्र को पार करके इनकी आसुरी योजनाओं को ध्वस्त करना होगा। यह राम कृपा से ही सम्भव हो सकेगा। राम कृपा से ही ऐसे पत्थर प्राप्त किये जा सकते हैं जो पानी

पर तैर सकें। अर्थात् इनके अनैतिक और भ्रष्ट आचरण से निर्लिप्त और निर्विकार रह सकें। ऐसे ही पत्थर डूबने से बचे रह सकेंगे और इन असुरों के दुर्भेद्य दुर्ग तक पहुँचने के लिए सेतु बना सकेंगे। राम-कृपा से ऐसा पुल बनाने वाले संगठित होने लगे हैं। अब पानी पर पत्थर तैराने भर की देर है। राम-कृपा से यह असम्भव काम भी सम्भव होकर रहेगा। यही तो रावण के साथ भी हुआ था। तीनों लोकों में आतंक फैलाने वाले रावण का अन्त भी ऐसे ही हुआ था। अग्नि, मरुत आदि को अपने सकेतों पर चलाने वाला तथा काल को भी अपनी पाटी में बाँध कर रखने वाला रावण अपने अहंकारवश यह भूल गया था कि राम-विमुख होकर उसकी कुशल नहीं है। शिव का अखण्ड उपासक रावण भी राम-विमुख होकर शिवत्व नहीं पा सका। क्योंकि राम-विमुख होकर वह सांसारिक अनुरक्ति का केन्द्र बनकर रह गया था। होता भी यही है—जहाँ काम तँह राम नहीं, जहाँ राम नहीं काम। काम का ही पसारा तो थी रावण की रक्ष संस्कृति; जो राम का विरोध करके नाश को प्राप्त हुई।

१९१० के अक्टूबर-नवम्बर महीनों में जो कुछ भी अयोध्या में हुआ, उसने विदेशी दमनकारियों को भी पीछे छोड़ दिया। यही सब कुछ तो रावण-राज्य में हुआ था। तापसी रक्ष संस्कृति के विस्तार के लिये यज्ञ-विध्वंस, ऋषि-मुनियों का उत्पीड़न और उनका सामूहिक संहार ही तो रावण की राजनीति थी। राम ने इसका सटीक उत्तर दिया था सात्विक सनातन संस्कृति पर विश्वास करने वालों को संगठित करके। तभी तो वे उस रक्ष संस्कृति को निर्मूल करने में सफल हुये।

इसीलिए इस सनातन श्रद्धाभाव को स्वीकारना है। राम के प्रति श्रद्धा-भाव। राम-भक्तों के प्रति श्रद्धा-भाव। यह श्रद्धा शब्दों की औपचारिकता मात्र नहीं है, हमारे अस्तित्व-बोध की अनिवार्यता है।

श्रद्धा बुद्धि का विषय नहीं हो सकती। है भी नहीं। वह तो हृदय का उद्गार है। भावना की सहज अवाक् प्रस्तुति है। इसीलिए स्वतः उद्गमित होती है और एक बार फूट पड़ी तो रुकती-थमती नहीं। इसके लिए देश-काल की कोई शर्त नहीं। अनिवार्य रूप से फूट पड़ना ही इसकी शर्त है। जैसे ही जैसे धरती के अन्तर की रस धारा उर्ध्वमुखी होकर उत्स का रूप ले लेती है। यह ऐसी सुरसरि है जो हृदय के गोमुख से निकल कर निरन्तर बहती रहती है। बौद्धिक प्रपंचों के प्रस्तर-खण्ड व्यवधान बनकर इसकी निरन्तरता को रोक नहीं पाते। जो भी इसके सम्पर्क में आता है, उसे पुण्य-लाभ बाँटती चलती है। यह ऐसी पतित पावनी है जो स्वार्थों से मुक्ति देती है। इसीलिए जहाँ श्रद्धा है वहाँ स्वार्थ तो टिकता ही नहीं। मुक्ति दायिनी है श्रद्धा की यह सुरसरि। माया-मोह से मुक्ति। सांसारिक स्वार्थों से मुक्ति। सुख-दुःख के भाव से मुक्ति।

यही शुद्ध ज्ञान की स्थिति है। इस प्रकार ज्ञान की भी कारक सात्विक श्रद्धा ही है। तभी तो कहा गया है—‘श्रद्धावान् लभते-ज्ञानम्’। जो श्रद्धावान है वही ज्ञान पा सकता है। बिना श्रद्धा के ज्ञान का आडम्बर तो किया जा सकता है, शुद्ध ज्ञान नहीं पाया जा सकता। ज्ञान पाने के लिए श्रद्धावान होना ही पड़ेगा। स्वार्थ यहाँ वर्जित है। कोई भी सांसारिक भाव यहाँ वर्जित है। क्योंकि जहाँ स्वार्थ, सांसारिकता है वहाँ शुद्ध ज्ञान की स्थिति हो ही नहीं सकती। इसका आशय स्पष्ट रूप से यह है कि ज्ञान बुद्धि का विषय नहीं है। विवेक का भी नहीं। विवेक भी अपूर्ण है। पूर्ण है प्रज्ञा और शुद्ध ज्ञान प्रज्ञा का विषय है। प्रज्ञावान वही है जो बुद्धि और हृदय में समन्वय स्थापित कर लेता है। इसी को गीता में ‘स्थिति प्रज्ञ’ कहा गया है। बुद्धि तो स्वतन्त्र रूप से प्रपंच पूर्ण होती है। वह स्वार्थों से आवेष्टित रहती है। वही बुद्धि भावना से संयुक्त होकर प्रज्ञारूप हो जाती है।

यही मानव का सही रूप है। किसी एक पर टिकना अपूर्णता है। बुद्धि और हृदय में समन्वय स्थापित करना ही उसकी पूर्णता है। अकेला हृदय अँधा है क्योंकि वह सुनता तो है और अनुभव भी करता है लेकिन देखता कुछ भी नहीं। संसार में रहते हुये भी, उसका अनुभव करते हुये भी, प्रत्यक्ष नहीं कर पाता। इसीलिये गुण-दोष को परखने में असमर्थ रहता है। इस स्थिति में वह ससार से मुक्त भी नहीं हो सकता। बुद्धि उसे दृष्टि देती है। लेकिन अकेली बुद्धि लँगड़ी है। गति शून्य है। इस जड़ता को दूर करने के लिए आनन्द की आवश्यकता होती है। आनन्द हृदय का विषय है। इसलिये हृदय का योग अत्यन्त आवश्यक है। बुद्धि के साथ हृदय का योग उसे सरसत प्रदान करता है। चेतन कर देता है।

सांख्य-दर्शन के प्रकृति-पुरुष में भी ऐसा समन्वय है। प्रकृति जड़ है। लँगड़ी है गतिशून्य है पुरुष उसमें चेतना जगाता है। गति संवार करता है। लेकिन पुरुष स्वयं अँधा है। संसार रूपी वैतरणी पार करने के लिये दोनों में समन्वय होना आवश्यक है। यही श्रेष्ठ युक्ति है। इसके बिना दोनों असमर्थ हैं।

यही बुद्धि का रचनात्मक रूप है। श्रद्धा भी रचनात्मक होती है शिवं से संयुक्त होकर। यही श्रद्धा जब सामूहिक होती है तो विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त करती है। आइये, हम राममय होकर इसी सामूहिक श्रद्धा में अपनी भागीदारी जोड़ें। उनके लिये श्रद्धावान होकर जो राममय हो गये हैं। सत्य के लिये संघर्ष करते-करते अपने प्राणों की आहुति दे गये हैं। तुलसी ने पूरे जग को 'सीय राम मय' जानकर अपना प्रणाम निवेदित किया था, हम भी राममय हुई उन दिव्यात्माओं को कोटि-कोटि प्रणाम प्रेषित कर रहे हैं। असत् से लड़ने के लिये लामबंद होने की शुरुआत है यह। यही सात्विक दंग है।



## नीराजकों से

जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिये सबसे अधिक महत्व की बात है जिस कार्य में हम सफलता चाहते हैं उसका उद्देश्य होना। बिना उद्देश्य के हमारी मानसिक, बौद्धिक अथवा शारीरिक गतिविधियों को न उपयुक्त दिशा मिल पाती है और न उसमें तीव्रता आ पाती है। जैसे सूर्य की किरणें जब एक बिन्दु पर पड़ती हैं तो वे कड़े से कड़े पदार्थ में छेद बना सकती हैं, उसी प्रकार हमारी मानसिक, बौद्धिक और शारीरिक शक्तियों का उपयोग जब हम उन्हें एक विशेष उद्देश्य पर केन्द्रित करके करते हैं तो हमें सफलता निश्चित रूप से मिलती है। तुमने अपने अध्ययन में देखा होगा कि जब परीक्षा निकट आती है तो तुम अपना सारा समय और अपनी सारी ऊर्जा अपने पाठ्य विषयों को तैयार करने में लगा देते हो और परिणाम होता है कि तुम अभिलषित अङ्कों से परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाते हो। जितने अधिक मनोयोग से तुम अपनी बौद्धिक ऊर्जा को अपने अध्ययन पर केन्द्रित करते हो उतनी मात्रा में तुम्हें सफलता प्राप्त होती है। यही सूत्र जीवन के अन्य क्षेत्रों में सफल होने के लिये भी है। इस प्रकार हम देखते हैं कि उद्देश्य हमें हमारी गतिविधियों को न केवल एक दिशा देता है वरन् उन्हें केन्द्रित कर अधिक सक्षम बनाता है।

जितना ऊँचा हमारा उद्देश्य होगा उतनी ही मूल्यवान् हमारी सफलता समझी जायेगी। अतएव हमारा उद्देश्य ऊँचा एवं उदात्त होना चाहिये। उच्च अथवा उदात्त उद्देश्य से क्या तात्पर्य है? जो काम हम अपने स्वयं के अथवा अपने परिवार के लिये करते हैं वे साधारण कोटि के हैं। वे पाशविक हैं, क्योंकि पशु भी तो ऐसा ही करता है। पशु और मनुष्य में क्या अन्तर है? जहां तक मनुष्य पशुओं के समान अहार, निद्रा भय और सन्तानोत्पत्ति जैसी सहज प्रवृत्तियों से प्रेरित होकर भौतिक सुख प्राप्त करने हेतु कार्य करता है वह भी पशु ही है। वह मनुष्य तभी कहलाता है जब मनन पूर्वक, सदसत् का विचार कर अपने सीमित 'स्व' के ऊपर उठकर वह धर्म का आचरण करता है, क्योंकि मनुष्य 'धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः'। धर्म का अर्थ ही है; परहित, समाजहित, राष्ट्रहित, मानवमात्र का हित, सम्पूर्ण सृष्टि का हित। 'परहित सरिस धर्मं नहि भाई'—गोस्वामी तुलसीदास का कथन है जैसे-जैसे हम अपने संकीर्ण 'स्व' की परिधि को विस्तृत करते हुये सारी सृष्टि के हित की ओर बढ़ते हैं अर्थात् मनुष्यता के शोषण पर अग्रसर होते जाते हैं।

अभी तो तुम्हें यही दृष्टि में रखना है कि तुम अच्छे इंजिनियर, डाक्टर, अधिवक्ता, वैज्ञानिक, प्राध्यापक, व्यवसायी अथवा राजनीतिक बनना चाहते हो तो तुम्हारा उद्देश्य अथवा लक्ष्य केवल अपना अथवा अपने परिवार को सुख-समृद्धि नहीं वरन् अपने समाज एवं राष्ट्र की सुख-समृद्धि तथा गौरव-वृद्धि होना चाहिये।

चन्द्रपाल सिंह

( पूर्व प्राचार्य )

# हमारी अस्मिता

जे० पी० श्रीवास्तव

(आचार्य)

व्यक्ति की अपनी अलग पहिचान बनाने वाला गुण ही अस्मिता है। बिना अस्मिता के व्यक्ति भीड़ की एक इकाई या किसी झुण्ड का एक अंग मात्र है। व्यक्ति की भाँति संस्थाओं और राष्ट्र की अपनी अस्मिता होती है। विद्वान लेखक ने अस्मिता की अनिवार्यता को रेखांकित किया है।

—सम्पादक

इधर अस्मिता शब्द का प्रयोग खूब चला और अभी भी चल रहा है। शब्द चलते-चलते अपने मूल अर्थ से हटते रहते हैं। ठीक भी तो है। क्या हमारी काया एक रूपा रह सकती है ? समय काया में रूपान्तर कर देता है इसी प्रकार प्रयोग शब्दों के अर्थ में नूतनता प्रदान करता रहता है। यों तो अस्मिता का अर्थ है आत्मश्लाघा अथवा अहंकार। उधर इस शब्द का एक अर्थ आत्मा और बुद्धि में अभेद मानना भी है। बस इन्हीं अर्थों की ध्वनि लिए शब्द और उसके अर्थ की अभिन्नता को गोचर कराने वाला यह शब्द एक ओर अहं का भी परिचायक है तो दूसरी ओर अहं का तिरोभाव करके एक व्यापक सत्ता में अपने को विलीन करके अत्यन्त उदात्त अर्थ-भूमिका पर अधिष्ठित होने वाला एक सांस्कृतिक शब्द भी बन जाता है।

शब्द की यह दार्शनिक पृष्ठभूमि प्रस्तुत निबन्ध के विचारों को स्पष्ट करने में सहायक होगी। इसीलिए मैंने इसे प्रस्तुत किया है। वैसे मैं बड़ी विनम्रता से यह निवेदन करना चाहूँगा कि मैं कोई भाषाविज्ञानी नहीं हूँ और न अधिकृत व्याख्याकार। आप कह सकते हैं कि इस आत्म-निवेदन की आवश्यकता ही क्या थी तो मैं यही कहना चाहूँगा कि विनम्रता मेरी अस्मिता है और अपनी इस अस्मिता को मैं परिचय के रूप में प्रस्तुत कर दूँ तो कोई हर्ज नहीं है।

एक बार हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकार स्वर्गीय अमृतलाल नागर जीविका की खोज में बम्बई गये हुये

थे तो उन्होंने अपने एक मित्र को जो लखनऊ में थे, पत्र लिखा था कि मैं क्या करूँ ? मुझसे लिखे बिना रहा नहीं जाता। यही लेखन उनकी अस्मिता थी। पुनः अस्मिता को परिभाषित करना चाहूँ तो यही कहूँगा कि अस्मिता व्यक्ति की अलग पहिचान कराने वाला उसका विशिष्ट गुण है। इस जीवन में ही नहीं, शरीर-यात्रा पूरी हो जाने के बाद भी अपने परवर्ती जीवन में भी यह अस्मिता उसकी विशिष्ट पहिचान बनी रहती है। जिस प्रकार शंकर अपनी दार्शनिकता, मीरा अपनी कृष्णभक्ति, तुलसी अपने आत्म-निवेदन, दयानन्द जी अपने समाजसुधार, श्री गुरु जी अपने हिन्दू-संगठन की पहिचान को बराबर बनाये हुये हैं और भविष्य में भी बनाये रखेंगे उसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति अपनी अस्मिता से ही अपनी असली पहिचान बनाता है। दानशीलता की चर्चा होते ही कर्ण का नाम स्वयमेव हमारे सामने चमक उठता है क्योंकि उसकी अस्मिता का केन्द्र बिन्दु यही दानशीलता है। इसी अस्मिता को विद्वानों ने 'चित्ति' भी कहा है। व्यक्ति के जीवन का वह तेजोमय तत्व जो उसके जीवन को अर्थवत्ता देता है, उसके अस्तित्व का प्रमाण प्रस्तुत करता है उसके व्यक्तित्व के चारों ओर एक गरिमामय महिमा-मण्डल की रचना करता है, उसके भौतिक जीवन को अभौतिक बनाकर उसे देशकाल की सीमाओं का उल्लंघन कर जाने की ऊर्जा प्रदान करता है, उसके जीवन के सर्वोत्तम का पर्याय बन जाता है वस्तुतः वही तो उसकी अस्मिता है। विगत ३० अक्टूबर व २ नवम्बर १९९० को जिन सौभाग्यशाली नवयुवकों ने, जिन बालवृद्धों

ने अपने पार्थिव जीवन को आततायी शासन की गोलियों का शिकार बन जाने दिया उनकी अस्मिता थी 'हम मन्दिर यहीं बनायेंगे।' यही अस्मिता सहस्रों कण्ठों की अभी भी गूँज रही है। यही गूँज आत्मा की अपराजेय वृत्ति और 'नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि' की भावना को प्राणवत्ता और प्रामाणिकता प्रदान करने वाली बलिदानी वीरों की अस्मिता नहीं तो और क्या ? उनकी यह पहिचान अमिट है, इतिहास के पृष्ठ इनकी गौरव गाथाओं से स्वर्णम बनेंगे, कवियों की वाणी से इनकी आत्म-बलिदान-वृत्ति प्रगति होगी और आकाश इसके जयघोषों से गूँजता रहेगा।

व्यक्तियों की भाँति ही संस्थाओं और राष्ट्रों की भी अस्मिता होती है। पं० दीन दयाल विद्यालय अपने स्थापना काल से ही अनेक दीन दयाल पंदा करने की छटपटाहट संजोये हैं, तन, मन और आत्मा से तेजोमय बने हुये भावी नागरिकों के दृश्य विद्यालय की दृष्टि में भविष्यत् के महासागर में सफलता के साथ तैरते हुये गोचर हो रहे हैं, देशभक्ति, राष्ट्रसेवा और उदान्त मानवता के कुछ नूतन मानदण्ड स्थापित करने के स्वप्न इसकी आँखों में पल रहे हैं। इन सब और अन्य अनेक अब्यक्त आदर्शों को देखमुन और कल्पना करके कहना पड़ता है कि दीन दयाल विद्यालय की अस्मिता राष्ट्र देवता की सजीव आराधना में निहित है। जो छात्र, जो आचार्य इस आराधना के प्राणवान कर्ता और वाहक बनेंगे वे विद्यालय की अस्मिता के सच्चे कर्णधार कहलाते का गौरव अर्जित करेंगे।

अब अपने राष्ट्र की अस्मिता की भी कुछ चर्चा की जाय। यदि एक शब्द में भारत की अस्मिता को अभिव्यंजित करना हो तो आध्यात्मिकता को ही भारत की अस्मिता कहना सही और सार्थक होगा। परन्तु अकेला एक शब्द सबको न तो सन्तुष्ट कर सकेगा और न वह अर्थ भाषित करा सकेगा जो भारत की अस्मिता में निहित है। सार संक्षेप की भाषा में बात कर तो एक सद्विप्राः बहुधा वदन्ति' सत्य अथवा ईश्वर एक है

परन्तु विद्वान लोग उसे भिन्न-भिन्न प्रकार से परिभाषित करते हैं—से बात प्रारम्भ करनी होगी। यह भारत की आत्मा का स्वर है जो सेवा और त्याग इन दो सद्गुणों से शरीर की सार्थकता का स्वर बनता है। यहाँ व्यक्ति के केन्द्र से चलकर अखण्ड मण्डलाकार तक आत्मा का विस्तार होता है और इसीलिए वसुधैव कुटुम्बकम् का सिद्धान्त आचरण में ढलता है। यहाँ के राजा संन्यासी बनकर त्याग को ही भोग का पर्याय बनाते हुए आध्यात्मिक जीवन के वास्तविक स्वरूप से संसार को परचित कराते हैं और त्याग को भी त्याग दो की भावना को शिरोधार्य करते हुए अपने त्याग के लिए प्रशस्त के दो शब्द भी सुनना पसन्द नहीं करते, क्योंकि उनके लेखे तो कर्ता सर्वशक्तिमान प्रभु ही हैं वे अथवा हम तो केवल निमित्त मात्र हैं भारत की अस्मिता बहुत ऊँची है, इसके आदर्श गंगाजल जैसे पावन है, इसका लक्ष्य हिमालय की हिमश्वेत चोटियों जैसा ऊँचा है जहाँ मनुष्य दिव्यारोहण करता है, नर से नारायण बनता है, अपने चेतन अमल और सहज सुखराशि होने का प्रमाण देता है।

पर आज हम अपने लक्ष्य को विस्मृत सा कर रहे हैं। भौतिक सुविधाओं के भोग में हम अपने असली स्वरूप को पहिचानने के प्रयास से ही विरत हो रहे हैं। कारण एक ही है कि हमें अपनी अस्मिता की पहिचान नहीं है और है भी तो हम जानकर अनजान जँसा आचरण प्रस्तुत करते हुए अपने बौने पन का परिचय दे रहे हैं। हम अपनी राष्ट्रीय आस्मिता से विपरीत दिशा की ओर दौड़ रहे हैं। शताब्दियों नहीं सहस्राब्दियों से दिव्य परम्परा क रूप में चली आने वाली आध्यात्मिक सूर्य की दैवी किरणों से मण्डित हमारी अस्मिता अपनी सुरक्षा के लिए हमें पुकार-पुकार कर सावधान कर रही है। पर हम हैं कि पुनः पुनः भटक जाते हैं। हमें जीना सीखना है अपनी अस्मिता के प्रभावी रक्षकों और समर्थ वाहकों के रूप में। आज का सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न शायद यही है कि क्या हम जैसे जीना चाहिए वैसे जी सकेंगे ?

## सहज साधना और कबीर

—शशिभाल सिंह सेंगर  
(आचार्य)

कबीर का सब कुछ सहज था। भक्ति, साधना और पूरा जीवन ही सहज था। लेखक ने इसी बात को बड़े सहज ढंग से अभिव्यक्त किया है।

—सम्पादक

कबीर एक अनूठा व्यक्तित्व है। प्रत्येक के लिए उनके द्वारा आशा का द्वार खुलता है। कबीर से अधिक साधारण आदमी कठिन है। अतः जहाँ तक कबीर पहुँचे वहाँ तक सामान्य व्यक्ति भी पहुँच सकता है। कबीर निपट गँवार थे, अतः गँवार के लिए भी आशा है। वे अनपढ़ थे, इसीलिए पढ़े-लिखे होने से सत्य का कोई सम्बन्ध नहीं है। जाति-पाँति का कूठ ठिकाना नहीं था; शायद मुसलमान के घर पैदा हुए थे, हिन्दू के घर बड़े हुये, इसलिए परतत्व की प्राप्ति के लिए जाति-पाँति और धर्म या सम्प्रदाय का कोई महत्व नहीं।

कबीर जीवन भर गृहस्थ रहे। कपड़े बुनते और बेचते रहे, घर छोड़कर हिमालय नहीं गये। इसलिए कि, घर पर भी परमात्मा प्राप्त हो सकता है। हिमालय जाना आवश्यक नहीं है। कबीर ने कुछ भी नहीं खोया और सब कुछ पा लिया। इस प्रकार कबीर ने प्रमागित किया कि खोना, प्राप्त करने की शर्त नहीं हो सकती। कबीर के वाह्य जीवन में कोई विशिष्टता नहीं थी विशिष्टता तो अहंकार का आभूषण है, इसे आत्मा का सौन्दर्य नहीं माना जा सकता। इसीलिए विशिष्टता से कबीर दूर ही रहे।

कबीर न तो धनी थे, न ज्ञानी और न ही शिक्षित थे। यदि कबीर जैसा व्यक्ति परम ज्ञान प्राप्त कर सकता है तो किसी को भी निराश नहीं होना चाहिए। इस लिये कबीर से बड़ी आशा है।

बुद्ध अगर पाते हैं तो आवश्यक नहीं कि तुम भी पा सकोगे। यदि बुद्ध को ठीक से समझा जाये तो निराशा जकड़ेगी, क्योंकि बुद्ध को बड़ी उपलब्धियाँ थीं। पाने के पहले बुद्ध एक सम्राट थे। अतः सम्राट यदि धन से विमुख हो जाये तो आश्चर्य नहीं, क्योंकि जिसके पास सब कुछ है, उसे उस सब की व्यर्थता का बोध हो जाता है। परन्तु गरीब के लिए बड़ा कठिन है—धन से या संसार से विमुख हो पाना। क्योंकि जिसके पास है ही नहीं, उसे व्यर्थता का पता कैसे चलेगा कोई चीज व्यर्थ है, इसे जानने के पहले, कम से कम उसका अनुभव तो होना चाहिए। तुम कैसे कह सकते हो कि धन व्यर्थ है? धन है कहाँ? तुम हमेशा अभाव में जिये हो। तुम सदा झोपड़े में रहे हो तो कैसे कह सकोगे कि महलों में आनन्द नहीं है और यदि कही भी तो यह तुम्हारे अनुभवों का निचोड़ नहीं होगा, सत्य नहीं होगा। बल्कि पड़ा हुआ या दूसरों से सुना हुआ होगा।

बुद्ध कहते हैं कि स्त्रियों में सिवाय हड्डी, मांस-मज्जा के और कुछ भी नहीं है। क्योंकि बुद्ध को सुन्दरतम स्त्रियाँ उपलब्ध थीं। तुमने उनको केवल दूर से देखा है। तुम्हारे और उन स्त्रियों के बीच बड़ा फासला है। वे तुम्हारे लिए अतिमनमोहक हैं। तुम सब कुछ खोकर भी उसे पाना चाहोगे। क्योंकि जिसे पाया नहीं है, वह व्यर्थ है, इसे जानने के लिए बड़ी चेतना चाहिए। बड़ी समझ चाहिए।

कबीर गरीब थे और यह सत्य जान गये कि धन व्यर्थ है। कबीर के पास एक साधारण-सी पत्नी थी और जान गये कि सब राग रंग, वैभव-विलास, सब सौन्दर्य मन की कल्पना है। इसका मतलब है कि कबीर के पास गहरी समझ थी। बुद्ध के पास तो यह बात अनुभव से आ जाती है, कबीर को तो समझ से ही लानी पड़ेगी।

बुद्ध बड़े प्रतिभाशाली और वैभवशाली थे। श्रेष्ठ-तम ज्ञान से दीक्षित किये गये थे। शास्त्रों के ज्ञाता थे।

लेकिन कबीर; कबीर तो सड़क पर बड़े हुये। माता पिता का पता नहीं। भिखारी होना तो पहले दिन से भाग्य में लिखा था। तो जब यह भिखारी जान गया कि धन व्यर्थ है तो हर साधारण से साधारण व्यक्ति भी जान सकता है।

इसीलिये कबीर से आशा बँधती है जबकि बुद्ध से आशा नहीं बँधती। बुद्ध की पूजा की जा सकती है लेकिन उनके जैसा होना कठिन है। कबीर के जैसा होना सहज है। बुद्ध के और तुम्हारे बीच फासला बड़ा है। लेकिन कबीर और तुममें कोई फासला नहीं। कबीर इस संसार में शायद तुमसे भी पीछे खड़े हों। तो जब कबीर पीछे होकर भी पहुँच गये तो तुम भी पहुँच सकते हो।

महावीर सम्राट के बेटे हैं; राम भी कृष्ण भी और बुद्ध भी, वे सब महलों से आये हैं। लेकिन कबीर ने तो यहाँ तक कह दिया कि—'मसि कागज छुयों नहीं।' वे सड़क से आये, उनका महलों से कोई नाता नहीं। ऐसा

अनपढ़ आदमी जिसे दस्तखत तक करने नहीं आते और परमात्मा के परम ज्ञान को पा लिया, परिस्थितियों को दोष न देना।

जब भी परिस्थितियों को दोष देने का भाव मन में उठे, कबीर का ध्यान करना चाहिए। कम से कम हमें माता-पिता का पता तो है, सड़क पर तो पैदा नहीं हुये दस्तखत तो कर ही लेते हैं न। थोड़ा बहुत वेद, गीता, कुरान, रामायण आदि पढ़े ही हैं।

जब भी मन में यह भाव उठे कि पहुँच गये होंगे बुद्ध, सारी सुविधा थी उन्हें, मैं कैसे पहुँचूँ। तो कबीर का ध्यान करना। बुद्ध के कारण जो असुन्तलन और निराशा मन में उपजती है वह कबीर के ध्यान से सन्तुलित हो जाती है।

कबीर की भाषा सबकी भाषा है। यदि तुम कबीर को नहीं समझ पाये, तो कुछ भी नहीं समझ पाओगे। और यदि कबीर को समझ लिया तो कुछ भी समझने को बचता नहीं। कबीर को जितना समझोगे उतना ही पाओगे कि बुद्धत्व का कोई सम्बन्ध परिस्थितियों से नहीं है। वह भीतर की अभीप्सा है, जो कहीं भी प्रकट हो सकती है—झोपड़े में, महल में, बुद्धिमान में, अनपढ़ में, गरीब में, अमीर में, अछूत में, हिमालय पर, घर पर—कहीं भी। सारतः यह बात स्पष्ट है कि मनुष्य अपनी सहज गति और मौलिक प्रतिभा का यदि उपयोग करने में सतत लीन रहे तो वह परिस्थितियों से अभिभूत नहीं हो सकता।



# जीवन

संकलन-निशांत प्रताप सिंह

षष्ठ-ख

[जीवन के प्रति मनुष्य के मन की जिज्ञासा आदि काल से ही रही है और आदि काल से ही जीवन की विविध ढंगों से परिभाषित किया गया है। इस रचना में भी जीवन को परिभाषित करने का प्रयास है।] -सम्पादक

जीवन क्या है ?

एक पवित्र यज्ञ। लेकिन उन्हीं के लिए

जो सत्य के लिए स्वयं की आहुति देने को तैयार होते हैं।

जीवन क्या है ?

एक अमूल्य अवसर। लेकिन उन्हीं के लिए

जो साहस और श्रम करते हैं।

जीवन क्या है ?

एक वरदान देती चुनौती। लेकिन उन्हीं के लिए

जो स्वयं की शक्ति इकट्ठा कर विजय के लिए जूझते हैं।

जीवन क्या है ?

एक भव्य जागरण। लेकिन उन्हीं के लिए

जो स्वयं की निद्रा व मूर्छा से लड़ते हैं।

जीवन क्या है ?

एक दिव्य गीत। लेकिन उन्हीं के लिए

जिन्होंने स्वयं को परमात्मा का वाद्य बना लिया हो।

अन्यथा जीवन एक लम्बी और धीमी मृत्यु के अतिरिक्त कुछ नहीं।

जीवन मिलता नहीं, जीता जाता है।

जीवन स्वयं के द्वारा स्वयं का सतत् सृजन है।

जीवन नियति नहीं, निर्माण है।

जीवन हमारी ही प्रतिध्वनि है हमारा ही प्रतिफलन है।

# ऐतिहासिक पुनरावलोकन - [सांस्कृतिक हत्या पर विशेष]

दिनेश सिंह भदौरिया  
(आचार्य)

कौन सी ऐसी शक्ति निहित है अयोध्यास्थित विवादास्पद ढाँचे के पीछे, जिसने ३० अक्टूबर १९९० को विवश कर दिया, प्रत्येक सहृदय भारतवासी को आत्मोत्सर्ग हेतु, जिस शक्ति की प्रलयकारी करवट की कल्पना हमारे क्रूरशासकों को भी न थी। प्रस्तुत है भारतीय संस्कृति के केन्द्र बिन्दु "रामजन्मभूमि" का वास्तविक इतिहास जिसे तोड़-मरोड़ कर सत्तालोलुपों ने हमारे सामने रखकर नयी पीढ़ी को दिग्भ्रमित करने का धिनौना कृत्य किया है।

दो हजार से भी अधिक वर्षों का यह एक सुदीर्घ इतिहास है जो बृहद् हिन्दू समाज में उसकी अस्मिता की आँच को कभी बुझने नहीं देता। इन दो हजार वर्षों में ७९ बार राम जन्म भूमि पर आक्रमण हुये और हर बार राम भक्तों ने मुकाबला किया। इस लम्बे संघर्ष में अनेक बलिदानों ने इस मुद्दे को हिन्दू समाज के अस्तित्व गौरव व जातीय अस्मिता से और प्रगाढ़ रूप से जोड़ा।

राम जन्म भूमि पर सबसे पहली कुदृष्टि ईसा से १५० वर्ष पूर्व एक यवनराजा की पड़ी। यह राजा था मिनेन्डर जो इतिहास में मिहिर गुप्त के नाम से जाना जाता है। उसने एक विशाल सेना लेकर जन्मभूमि पर धावा बोल दिया और उसे ध्वस्त कर दिया। इस घटना ने हिन्दू स्वाभिमान को चोट पहुँचाई जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल तीन माह बाद ही शुंग वंशीय राजा द्युमत्सेन ने मिहिरगुप्त पर हमला बोल दिया और उसकी राजधानी कौशाम्बी पर अधिकार कर जन्मभूमि के अपमान का प्रतिशोध ले लिया।

इसके बाद लगभग १०० वर्षों तक राम जन्मभूमि क्षत-विक्षत अवस्था में पड़ी रही, क्योंकि इस काल में कुषाण, शक आदि विदेशी शक्तियों के आक्रमण होते रहे। एक दिन उज्जैन के राजा विक्रमादित्य का ध्यान राम जन्मभूमि के खड्डहरों की ओर गया। उन्होंने मंदिर का पुनर्निर्माण कराया। एक बार फिर राम जन्मभूमि व अयोध्या का वैभव लौट आया। सैकड़ों वर्षों तक मंदिर में पूजा अर्चना चलती रही। यह सिलसिला ग्यारहवीं शताब्दी तक चलता रहा। लेकिन सन १०३३ में महमूद गजनवी के भांजे सालार मसूद ने फिर विघ्न डालने की कोशिश की परन्तु वह कामयाब न हो सका। साकेत फतेह करने के बाद सालार मसूद ने मलिकफिरोज की सेना के साथ अयोध्या की तरफ कूँच किया। पहले युद्ध में उसने कुबेरटीला स्थित कुबेरनाथ के मन्दिर को तोड़ा जहाँ बाद में उसकी आज्ञा से मस्जिद बनाई गई। उसका दूसरा आक्रमण अयोध्या के प्राचीन कनक भवन पर था। सालार मसूद अपने लक्ष्य की तरफ बढ़ रहा था कि राजा सुहेलदेव ने उसे कड़ी टक्कर दी। सुहेलदेव ने उसकी सेना को सीतापुर जिले तक जा खदेड़ा। इस युद्ध में दिगम्बर अखाड़ा के साधुओं ने भी हिस्सा लिया। १४ जून १०३३ को बहराइच से सात कोस दूर प्रयागपुर के पास घाघरा तटपर सुहेलदेव, रायहरदेव, त्रिलोक चन्द आदि राजाओं की सेना ने उसे घेर लिया और सेना सहित उसका सर्वनाश कर दिया। इसके बाद पाँच सौ वर्षों तक किसी भी आक्रन्ता को राम जन्मभूमि पर आक्रमण करने का साहस नहीं हुआ।

पाँच सौ वर्षों बाद २३ मार्च १५२८ का दिन जन्मभूमि के लिए फिर कहर लेकर आया। तुर्की आक्रमण-

कारी बाबर महाराजा साँगा से प्रथम युद्ध हारकर पुनः खानवा के युद्ध में राणासाँगा को पराजित कर १५२७ में अयोध्या के निकट पड़ाव डाला। इसी दौरान कुछ धर्मान्ध मुस्लाओं ने बाबर को जन्मस्थान मन्दिर तोड़ने हेतु प्रेरित किया। यह कार्य अपने मन्त्री मीरबांकी पर छोड़कर बाबर वापस लौट गया। मीरबांकी जब अपनी सेना के साथ जन्मभूमि पर आक्रमण करने आया तो उसे हजारों हिन्दुओं, रामभक्तों, पुजारियों व साधुओं के प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। इतिहास लेखक कनिंघम ने लिखा है—“जन्मभूमि के मन्दिर को गिराये जाने के समय हिन्दुओं ने अपनी जान की बाजी लगा दी थी और एक लाख तिहत्तर हजार हिन्दुओं की लाशें गिर जाने के पश्चात् ही मीरबांकी मन्दिर को तोप से गिराने में सफल हो सका था।” बाबर के हिन्दुस्तान में पाँच वर्षों के शासन में रामजन्म भूमि के मुद्दे को लेकर हिन्दुओं की तरफ से अनेक छोटे-बड़े आक्रमण हुए थे लेकिन बाबर की विशाल सैन्यशक्ति उनके प्रतिरोध को कुचलती रही। संघर्ष करने वालों में महाराज सिंह, पं० देवीदीन पाँडे, हसवर नरेश रणविजयसिंह रानी जयराम कुमारी स्वामी महेश्वानन्द आदि के नाम प्रमुख रूप से गिनाये जा सकते हैं।

बाबर के बाद उसका पुत्र हुमायुँ गद्दी पर बैठा। लेकिन राम जन्मभूमि मुक्त कराने के लिए हिन्दू समाज फिर शांत नहीं बैठा। हुमायुँ के शासन काल में अयोध्या से लगभग १० मील के क्षेत्र में स्थित ग्राम सराय, सर-सिडा व राजेपुर की जनता ने एकत्रित होकर जन्मभूमि को मुक्त कराने के लिए हमला बोल दिया। मुगलों की शाही छावनियाँ काट डाली गईं। चार-पाँच दिन के इस युद्ध में अनेक लोग मारे गये। सामान्यजन का संभवतः यह पहला प्रहार था जो बिना किसी राजा के नेतृत्व में किया गया। महेश्वानन्द और रानी जयराम कुमारी हुमायुँ की सेना से युद्ध करते हुए अन्ततः धीरगति को प्राप्त हुए। लेकिन उनकी संघर्ष गाथा को आगे बढ़ाने का बीड़ा स्वामी बलरामाचार्य ने उठाया जो दक्षिण भारत के कोयम्बटूर के रहने वाले थे। फ़ैजाबाद जिले के गाँव-गाँव में घूम कर उन्होंने हिन्दुओं को संगठित किया और

अकबर के समय में उन्होंने जन्मभूमि के लिए २० बार आक्रमण किये। इस दौरान हिन्दुओं ने कथित बाबरी मस्जिद में एक चबूतरा बना लिया। अकबर ने बीरबल व टोडरमल को मध्यस्थ बनाकर यह व्यवस्था कर दी कि चबूतरे पर छोटा सा राम मन्दिर बनाकर हिन्दुओं को पूजा पाठ करने के लिए रोकना न जाय। यह समझौता जहाँगीर व शाहजहाँ के काल तक चलता रहा।

कोई सौ साल तक यह सिलसिला चला होगा कि फिर राम मन्दिर पर मुगलों की कुदृष्टि के काले बादल मड़राने लगे। धर्मान्ध शासक औरंगजेब ने तख्त पर बैठते ही राम मंदिर गिराने का निर्णय लिया। उसने जाँबाज खाँ को जन्मभूमि पर आक्रमण करने हेतु अयोध्या भेजा। लेकिन वह साधू-सन्यासियों और अयोध्या की संगठित सेना से मुँह की खाकर खाली हाथ लौट आया। यह संघाटन परशुराम मठ के बाबा वैष्णवदास के नेतृत्व में तैयार किया गया था। औरंगजेब ने अपनी पराजय सुन कर जाँबाजखाँ को पदच्युत कर दिया तथा सरदार सैयद हसन अली को ५० हजार सैनिकों के साथ राम चबूतरे और मन्दिर को ध्वस्त करने भेजा।

इस वार बाबा वैष्णवदास का साथ दिया गुरुगोविन्द सिंह ने। गुरु गोविन्द सिंह पंजाब में मुगलों से संघर्ष कर रहे थे और औरंगजेब को कई बार अपने पराक्रम का स्वाद चखा चुके थे। उस समय वे आगरा में मुगलों से युद्ध कर रहे थे। राम मन्दिर पर आक्रमण का समाचार पाकर वे अपनी सेना लेकर अयोध्या के पास आ पहुँचे। रुदौली कस्बे में बाबा वैष्णवदास तथा गुरु गोविन्द सिंह की संयुक्त सेना ने हसन अली को कड़ी टक्कर दी। इसके बाद अयोध्या के पास सआदतगंज में इस संयुक्त सेना ने हसन अली की फौज पर हमला किया। इस हमले में हसन अली समेत शाही फौज के अनेक सैनिक मारे गये। आलमगीरनामा में स्वयं औरंगजेब लिखता है “गुरु गोविन्द सिंह के साथ बाबा वैष्णवदास का जो हमला हुआ उसमें शाही फौज का सबसे बड़ा नुकसान हुआ।” राम जन्मभूमि इसका लिए मानो जीवन-मरण का प्रश्न बन गई। लिहाजा अपना पूरा जोर लगाकर

औरंगजेब ने सन् १६६४ में फिर आक्रमण किया। इस बार वह कामयाब हो गया, राम चबूतरा और मन्दिर पुनः तोड़ दिया गया। इस युद्ध में दस हजार हिन्दू बलिदान हो गये।

इसके बाद आया अवध नवाबी का काल। इस काल में हिन्दुओं का संघर्ष चलता रहा और अन्ततः उन्होंने चबूतरा और मन्दिर बनवा कर ही दम लिया। अवध की सत्ता नवाब सआदत अली के हाथ में आ चुकी थी। हिन्दुओं के मन में जन्मभूमि मुक्ति की आग बंद नहीं हुयी थी। अमेठी के राजा गुरुदत्त सिंह तथा पिपरा के राजकुमार सिंह ने राम मंदिर पर अधिकार करने के लिए नवाबी सेना पर पाँच आक्रमण किया। आखिरकार सआदत अली ने अकबर के समान हिन्दुओं को जन्मभूमि में पूजा-पाठ की अनुमति दे दी। फिर नसीरुद्दीन हैदर का समय आया इस दौरान मरकही के राजा के नेतृत्व में तीन आक्रमण किए गये। जन्मभूमि को प्राचीन मंदिर का स्वरूप दिया जाये, इस हेतु संघर्ष चलता रहा। सन् १८५७ में गोंडा के नरेश देबीबख्श सिंह के नेतृत्व में अवध के राजाओं ने सामूहिक रूप से जन्मभूमि की मुक्ति के लिए संघर्ष किया। इस दौरान औरंगजेब द्वारा विध्वंस किया गया चबूतरा और उस पर छोटा सा मंदिर फिर बनवा दिया गया। नवाब बाजिद अलीशाह भी अकबर की तरह धर्मान्ध नहीं था। इसलिए उसने योद्ध्या के राजामानसिंह और टिकैत राय के प्रयासों से चबूतरा और मंदिर बनाने की स्वीकृति दे दी। चबूतरा पर तीन फुट ऊँचा एक छोटा सा मंदिर बना जिसमें भगवान राम की स्थापना की गई। अब तक अंग्रेजी राज की पुख्ता हुई नींव की जड़ें हिलने लगी थीं। सन् १८५७ का गदर भले ही विफल रहा लेकिन उससे अंग्रेजी सत्ता को हिला दिया था। ऐसे में उसका 'फूट डालो और राज करो' की नीति फिर कुटिल तेवर दिखलाने लगी थी। अयोध्या के अमीर अली और बाबा रामचरण दास ने इस दिशा में संयुक्त प्रयास किये कुछ उदारपंथी मुस्लिमों ने जन्मभूमि विवाद के निपटारे का फैसला किया। इनमें अमीर अली और फ़ैजाबाद के मुसलमानों ने मिलकर फैसला किया कि हम सभी मुसलमान विदे-

शियों के वंशज नहीं, भारतीय हैं। हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई हैं। मजहब अलग-अलग होने से क्या होता है। राम जन्मभूमि हिन्दुओं का श्रद्धास्थान है। हम सब स्वेच्छा से उसे हिन्दुओं को वापस कर ३२९ वर्ष पहले की भूल को दुरुस्त करें। लेकिन अमीर अली के नेतृत्व में इस गम्भीर समस्या का निपटारा होने की जो उदार प्रक्रिया आरम्भ हुई थी वह अंग्रेजों के षडयंत्र से विफल हो गयी।

अमीर अली के प्रस्ताव पर अंग्रेज घबरा गये। वे नहीं चाहते थे कि इस विवाद का निपटारा हो जाए और हिन्दू-मुस्लिम सौहार्द मजबूत हो जाए। लिहाजा १८ मार्च १९५८ को कुवेर टीला स्थित एक इमली के पेड़ पर अमीर अली और बाबा राम चरण दास को अंग्रेज छावनी उड़ाने के प्रयास में फाँसी पर लटका दिया गया। इस तरह दो सम्प्रदायों में आपसी समझ के आधार पर जन्मभूमि का विवाद सुलझाने की जो सम्भावना अमीर अली और बाबा रामचरण दास ने जगाई थी उसे अंग्रेजी हुकूमत ने तोड़ दिया।

इस घटना के बाद भी जन्मभूमि मुक्ति के प्रयास खत्म नहीं हुए। सन् १९१२ से १९३४ के बीच आक्रमण-प्रत्याक्रमण का सिलसिला चलता रहा। अन्ततः सन् १९३४ में एक दंगे के बाद बाबरी मस्जिद नामक जन्मभूमि के स्थल पर नमाज पढ़नी बंद कर दी गयी। जो अब तक बन्द पड़ी है।

१९५० से १९६१ तक कई तरह के वादों और प्रति-वादों के बीच लटक जाने के बाद पहली बार रामजन्मभूमि का उल्लेख २२ नवम्बर सन् १९८२ को काशीपुर में हिन्दू जागरण मंच के विशाल हिन्दू सम्मेलन में आया, १६ मई १९८३ को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सर संघ चालक श्री बाला साहब देवरस "भारत माता मन्दिर" के उद्घाटन के अवसर पर हरिद्वार आये। सायकाल भोजन के समय विश्व हिन्दू परिषद के उत्तर प्रदेश के प्रमुख कार्यकर्ताओं से उन्होंने कहा "तुम्हारे प्राण प्रिय श्रीराम ताले में बन्द पड़े हैं, इन्हें मुक्त कराने का अभियान चलाओ। आज हिन्दू कुछ करने के लिये बेचैन है, उसे

दिशा दो, संगठित करो और आन्दोलन चलाओ ।”

वहाँ मौजूद हिन्दू जागरण मंच के संयोजक श्री दिनेश चन्द्र त्यागी तुरन्त अशोक सिंघल से मिले और फिर दाऊ दयाल खन्ना से बातचीत कर दिल्ली में इस सम्बन्ध में एक प्रेस कांफ्रेंस रखने का निर्णय हुआ । ६ अगस्त १९८३ को प्रेस क्लब आफ इण्डिया, दिल्ली में श्री खन्ना ने यह प्रेस कांफ्रेंस आयोजित की । इस विषय पर यह पहला पत्रकार मुक्ति का प्रस्ताव पारित हुआ ।

नवम्बर १९८३ में विश्व हिन्दू परिषद का एकात्मता यज्ञ प्रारम्भ हुआ । १५ नवम्बर १९८३ को हरिद्वार की प्रथम जनसभा में परिषद के मंच से श्री खन्ना ने धर्म स्थानों की मुक्ति का विचार रखा । इसके बाद तो सभी सभाओं में यह प्रस्ताव रखा गया और इसको अपूर्व जन-समर्थन मिला ।

सात-आठ अप्रैल १९८४ को दिल्ली में “धर्म संसद” का पहला अधिवेशन हुआ । देश के सभी मत, पन्थ एवं सम्प्रदायों के ५२८ प्रमुख धर्माचार्य एवं सन्त एकत्र हुआ । धर्म संसद ने सर्वसम्मति से इस अधियान को आशीर्वाद देकर इससे सम्बन्धित प्रस्ताव पारित कर दिया ।

धर्माचार्यों एवं परिषद के कार्यकर्ताओं की बैठक बुलाई । इसमें “श्रीराम मुक्ति यज्ञ समिति” के गठन के लिए दाऊ दयाल खन्ना को ही संयोजक बनाया गया ।

एक महीने के बाद अयोध्या में समिति का औपचारिक गठन हुआ । जिसके सर्वसम्मति से महंत अवैद्य नाथ अध्यक्ष बनाये गये तथा दाऊ दयाल खन्ना महामंत्री बनाये गये । बाद में इस समिति की गतिविधियों को ठीक दिशा देने के लिए अयोध्या के सन्तों का एक ‘मार्गदर्शक मंडल’ तथा युवकों को इस अभियान से जोड़ने के लिए ‘बजरंग दल’ का भी गठन किया गया । आन्दोलन के प्रथम चरण के रूप में समिति ने ७ अक्टूबर को संकल्प दिवस तथा १४ अक्टूबर को लखनऊ में विराट हिन्दू सम्मेलन का आह्वान दिवस मनाने तथा श्रीराम जानकी रथयात्रा निकालना तय किया । राम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति ने इस बीच और एक काम किया । कुछ प्रमुख न्यायविदों का एक अध्ययन दल बनाया गया जिसमें परिषद के वर्तमान अध्यक्ष न्यायमूर्ति शिवनाथ कारज, देवकी नन्दन अग्रवाल, पूर्व पुलिस महा निर्देशक श्रीश चन्द्र दीक्षित आदि थे । इस अध्ययन दल को एक विचित्र बात पता लगी कि जन्मभूमि पर ताला लगाने का कोई आदेश ही नहीं है । तब फौजाबाद के वकील उमेश चन्द्र पाण्डेय ने न्यायमूर्ति के ० एन० पाण्डेय की अदालत में वह ऐतिहासिक मुकदमा दायर किया जिसके निर्णय के कारण १ फरवरी १९८६ को जन्मभूमि पर ३५ वर्षों से लगा ताला खोला गया और जिस फैसले के कारण श्री पाण्डेय उच्च न्यायालय के जज नहीं बन सके ।

इसके बाद की घटनायें ज्यादा पुरानी नहीं हैं । उसके बाद शिलापूजन कार्यक्रम तथा शिलान्यास इतिहास की घटनायें हैं । ३० अक्टूबर और २ नवम्बर भी इतिहास के पन्नों में सुर्ख हफों में लिख दिए गए हैं ।



# राम जन्मभूमि—कितना सच कितना झूठ

अमित गुप्त

एकादश क

बाबर एक आक्रमणकारी और आततायी था। उसने अयोध्या के राम-मंदिर को गिराकर मस्जिद बनवाई थी। उसका मन्तव्य इबादत करने के लिए मस्जिद बनाने का नहीं, अपितु हिन्दुओं के मनोबल को गिराने का था। दुर्भाग्य से आज उसके बाद का हर शासक इसी मनोवृत्ति को अपनाये जा रहा और आजादी के बाद हमारे देशी शासक और नेता भी इसी मनोवृत्ति के शिकार रहे और एक आततायी के स्मृति-चिन्ह को बनाये रखने में गर्व महसूस करते रहे।

—सम्पादक

भारतीय संस्कृति में आर्य धर्म परम्परा के अन्तर्गत जब तक राम आराध्य देव के रूप में पूजे जायेंगे, तब तक जन साधारण की दृष्टि अयोध्या (श्रीराम जन्मभूमि) की ओर सतृष्णाभाव से लगी रहेगी। सूर्यवंशी राजाओं की ६० वीं पीढ़ी के पश्चात् मर्यादा पुरुषोत्तम राम की जन्मभूमि (अयोध्या) होने का गौरव इसी भूमि (अयोध्या) को प्राप्त हुआ।

राजकीय डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (Vol A to G १८७७) में श्रीयुत पी० कारनेगी ने अयोध्या के विषय में लिखा है— 'यह विधाता की रची हुई अजेय नगरी है। हिन्दुओं के लिए अयोध्या वैसी ही पूज्य है जिस प्रकार मुसलमानों को मक्का और यहूदियों को जेरूसलम। अयोध्या अविनाश्वर पुरी है और विधाता के रथ चक्र पर बसी है।' इसी प्रकार ह्वैनसांग ने अपनी भारत यात्रा में अयोध्या और मणि पर्वत का विस्तृत वर्णन किया है।

दरबारे अकबरी, तारीखे अवध, गुमस्ते हालात अयोध्या, दरबहिस्त तथा सी० वी० वैद्य के इतिहास और तारीख सैयद सालार मसऊह गाज़ी आदि ग्रंथों में तथा अन्य मुसलमानों के लेखों में भी अयोध्या का वर्णन

मिलता है। अंग्रेजी में श्रीयुत कनिंघम, बेवर, कार्नेगी इलियत, विलसन, लीडेश, लेथब्रिज आदि महानुभावों ने अयोध्या के इतिहास पर पर्याप्त महत्वपूर्ण प्रकाश डाला है। प्रायः सभी ने जन्मभूमि की चर्चा की है और सबने मुक्त कंठ से स्वीकार किया है कि इस स्थान (अयोध्या) पर राम मंदिर के रूप एक गगन स्पर्शी भवन दिव्य रूप में वर्तमान था।

वैदिक एवं पौराणिक काल से लेकर राजपूत राजाओं के शासन काल तक श्रीराम जन्मभूमि का उक्त दिव्य भवन अपने स्वरूप में वर्तमान रहा। जन्मभूमि की महिमा आर्य जाति की संस्कृति का महत्वपूर्ण अध्याय है। मुसलमान सिद्धों ने भी इसी नगरी (अयोध्या) को मदीनतुल औलिया की धारणा से खर्द मक्का तथा सिद्धों की सराय आदि नामों से सम्मानित किया है।

श्रीराम जन्मभूमि के प्रमाणिक शोध के उपरान्त यह ज्ञात हुआ कि इस स्थान पर स्वर्ग स्पर्शी एक दिव्य प्रासाद निर्मित हुआ। उसमें नीलिमणि के अगणित (कुछ प्रमाणों से ४८ स्तम्भों का वर्णन मिलता है।) स्तम्भ इस योजना में लग ये गये थे कि दूर से देखने पर सम्पूर्ण भवन एक स्कन्धावर सा प्रतीत होता था। श्रीराम जन्म

भूमि के गर्भ प्रासाद की रक्षा हेतु त्रेताकालीन अयोध्या के राजभवन की कल्पना की गई और प्राप्त पौराणिक आधार पर रामचन्द्र के समय का रामकोट निर्मित कराया गया जिससे आठ सिंघद्वार भी रचे गये। अलग-अलग दिशाओं हनुमान, सुग्रीव, नल-नील, जाम्बवान् आदि सेनपतियों के दुर्ग इस प्रकार बने थे कि रामकोट की सुरक्षा बहुत कड़ी थी। इस प्रकार के दुर्ग की पुष्टि अंग्रेज भी करते हैं। (पी० कारनेनी का अयोध्या संबंधी लेख तथा इलियट का लेख Vol X Part II १८६९)

**इस्लाम की लहर:—** सम्राट हर्षवर्धन के पश्चात् भारत में आर्य जाति (हिन्दू जाति) का राजतंत्र क्षीण होने लगा और सातवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अयोध्या पर लगातार मुसलमानी हमले होते रहे और अन्त में बाबर के संगठित आक्रमण से गर्भभवन (रामकोट) नष्ट-भ्रष्ट हो गया। फजल अब्बास नामक फकीर के बाबर पर क्रोधित होने के कारण और उससे यह कहने के कारण कि "मैं चाहता हूँ कि जन्म स्थान मंदिर की जगह मुसलमानों की नमाज के लिए मस्जिद बनवा दें, बाबर ने अन्ततः मीर बाकी इसफहानी (युद्धमंत्री) को ताशकन्दी मस्जिद निर्माण करने की आज्ञा दी और स्वयं वह दिल्ली वापस चला गया।

परन्तु हिन्दू (आर्य) लगातार युद्ध करते रहे श्री राम जन्मभूमि को स्वतन्त्र कराने के लिए। अंग्रेजों के शासन काल में भी अंग्रेज सत्यता को छिपाकर हिन्दुओं तथा यवनों में युद्ध करवाते रहे। १८५७ तक हिन्दू और मुसलमान एक ही स्थान पर बैठकर अपनी-अपनी पद्धति से पूजा अर्चना करते रहे। हिन्दू वहीं फूस का मंदिर बनाकर पूजा करने लगे तो यवनों ने नवाब वाजिदअली शाह से उसे गिरवाने के लिए कहा। जिस पर उसने निम्नलिखित कविता में उत्तर दिया—

“हम इष्क के बन्दे हैं मज़हब से नहीं वाक़िफ,  
गर काबा हुआ तो क्या, बुतखाना हुआ तो क्या।”

उसने वह फूस का मन्दिर वैसे ही बना रहने दिया। परन्तु १९१२ तथा १९३४ में फिर एक बार हिन्दुओं

और यवनों में राम जन्म भूमि (हिन्दुओं द्वारा) को स्वतन्त्र कराने के लिये संघर्ष हुआ। अर्थात् वे (हिन्दू) राम जन्म भूमि को स्वतन्त्र कराने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील हैं।

हिन्दुस्तान ( भारत ) की स्वतन्त्रता ( अगस्त १९४७ ) के बाद भी भारत सरकार पिछले तैतालीस वर्षों से इस समस्या को न सुलझा सकी, वरन् यवनों को सतुष्ट करने की तुष्टिकरण नीति अपनाती चली हिन्दू —

दया धर्म नहीं छोड़िये, जो लौ घट में प्राण।  
वाली कहावत को चरितार्थ करते आ रहे हैं। (क्योंकि हमारे पूर्वज आक्रमणकारियों को हराकर अपने में ही मिला लिया करते थे।)

१९८९ से राम जन्मभूमि पर राम मंदिर निर्माण के लिए शिलान्यास किया गया। देश के हर स्थान से शिलार्यो लाकर पूजन किया गया तथा गर्भ गृह में रामलला की मूर्ति की स्थापना की गई।

कितने शर्म की बात है कि जज पांडे के फैसला सुना देने के पश्चात् उस निर्णय को सरकार ने नहीं माना तथा जज को निलंबित कर दिया। क्योंकि वह फैसला हिन्दुओं के पक्ष में था। नई सरकार (जद सरकार) ने भी तुष्टिकरण नीति अपनाते हुए उसे किसी प्रकार टालने का प्रयत्न किया। परन्तु हिन्दुओं के सब्र का बाँध टूट गया, फिर भी निहत्थे हिन्दुओं ने कार सेवा ३० अक्टूबर को की। जिससे उन्होंने तथाकथित बाबरी मस्जिद पर भगवा फहरा दिया। परन्तु इस सरकार ३० अक्टूबर तथा २ नवम्बर को (१९९०) इन निहत्थे राम भक्तों को भुनवा डाला। इस नृसंस हत्याकाण्ड के बाद भी भक्तों के जोश में कमी नहीं आयी। इस सरकार ने रामलला की मूर्ति तथा छतरी भी गायब करवा दी जो कि इससे पहले वहाँ विद्यमान थी।

राम जन्म भूमि की सार्थकता फिर सिद्ध होती है, कट्टर सुन्नी मुस्लिम नेता एवं बार एसोसिएशन के पूर्व

महामंत्री श्री मोहम्मद इफितखार अहमद खाँ एडवोकेट के बयान से। जिन्होंने ११ नवम्बर १९९० को विवादास्पद बाबरी मस्जिद का बारीकी से अध्ययन करने के पश्चात् निम्नलिखित तथ्य दिये।

१- पेश इमाम के खड़े होकर नमाज पढ़ने का स्थान ( जिसे मेहराब कहते हैं। ) नहीं है। पेश इमाम द्वारा खुबदा पढ़ने का स्थान भी नहीं बना है।

२- नमाज पढ़ने से पहले 'वजू' करने के लिए भी स्थान नहीं बता है।

३- प्रत्येक मस्जिद में 'अजान' देने के लिये मोर्वाज्जन के खड़े होने का स्थान होना अनिवार्य होता है परन्तु वह स्थान भी नहीं है।

४- प्रत्येक मस्जिद में मीनार होती है उसमें वह मीनार भी नहीं है।

उपरोक्त तथ्यों को रखते हुए आजम खाँ ने कहा कि वहाँ कोई मस्जिद नहीं है।

उन्होंने रामजानकी मन्दिर की पुष्टि करते हुए कहा कि मुख्य द्वार पर दो काले रंग के खम्भों पर त्रिशूल कलश तथा कमल की कलाकृतियाँ बनी हैं।

जो इस बात की पुष्टि करते हैं कि वह मन्दिर है मस्जिद नहीं।

इन तथ्यों के होते हुए भी आखिर राम जन्मभूमि विवाद क्यों ?

---

## धर्म ईश्वर से भी बड़ा

ईश्वर अधर्म नहीं कर सकता। यदि करेगा तो सर्वशक्तिमान नहीं रहेगा। अधर्म शक्ति का नहीं दुर्बलता का द्योतक है। आग अगर बुझने लगे तो शक्तिशाली नहीं रहेगी। शक्ति मनमानी करने में नहीं, संयमपूर्ण व्यवहार में है। अतः सर्वशक्तिमान ईश्वर सम्पूर्ण संयमी अर्थात् पूर्ण धर्ममय है। ईश्वर जब जन्म लेता है तो मनमानी करने के लिये नहीं, वरन् अधर्म के विनाश और धर्म की स्थापना करने के लिये ही लेता है। यदि बुरा न लगे तो कह सकते हैं कि ईश्वर से भी बड़ा धर्म है। वह धर्म से चलता है, इसलिये सृष्टि चलती है।



# राम-जन्मभूमि-मन्दिर-वोट-बैंक का शिकार

विश्वम्भर दयाल

—दशम 'क'

भारत में मुस्लिम-तुष्टीकरण की नीति का सूत्र-पात ही कुर्सी-मोह के कारण हुआ। नेहरू से लेकर आज तक भारत में तुष्टीकरण की यह दुर्नीति फल-फूल रही है। इसी का एक बिन्दु है राम-जन्मभूमि मन्दिर-विवाद।

—सम्पादक

दीर्घसूत्री प्रवृत्ति, संकीर्ण विचारधारा एवं वोट की राजनीति ने जहाँ एक ओर देश के सत्ता लोलुप नेताओं की कलाई खोल दी है वहीं दूसरी ओर उन्हें आगाह भी कर दिया है। ये कुर्सी से चिपके रहने की प्रवृत्ति रखने वाले राजनेता आज राहु और केतु की भाँति भारत देश रूपी महासूर्य को डसने को तैयार खड़े दिखायी देते हैं। पर इतना कह देने मात्र से हमारा कर्तव्य समाप्त हो जाता है; शायद नहीं। क्या हम इन नेताओं से बड़े दोषी नहीं हैं? जरूर हैं, क्योंकि ये हमारे ही द्वारा विधायक या सांसद, निर्वाचित हैं। यदि देश का आम नागरिक ही बेईमान प्रवृत्ति का होगा तो फिर क्या कहना ?

हाँ, तो बात है राम जन्मभूमि मन्दिर पुनर्निमाण की। भारत के रग-रग में हिन्दुत्व है; हिन्दू संस्कृति, सनातन संस्कृति, वैदिक संस्कृति ही भारत की पहचान है। अब एक बात है यह विचार करने की कि वैसे तो हिन्दू संस्कृति के प्रतीक रूप में अनेकों - भारत के चारों कोनों में स्थित चार धामत्रयी, गया, वैष्णोदेवी, रामेश्वरम्, सोमनाथ का मन्दिर, अमृतसर का स्वर्ण-मन्दिर आदि हैं, परन्तु आम हिन्दू, आम भारतीय इन सभी तीर्थों के दर्शन सुख से किन्हीं अपरिहार्य कारणों से वंचित रह जाता है तो फिर.....जरूरत है आज भारतीय संस्कृति को एक जंसे प्रकाश देने वाले तीर्थरूपी दीपस्तम्भ की जिसकी आभा से, जिसकी तीव्र किरणों से, किरण-पुंजों

से सारा भारत नहा उठे। जहाँ पर विश्व का एक-एक भारतीय-हिन्दू या फिर हिन्दू संस्कृति में आस्था रखने वाला, कोई भी जाकर मात्र एक ही जगह संपूर्ण सनातन संस्कृति के वैभव-अध्यात्मिक सुख का आनन्द उठा सके और इसके लिये भारत के केन्द्र में स्थित उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जिले के अयोध्या नामक तीर्थ स्थल से बढ़कर क्या हो सकता है; और इससे बढ़कर क्या हो सकता है भगवान राम का जो हमारे मन पर राज करते हैं जो हमारे आदर्श हैं जो हमारे आराध्य हैं उनके जन्म स्थल पर एक ऐसा भव्यतम अपूर्व आराध्य स्थल मन्दिर तैयार किया जाये—पहले से जीर्ण-क्षीर्ण अवस्था को दशति मन्दिर की जगह। वह भारतीय संस्कृति के सम्पूर्ण विश्व में एक ऐसे प्रतीक ध्वज के समान होगा जो हिन्दुत्व की गाथा गायेगा पर.....पर कितने अफसोस की बात है कि आज का राजनेता अपने देश के बारे में नहीं, भारतीय संस्कृति के विषय में नहीं, अपितु एक थोथे.....से कुलरिज्म की दुहाई देता है।

कितना कष्टदायक था वह दिन जब भारत का विभाजन हुआ एक सोवी सम्झौती रणनीति के तहत मोहम्मद अली जिन्ना जैसे मक्कारों की चालों ने सम्पूर्ण देश को सांप्रदायिकता की खूनी होली खिलाने का ताना-बाना बुन डाला। खैर एक अलग मुस्लिम देश पाकिस्तान का उदय तो हो गया पर उस समय भी स्वार्थपरक राज-

नीति ने अपना रंग जमाया और काफी मुस्लिम भाई भारत छोड़ पाकिस्तान नहीं जा सके जिसका दुष्परिणाम आज देश के सामने है। आज आम मुसलमान भारत विरोधी, भारतीय संस्कृति का विरोधी, है तो भी आज की गन्दी थोथी राजनीति ने उनसे कोई जवाब नहीं माँगा और उल्टे अल्पसंख्यक के नाम पर उन्हें बढ़ावा दिया गया, उनके हौसले बुलन्द किये गये। माननीय प्रधानमंत्री नेहरू तो कहते ही थे कि मैं वेश-भूषा से मुस्लिम मोह-मडन और कल्चर से ब्रिटिश, पता नहीं कैसे मैं हिन्दू परिवार में जन्म ले गया और यही विचार उन्होंने भारतीय संविधान में थोपने के प्रयास किये और न जाने क्यों तत्काल तमाम राजनेताओं ने धर्मनिरपेक्षता की वकालत की। जब मुस्लिमों को उनका हिस्सा दे दिया गया तो फिर क्या जरूरत थी भारत को धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र घोषित करने की।

अब एक बात जिधर सभी का ध्यान आकर्षित होना चाहिये वह है कि आज जितना सवर्ण वर्ग है वही राम जन्मभूमि मंदिर निर्माण के लिये प्रतिबद्ध दिखता है। अन्य लोग जो कि अपने को अभी तक हिन्दू धर्म की मुख्य धारा से अलग मानते आ रहे हैं वे इसे मात्र पंडितवाद, ठाकुरवाद, की ही संज्ञा देते हैं। वे कहते हैं कि आज बाजपेयी, दीक्षित, शर्मा, मिश्रा आदि हम पर राज कर रहे हैं और शायद इसीलिए वे आरक्षण जैसी बैसाखी जिसकी शायद उन्हें अब जरूरत नहीं, लगाये रखना चाहते हैं। हमें इस मूल को सुधारना होगा और उन्हें गले लगाकर आत्म-सम्मान देना होगा। नहीं तो हरेक हिन्दू-धर्म के मुद्दे पर वे किनारा थाम लेंगे।

अच्छा अब जिस बात की चर्चा करना आवश्यक है वह है ३० अक्टूबर की कारसेवा की। तत्कालीन केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकार की इस सम्बन्ध में जो भी भूमिका रही वह अत्यन्त निन्दनीय है और अक्षम्य है। इधर सरकार की इस कलंकित नीति का समर्थन करने वाला लोग भी मिल जाते हैं। वे यह प्रश्न करते हैं कि यदि वी० पी० सिंह, मुलायम सिंह की जगह कोई और होता तो वह क्या करता ? अर्थात् सीधे कहें ता वे यह

कहना चाहते हैं कि इन लोगों ने जो किया वह बिल्कुल सही किया और यही उन्हें करना ही चाहिये था। कितने सूख हैं तो लोग जो इनके नीच कर्मों की वकालत करते फिरते हैं और अपनी बुद्धि पर धर्मनिरपेक्षता का पर्दा डाले बैठे हैं। जो काम जनरल डायर, चंगेज खाँ, तैमूर, औरंगजेब न कर सका वह इन्होंने कर दिखाया। सचमुच हाँ सचमुच ही इनका काम काबिले तारीफ है क्योंकि अल्पसंख्यकवाद, धर्मनिरपेक्षवाद ने इनको इतना अंधा कर दिया कि इन्होंने निर्दोष, निहत्थे रामभक्तों पर कार सेवकों पर गोलियाँ चलवायीं, सब कुछ जानते हुए भी अनजान बने रहे और बने रहना चाहते हैं। इन जैसे लोगों ने तो धर्म निरपेक्षता की परिभाषा ही उलट दी है। इनकी नजर में जो कोई बात हिन्दुत्व का, भारतीयता का, राष्ट्रीयता का पक्ष लेती है तो वह साम्प्रदायिकता और जो बात अल्पसंख्यक समुदाय का वह धर्म निरपेक्षता, खैर विषय बहुत लम्बा है और शब्द व जगह कम। अतः संक्षेप में कुछ निम्नलिखित बिन्दुओं पर दृष्टिपात करने से शासन की धर्म निरपेक्षता की नीति का खुलासा हो जाता; सच कहें तो इस नीति की समझ आ जाती है :-

- (१) क्योंकि मुस्लिम समुदाय परिवार-नियोजन लागू नहीं करता।
- (२) क्या आवश्यकता थी कि मुख्यमंत्री अपने भाषणों में हिन्दू-धर्म के विरोध में आग उगलता ?
- (३) क्या जरूरत थी कि सरकार हिन्दू-समाज को जातिगत मतभेदों में उलझाने हेतु मात्र वोट-बैंक की मजबूती के लिये (यहाँ यह बात समझ लेनी चाहिये कि तथाकथित अस्पृश्य वर्ग आज मुसलमानों के पक्ष में है।) मण्डल कमिशन की रिपोर्ट ज्यों की त्यों लागू करती (जबकि वह रिपोर्ट १९३१ की जनगणना पर आधारित है और उसके पाँच सदस्यों में से चार तथाकथित निम्न वर्ग के थे।)
- (४) वोट की राजनीति करने वाले इन नेताओं को क्या जरूरत आ पड़ी कि इन्होंने राम जन्मभूमि मन्दिर के निर्माण हेतु विदेशों में रह रहे भारतीय

संस्कृति के पुजारियों द्वारा भेजे जाने वाले धन पर प्रतिबन्ध लगा दिया जबकि अन्य धर्मों पर नहीं। यह पक्षपातपूर्ण रवैया क्यों ?

- (५) क्या जरूरत थी कि मुहम्मद साहब के जन्म दिवस पर राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया जाता और वह भी स्वतन्त्रता दिवस को और लाल किले की प्राचीर से ?
- (६) जामा मस्जिद के इमाम अब्दुल्ला बुखारी को मस्जिदों पर खर्च करने के लिये धन दिया गया क्यों ?
- (७) क्यों सरकार मामले को लटकाये रखना चाहती है ? ताकि भारतीयों को, हिन्दूओं को उनकी स्वयं की नजर में नीचा दिखाया जा सके ? (वह मस्जिद इसी बात का द्योतक है।)
- (८) क्यों देश का सबसे बड़ा राजनैतिक दल इस मुद्दे पर सकारात्मक रूख नहीं अपनाता ?
- (९) सरकार को यह मुद्दा उच्चतम न्यायालय को सौंपने में या फिर इसका हल निकलवाने में क्यों रुचि नहीं है ?

(१०) क्यों रथयात्रा (आडवाणी की) रोक़ी गयी जबकि दंगे नहीं भड़के थे ?

अब क्या कहना इन नेताओं का। ३० अक्टूबर की घटनाओं से यह बात स्पष्ट परिलक्षित होती है कि ये नेता हर महत्वपूर्ण विषय पर इतनी ज्यादा ऊहापोह और अनिश्चय की स्थिति में रहते हैं कि बस.....। धर्मनिरपेक्षता.....धर्मनिरपेक्षता.....धर्मनिरपेक्षता.....बहुत हो गया। इस एक अकेले शब्द ने आज लोगों में भ्रम की स्थिति उत्पन्न कर दी है और धर्मनिरपेक्षता की मूल परिभाषा को ही भूल गये हैं। आज जरूरत है देश को देश के संविधान के पुनर्वलोकन की, आवश्यकता है धर्म निरपेक्षता जैसे शब्द को संविधान से निकाल फेंकने की। आज समय की मांग है कि भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित कर दिया जाय और यह निर्भर है आज की भारतीय जनता पर, जन प्रतिनिधियों पर, बुद्धजीवियों पर और हर भारतीय संस्कृति के पुजारी पर।

“संपत्ति, बुद्धि तो बहुतों के पास होती है पर वे उसका सदुपयोग नहीं जानते हैं उसी प्रकार विचार भी लोगों के पास बहुत होते हैं पर सद्विचारों को आचरण में बहुत कम ही अपनाते हैं वैसे ही संकल्प (राम जन्म भूमि निर्माण) सभी करना जानते हैं पर उसे पूरा करने के लिये आत्मोत्सर्ग बहुत कम ही लोग करते हैं।”

“संदेश मैं यहाँ स्वर्ग का नहीं लाया।

इस धरती को ही स्वर्ग बनाने आया ॥”

—मैथिलीशरण गुप्त

## जो अब इतिहास हो गया.....

आशुतोष तिवारी

‘दशम’

३० अक्टूबर का संघर्ष श्रीराम जन्म-भूमि मुक्ति-यज्ञ में दी गई एक ऐसी जनाहुति के रूप में था जिसमें न केवल राम-भक्ति की सुगन्ध, अपितु अस्मिता की ऊर्जा, ऐतिहासिक विध्वंस और अपमान का परिमार्जन एवं प्रायश्चित्त करने की तड़प भी थी ।

—सम्पादक

३० अक्टूबर १९९० अयोध्या का अयुद्ध क्षेत्र । कहते हैं कि बाबर के आक्रमण के पूर्व अयोध्या में कोई युद्ध नहीं हुआ किन्तु बाबर के आक्रमण के बाद से अब तक ७७ संघर्ष हो चुके हैं । सभी संघर्ष श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति-यज्ञ से जुड़े हैं । ३० अक्टूबर का ७७वाँ संघर्ष श्री राम जन्म-भूमि मुक्ति-यज्ञ एक ऐसी जनाहुति के रूप में था जिसने न केवल राम-भक्ति की सुगन्ध, अपितु राष्ट्रीय अस्मिता की ऊर्जा, ऐतिहासिक विध्वंस और अपमान का परिमार्जन एवं प्रायश्चित्त करने की तड़प भी थी ।

मुना और पढ़ा था कि इतिहास केवल भूतानक ही करता है । लेकिन ३० अक्टूबर को स्वयं इतिहास समय के साथ-२ चल रहा था । किन्तु हम सब भी तो समय के आधीन हैं अतः मैं तो यह कहूंगा कि इतिहास हमारे साथ-साथ चल रहा था । वह वर्तमान को केवल भूत की दृष्टि से ही नहीं देख रहा था उसकी दृष्टि भविष्य पर भी थी । अगर मैं यह कहूँ कि भूतकाल वर्तमान तक आकर भविष्य बनने का असफल प्रयास कर रहा था तो तनिक भी अतिशयोक्ति न होगी ।

वर्तमान की भूमि पर खड़े होकर भूत की भविष्य बन जाने की आशा का अर्थ है अतीत के पाप-बोध से मुक्त होकर एक पुण्यमय काल की सृष्टि का बीजारोपण ।

यही हुआ उस दिन, इतिहास और समय साथ-साथ चल रहे थे । समय मौन था किन्तु इतिहास मुखर था । वह समय के कान में हँसने से कह देता था कि देश को अपमान व पराजय के रौरव नरक से मुक्त कराये बिना तुम अपनी पहचान नहीं प्राप्त कर सकोगे । जो लोग आज यहाँ ‘देश’ है या ‘देश’ होने का दावा करते हैं वे स्वयं से अपरिचित हैं और स्वयं से अपरिचित लोग किसी सराय का निर्माण तो नहीं कर सकते ।

बार-बार कानों में इतिहास के ये शब्द गूँज रहे थे, “मैं तुम्हारे बगल में खड़ा हूँ” मुझे देखो और भूत-काल की कारा से मुक्त करके कम से कम एक बार उस भविष्य की झलक तो दिखा दो जो वर्तमान का मार्ग-क्रमण करके तुम्हारा, तुम्हारे राष्ट्र का गौरवमय अतीत बनने का प्रयास कर रहा है ।

### धधकती घड़ियों में विजय का उल्लास :-

अयोध्या में २९ अक्टूबर को पूरी तरह शांति रही । सभी धड़कते दिल कल की कल्पना में सो गये । अगले दिन अर्थात् ३० अक्टूबर का प्रारम्भ भी शांतिपूर्ण रहा । धड़कते दिलों और बढ़ती घड़ियों को प्रतीक्षा थी प्रातः ९ बजकर ४४ मिनट के शुभ मुहूर्त की ।

नौ बज गये । नौ बजकर दस मिनट पर मणिराम छावनी का सिंह द्वार खुला । 'जय श्रीराम' के घोष के साथ श्री अशोक सिंहल बाहर निकले और सामने स्थित बाल्मीकि रामायण भवन में गये । कुछ ही देर में महन्त नृत्यगोपालदास, स्वामी वामदेव, विवेकानन्द जी महाराज साक्षी जी महाराज आदि एक-एक सन्त आते गये । सभी बाहर निकल आये । अग्रिम पंक्ति में सन्तजन उनके पीछे सिंहल जी तथा सबसे पीछे "जय श्रीराम" का उद्घोष करते कारसेवक । कुछ ही देर में कार सेवक आ-आकर जमा होने लगे और देखते ही देखते ५० हजार कारसेवक एकत्रित होये गये । मणिराम छावनी से दिग्म्बर अखाड़ा व हनुमान गढ़ी तक आते-आते एक लाख कारसेवकों का विशाल समूह एकत्रित हो गया । मानों हर घर में दर्जनों कारसेवक हुए हों । हर सड़क, हर गली, हर व्यक्ति तथा हर दिल राममय हो गया था ऐसा प्रतीत हो रहा था । सभी सुरक्षा कर्मचारी हतप्रभ थे ।

अभी यह चल ही रहा था कि आश्चर्य ! सामने से पी० ए० सी० की एक बस पर चालक के रूप में हट्टे-कट्टे संत रामविलास सिंह । बस के भीतर करीब सौ कारसेवक व छत पर पचास । साथ में गगनभेदी 'जय श्रीराम' के नारे । बस धड़धड़ाती हुई चली आ रही थी मानो वह राम का विध्वंसक रथ हो । आगे-आगे बस, पीछे कार सेवक तथा साथ में सकपकाये ऊदबिलाव से लाठियाँ भाँजते सी० आं० पी० के जवान । बस चलती गयी । एक लौह अवरोधक तोड़ा-भड़ाक S S S । दूसरा तोड़ा । तीसरा पहले धक्के से नहीं टूटा तो बस पीछे की, एकसीलेटर दबाया और 'जय श्रीराम' के घोष के साथ यह बैरियर भी टूट गया । इसी प्रकार चौथे और पाँचवें बैरियर को भी तोड़ते हुये राम जन्मभूमि से मात्र सौ गज की दूरी पर आकर बस रुक गयी । आगे रास्ता सँकरा था । पर इस वीर सन्त का यह कारनामा सभी के रोंगटे खड़े कर गया ।

इसके बाद तो सैकड़ों कारसेवक राम जन्मभूमि के अन्दर व दर्जनों गुम्बद के शिखर पर भगवा ध्वज फह-

राने का प्रयास कर रहे थे । कहीं मुलायम सिंह ने कहा था कि, "परिन्दा भी पर नहीं मार सकता और कहीं सैकड़ों कारसेवक नाखूनों से दीवार को नोच लेना चाहते थे और धक्कों से गिरा देने के लिये व्याकुल थे । चाहर-दिवारी की खिड़कियाँ टूट कर अलग पड़ी थीं । कारसेवक उल्लास में नृत्य कर रहे थे । उन्होंने अपने राम लला को छुआ, चूमा व छाती से लगाया । इसी बीच वायल हुए सिंहल जी की तरफ जब लोग बढ़े तो वे गर्जन कर उठे, "मुझे छोड़ो जन्मभूमि की तरफ जाओ, कारसेवा वहाँ करनी है ।"

तभी वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सुभाष जोशी आ गये । उन्होंने अब तक किकर्तव्य विमूढ़ होकर खड़े सुरक्षा कर्मियों को फायरिंग का आदेश दे दिया । गुम्बद पर चढ़े कारसेवक शहीद होने लगे किन्तु उनके प्राणों की ज्योति अब रामज्योति में समाई तो रामलला के सामने रखी ज्योति धक्ककर और भी प्रखर हो उठी । एक साधू जो जो कि छत पर खड़ा था चीख उठा, "अरे माँ का दूध पिया है तो कश्मीर में जाओ, पंजाब जाओ वहाँ आतकवादियों से लड़ो । निहत्थे लोगों को मारते लाज नहीं आती ।"

इस प्रकार श्रीराम की एक विजय लंका में हुई थी तो एक अयोध्या में हो गयी । सरयू पुल से लेकर जन्मभूमि तक दर्जनों कारसेवकों ने अपनी प्राणाहुति देकर अपने रामलला की आराधना की । सत्ताशक्ति ने राष्ट्रशक्ति व जनशक्ति के चरण चूमे । इतिहास अर्थात् भूत की कालिमा को ध्यान में रखकर भविष्य को उज्ज्वल बनाने का जो व्रत रामभक्तों ने लिया था वह पूरा हो गया । सारे प्रदेश में दूसरी दीपावली मनाई गयी । मानों रामलला ने फिर से अवतार लिया हो ।

जो राम भक्त आज तक कहते थे, "रामलला हम आर्येण, मन्दिर वहीं बनायेंगे ।" वे भी आज कह रहे थे-

"देखो रामलला हम आ गये ।"

'जय श्रीराम'

# इतिहास के वे काले क्षण

अनुभव वर्मा

दशम क

अयोध्या का वह नरसंहार इतिहास का वह काला पृष्ठ है जो कभी विस्मरण न होगा ।

—सम्पादक

दो नवम्बर १९९० प्रातः काल सरयू के तट पर राम भक्तों को दो ओर से जन्मभूमि की ओर जाना था । एक दल को सरयू पुल की ओर से राष्ट्रीय राजमार्ग होकर और दूसरे दल को दिगम्बरी अखाड़े के सामने से होकर हनुमान गढ़ी गली के चौराहे की ओर से । सभी कार-सेवकों को यह सूचना थी कि वे तालियाँ बजाते और संकीर्तन करते हुये आगे बढ़ेंगे । जहाँ पुलिस या सुरक्षा बल उन्हें रोक देंगे वहीं बैठ जायेंगे और कीर्तन करते रहेंगे । कारसेवकों के नए दल आयेंगे तो पहले से कीर्तन कर रहे कार सेवक विश्राम के लिए बैठ जायेंगे । सभी सतर्क थे । प्रत्येक कार सेवक अपने पास वाले कार सेवक का जायजा ले रहा था कि उसके पास कोई शस्त्र या ईंट-गुट्टा तो नहीं है । सभी दोनों हाथों से तालियाँ बजा रहे थे । अपने रामलला को रिश्ना रहे थे कि “राम लला हम फिर आ रहे हैं । आपको देखेंगे, आपके साथ, खेलेंगे, फिर वापस जायेंगे ।

परीक्षा की घड़ी :—किन्तु रामलला को संभवतः उनकी भक्ति की परीक्षा लेनी थी । उनकी भावना के सिंधु की गहराई नापनी थी । दिगम्बरी अखाड़े के सामने वाली गली से होकर वे राष्ट्रीय राजमार्ग तक पहुँचते कि सुरक्षा बलों ने उन्हें आगे बढ़ने से मनाकर दिया । वे वहीं बैठ गये । रामधुन करने लगे । कुछ देर के पश्चात् अश्रु गैस का एक गोला फटा । धूँ से कारसेवकों की आँखें जलनी लगी । लोग तितर-बितर होने लगे,

तभी एक अधिकारी बोला, बात बनी नहीं ये तो घरों में घुस रहे हैं, पीछे जा रहे हैं ।” जोर से बोला, “रोको इन्हें पीछे मत हटने दो ।” आगे और पीछे से सी० आर० पी० के जवानों ने कारसेवकों को घेर लिया । वहीं परिवार के लोग सड़क पर अश्रु गैस से पीड़ित कारसेवकों की सहायता में संलग्न थे । वे बाल्टियों से पानी की वर्षा कर रहे थे । सुरक्षा-बल के जवान धमकी देते तो उन पर भी पानी फेंक देते । माताओं, बहनों ने अपनी साड़ियाँ फाड़ी, रूमाल बनाया भिगोया और सड़क पर फेंक दिया—

“भइया इसे लेकर आँखों से लगा लो । मुकाबला करो इन राक्षसों का । ये जल्लाद हैं—जल्लाद ।

अन्तिम शब्द ‘जय श्रीराम’ :—वहाँ पर शब्दघोषों में केवल गोलियों की आवाज और ‘जय श्रीराम’ के अतिरिक्त और कुछ नहीं था । गोलियाँ निशाना साधकर मारी जा रहीं थी । कमाण्डर बार-बार कहता था “कोई गोली बेकार नहीं जानी चाहिए ।” गोली निशाने पर लगती । कारसेवक का शरीर दोनों ओर उठा कर ऊपर उछलता और गिरकर शांत हो जाता । हर बार गोली चलती और हरबार कारसेवक जय श्रीराम कहते हुये उछलता और गिरकर शांत हो जाता । अश्रु गैस के कारण तितर-बितर हो गये कारसेवक जय श्रीराम बोलते हुए फिर सड़क पर आकर खड़े हो गये थे । एक कारसेवक

को गोली लगती, वह गिरता तो दूसरा कारसेवक जय श्रीराम कहते हुए आगे आकर खड़ा हो जाता ।

इस अद्भुत हौतात्म्य पर्व के बीच एक अकल्पित दृश्य भी दिखाई दिया । ओम श्रीमाता मंदिर के पाम वाली गली के मोड़ पर एक कारसेवक को गोली लगी, वह गिरा तो दो कारसेवकों ने अपने शरीर का छत बना कर उसे ढक दिया । छत पर खड़ा कमान्डेन्ट चीखा— “उस्मान ! मारो सालों को । ये बचाने आये हैं ।” और उस्मान ने निशाना साधकर उनकी कनपटी पर गोली मारी । दोनों का भेजा तो उड़ गया, लेकिन गोलियाँ उनका छत्र नहीं भेद सकी ।

लोग मृतकों का हिसाब पूँछते हैं कहते हैं यह बात बताइये कि कम से कम कितने लोग मारे गये होंगे । जहाँ जहाँ हौतात्म्य पर्व चल रहा हो, जहाँ अपने प्राणों की आहुति देकर अपने रामलला की आराधना करने की होड़ लगी हो जहाँ जल्लाद निहत्थों को शत्रु की भाँति मार रहा हो, वहाँ लाशों की गिनती कर पाना क्या सम्भव है ?

एक सँकरी गली में बँठे पचास हजार से अधिक लोगों पर पैतालीस मिनट तक अन्धाधुंध गोली चलायी जाये तो क्या मृतकों की सूची बना पाना सरल काम है ? दो नवम्बर को मारे गये कारसेवकों की सूची न अभी तक बनाई जा सकी है और न कभी बनाई जा सकेगी जो शव मिले हैं वह पत्रकारों के कारण । जो अज्ञात है वह पत्रकारों को रोके जाने के कारण ।

**सरकारी झूठ :—** पैतालीस मिनट गोली चलने के पश्चात् कारसेवकों के शव विक्षिप्त पड़े थे । घटना के पश्चात् कारसेवकों के शवों को वाहनों पर लाद दिया गया । तत्पश्चात् वहाँ पर केवल तीन शव क्षत-विक्षत पड़े थे । जगह-जगह शवों के घसीटे जाने के खूनी निशान थे । खून फैला हुआ था । घायल कारसेवकों को पास के घर वाले अन्दर उठा ले गये थे । उस शाम कुल मिला कर दस लोगों के मारे जाने का समाचार दिया गया तो लोग अचम्भित हो गये इस सरकारी झूठ पर ।

**सरयू के उस पार भी गोली चली :—**दिगम्बरी अखाड़े वाली गली में ही कारसेवक नहीं मारे गये । सरयू पुल के उस ओर राजमार्ग पर एकत्र दस हजार कारसेवकों पर भी उस दिन गोली चली । भोजन कर रहे तीन सौ कारसेवकों पर अंधाधुंध गोली चलाई गई । मृतकों और घायलों को सरयू में फेंक दिया गया दर्जनों शव को पेट्रोल छिड़क कर जलाए जाते देखे गये ।

हर दिन मां सरयू के तट पर किसी न किसी कार सेवक का शव मिल जाता था । वह माँ कब तक सँकड़ों मृत सपूतों को अपनी छाती से लगाए रखती । एक-एक करके उनकी अन्त्येष्टि भी तो करनी थी ।

इतिहास के वे पैतालीस मिनट राजनीति के धिनोने एव नृशंस कृत्य को सदैव उजागर करते रहेंगे । वे पैता-मिनट मन्दिर निर्माण के अभियान का प्रकाश स्तम्भ जो जो सदैव इस मार्ग को प्रकाशित करता रहेगा ।



# सरयू की लाली का उत्तरदायी कौन ?

— यत्नेश पाण्डेय  
एकादश 'क'

[किसे ज्ञात था कि एक दिन सरयू का जल भी लाल हो जायेगा। राम जन्मभूमि के संघर्ष का एक और दौर। आत्माहुति यह नवीन अध्याय जहाँ एक ओर राम भक्तों के गौरव को बढ़ाता है वहीं दूसरी ओर प्रशासन के माथे पर बदनुमा दाग भी छोड़ जाता है।]

—सम्पादक

भरी अयोध्या की गलियों में रचा गया इतिहास।

दानव के निर्सम प्रहार से सहम गया मधुमास।

अश्रु गंस के गोले झेले और सीनों पर गोली,

हर प्रहार को सहते बढ़ती दीवानों की टोली ॥

टप-टप गिरा लहू धरती पर, रक्तितम हो गई गलियाँ,

बलिदानी स्वर फिर भी गूँजा, अर्पित करने बलियाँ।

स्वतंत्र देश के साथे का इतिहास—कलंक मिटाएँ,

राम लला हम आए हैं, मन्दिर यहीं बनाएँ ॥

हम मन्दिर भव्य बनाएँ ॥

जब साप्ताहिक पाँचजन्य में प्रकाशित इन हृदय स्पर्शी पंक्तियों को पढ़ा तो मैं रोमांचित हो उठा। हृदय में उत्साह और नेत्रों में अश्रु आ गये। विभिन्न आँख-वारों, रेडियो तथा टी. वी की खबरें विरोधाभास उत्पन्न कर रही थीं। किन्तु संयोग से मुझे आयोध्या जाने और वहाँ की वास्तविकता जानने का अवसर १८ नवम्बर, रविवार को मिला।

रविवार को मैं अपने अभिभावकों के साथ बस से अयोध्या की ओर चल पड़ा। फैजाबाद के निकट ही जगह-जगह पर सुरक्षा कर्मियों द्वारा की गई नाके बंदियाँ देख कर ऐसा लग ही न रहा था कि मैं अपने देश के किसी हिस्से में जा रहा हूँ। वहाँ सुरक्षा का प्रबन्ध इतना ही कड़ा था जितना कि पाकिस्तान या चीन की सीमा पर होता है।

सायंकाल लगभग ४ बजे सकुशल अयोध्या में प्रवेश करने के कुछ समय बाद ही हमारी मुलाकात बजरंग दल के प्रदेश संयोजक श्री विनय जी कटियार से हुई। उन्होंने हमारे रहने व भोजन आदि का समुचित प्रबन्ध जन्मभूमि से लगभग २ कि० मी० दूरी पर स्थित जानकी महल में किया।

सामान इत्यादि रखने के बाद हम लोग राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ रायपुर म० प्र० के प्रचारक श्री सुरेन्द्र सिंह के दिशा निर्देशन में अयोध्या भ्रमण के लिये चल दिये।

सर्वप्रथम हमने चार घाम मन्दिर पहुँचे और दर्शन किये तत्पश्चात् कनक भवन देखा। मार्ग में मिलने वाले अयोध्या निवासियों की करुण गाथायें सुनकर मनुष्य तो

क्या पशु की भी आँखों में आसू आये बिना नहीं रह सकते ।

बढ़ते-बढ़ते हम उस गली में पहुँचे जो शहीद मार्ग के नाम से जानी जा रही है । वहाँ का वातावरण पूर्ण-तथा शांत, स्तब्ध व शोकाकुल था । यद्यपि प्रशासन ने अपने दमन के चिन्हों को मिटाने के नापाक इरादे को कार्यान्वित करने में कोई कसर न छोड़ी थी । तथापि जिस प्रकार साँच को आँच नहीं आ सकती, वायु के प्रवाह को रोका नहीं जा सकता उसी प्रकार वे चिह्न आज भी ३० अक्टूबर व २ नवम्बर की कथा मौन होते हुये कह रहे थे । तत्पश्चात् हम 'गुहन पण्डा' के मकान पर गये जहाँ ७ व्यक्तियों को खड़ा करके निर्मम रूप से मार डाला गया था । यद्यपि वह पण्डा शारीरिक रूप से वृद्ध और दुर्बल है पर श्रीराम के प्रताप ने उस पर ऐसा जादू कर रखा था कि तमाम लोभ व यातनाओं के बाद भी वह शहीद रामभक्तों का खून धोने नहीं देता और नित्य प्रतिदिन अपनी श्रद्धांजलि फूलों के रूप में देता है ।

अब हम लोग सामने के मकान में गए जहाँ माँ उमा भारती घटना के सोलह दिनों पश्चात् भी विक्षिप्त सी थी क्योंकि बीर कोठारी बधुओं की जघन्य हत्या उन्हीं के सामने हुई थी ।

अयोध्या वासियों के मुख से ज्ञात हुआ कि उन ऐतिहासिक दिनों में सुरक्षाबलों के जवानों ने किस प्रकार राक्षसी रूप धारण करके खून की होली खेली थी और जलियाँ वाला बाग हत्याकांड के लिये दोषी जनरल डायर को मात दी । यह सुनकर मेरे मष्तिष्क में यह विचार कौंधा कि क्या मात्र खाकी वर्दी पहन लेने से व्यक्ति का हृदय पक्ष शून्य हो जाता है ? क्या वर्दी पहनने से व्यक्ति का मानवता, भाई बन्धुओं से रिश्ता टूट जाता है ? क्या हमें इन्हीं सुरक्षा के ठेकेदारों पर

गर्व है ? क्या हमें इन पर गर्व हो सकता है ? जिस देश में एक छोटी सी चींटी में भगवान का रूप देखा जाता है, तो इतना बड़ा नरसंहार हो सकता है ? क्या यही सुरक्षा का ढंग है । ये सब बातें सोच कर हृदय में रोष एवं प्रतिशोध की भावना जल उठती है ।

रात्रि में हम लोग पुनः विश्राम स्थल लौट आए । यद्यपि मैं उपरोक्त घटनाओं का प्रत्यक्षदर्शी न था तथापि ये दृश्य मेरे मष्तिष्क में इस प्रकार उभर रहे थे कि मानों ये दृश्य मेरी ही आँखों के सामने घटे हों । चाह कर भी मैं सो न पा रहा था ।

दिनांक १९ नवम्बर को प्रातःकाल जब हम सरयू स्नान के लिये जा रहे थे तब मार्ग में जगह-जगह तोरण द्वारों को लगा देखा चारों ओर जनसमुदाय के मुखमंडल पर अजीब सी खुशी थी । पूछने पर पता चला कि उस दिन अयोध्या में भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष लाल कृष्ण आडवानी जी सभा को सम्बोधित करने आ रहे हैं । ऐसे उत्साह व संजावट को देख एक बार तो ऐसा लगा मानों साक्षात् श्री राम ही आ रहे हों ।

जब हम लोग लौट कर विश्राम गृह वापस पहुँचे तो पता चला कि बगल वाले कक्ष में विश्व हिन्दू परिषद के महासचिव श्रीमान् अशोक जी सिंघल तथा जन्म भूमि मुक्ति हम सभी लोग विनय जी की कार से आडवानी जी के स्वागत के लिये चल पड़े ।

अशोक जी ने बिडला मन्दिर के निकट ही आडवानी जी का स्वागत किया । तब हमारी पाठ्य पुस्तक में वर्णित राम व भरत के मिलाप का दृश्य उभर आया और पलके अश्रु से नम हो गई । मार्ग में उत्साह से उमड़ रहे विशाल जन समुद्र को देख कर ऐसा लग रहा था कि अब हिन्दू जाग गया है और हिन्दुस्थान से अपने अपमान के समस्त चिन्हों को मिटाकर ही रहेगा ।

# राम जन्म-भूमि के बारे में कुछ तथ्य

मनीष महाजन

—अष्टम 'क'

[राम जन्मभूमि प्रकरण से सम्बन्धित ऐतिहासिक तथ्यों का उद्घाटन प्रस्तुत लेख का विषय है। धार्मिक मान्यता ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की कसौटी पर कितनी खरी उतरती है देखें।]

—सम्पादकीय

(१) श्री राम जन्म-भूमि का पुनरुद्धार महाराजा विक्रमादित्य ने किया। स्कंदपुराण में इस कथन का स्पष्ट वर्णन है।

(२) यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि जिसे बाबरी मस्जिद कहा जाता है। इस बाबरी मस्जिद का निर्माण बाबर ने महाराजा विक्रमादित्य के समय प्राचीन मन्दिर को विध्वंस करके कराया।

(३) भारत के पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के भूतपूर्व सहायक महानिदेशक ने कहा है कि श्रीराम-जन्मभूमि के निकट खुदाई से यह सिद्ध हुआ है कि वहाँ पर १२वीं शताब्दी के ढंग और मूर्ति शैली कारीगरी का एक मन्दिर स्थित था और उस मन्दिर की सामग्री का तथाकथित मस्जिद के निर्माण में पुनः प्रयोग हुआ।

(४) सिविल जज फैजाबाद के ट्रायल कोर्ट में २५ साल से अधिक समय तक यह मुकदमा सुनवाई के लिए पेश नहीं हुआ। यदि मुसलमानों के लिए यह विषय इतने महत्व का था तो वे इसे इतनी लम्बी अवधि तक निष्क्रिय न रहने देते। हिन्दुओं ने कभी भी इस प्राचीन मन्दिर पर अपने दावे और अपनी पूजा के अधिकार को नहीं छोड़ा।

(५) २९ मार्च १९८७ को दिल्ली में इतिहासविदों

की एक गोष्ठी हुई थी। इसमें कई विश्वविद्यालयों के प्रसिद्ध इतिहासकारों और अन्य विद्वानों ने भी भाग लिया था। उनके अनुसार ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर यही स्थान श्री राम-जन्मभूमि का है, जिसे बाबर ने विध्वस्त करके उस पर मस्जिद का निर्माण कराया था।

(६) इस भवन में जो कसौटी के खम्भे लगे हुए हैं उन पर अब भी हिन्दू प्रतीकात्मक चिह्न तथा देवी-देवताओं के चित्र उत्कीर्ण हैं।

(७) जिसे मुसलमान बाबरी मस्जिद कहते हैं इसमें कोई मीनार नहीं है। मस्जिद के लिए मीनार का होना आवश्यक है। ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता है कि यहाँ पर कभी नमाज पढ़ी गयी हो।

(८) इस स्थान पर मुसलमानों ने कभी नमाज नहीं पढ़ी। इस इमारत का रास्ता उस परिसर में से है जो हमेशा हिन्दुओं के कब्जे में रहा है।

(९) महमूद गजनवी ने सोमनाथ के मन्दिर को नष्ट किया था। देश की स्वतन्त्रता के पूर्व वहाँ एक मस्जिद और कब्रिस्तान स्थित था। स्वतन्त्रता के तुरन्त पश्चात् राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद एवं गृहमन्त्री सरदार वल्लभ भाई पटेल के प्रयत्नों से वहाँ पुनः भगवान सोमनाथ के भव्य मन्दिर का निर्माण किया गया। यही राष्ट्रीय गौरव का प्रश्न था।

(१०) भगवान राम का महत्व राष्ट्रीय ही नहीं वरन् अन्तर्राष्ट्रीय है। श्रीराम पूजा विश्व भर में होती है। राम जन्मभूमि को हिन्दू-समाज को वापस लौटाना एक राष्ट्रीय गौरव का प्रश्न है। श्री राम जन्मभूमि के स्थान पर वर्तमान में जो बाबरी मस्जिद कहलायी जाने वाली इमारत खड़ी है उसके स्थान पर वहाँ पुनः भगवान राम की कीर्ति के अनुरूप एक शानदार मन्दिर का निर्माण करवाना आवश्यक है अतः सोमनाथ के मन्दिर का पुनः निर्माण इसके लिए एक प्रमुख उदाहरण है।

(११) श्री राम जन्मभूमि को हिन्दू भगवान राम का जन्मस्थान मानकर इसकी पूजा करते हैं। श्री राम जन्मभूमि के प्रति हिन्दुओं में वही भावनाएं हैं जो मुसलमानों के लिए मक्का में स्थित काबा के प्रति है।

(१२) भगवान राम की तुलना एक विदेशी आक्रमणकारी बाबर से नहीं की जा सकती। यह केवल कुछ कट्टरपंथी अराष्ट्रीय मुसलमान हैं जो इस प्रश्न पर साफ-प्रदायिक दंगे उत्पन्न करके देश को छिन्न-भिन्न करने का प्रयास कर रहे हैं।

(१३) भगवान राम का जन्म स्थान केवल एक ही है और वह अयोध्या वहीं स्थित है जिसे श्री राम जन्मभूमि के नाम से पुकारा जाता है।

(१४) हिन्दू कभी भी इस स्थान के विभाजन के लिए सहमत नहीं होंगे। तथाकथित बाबरी मस्जिद एक राष्ट्रीय अपमान है और यह कभी भी एक राष्ट्रीय स्मारक नहीं बन सकता है। अतः बाबरी मस्जिद तो वहाँ से हटकर ही रहेगी।

## क्या यह मंदिर नहीं ?

वेद प्रकाश सिंह  
अष्टम (ख)

[अपने देश का यह दुर्भाग्य रहा है कि यहाँ की सुख-समृद्धि व संस्कृति पर अनेक आततायी प्रहार करते रहे हैं आज जब अपना ही शासन है तो भी ऐतिहासिक भूलों के सुधार के लिए भी हम सक्षम नहीं हैं और सत्य को और भी प्रमाणों की आवश्यकता पड़ती है। कुछ प्रमाण लेखक की कलम से।] —सम्पादक

आज के इस समय में हिन्दू-मुसलमान के बीच की प्रमुख लड़ाई मन्दिर-मस्जिद को लेकर है। यह मन्दिर उन्हीं का है जिन्होंने आज से नौ लाख वर्ष पूर्व इसी पावन भारत-भूमि पर अवतार ग्रहण किया था। कौन नहीं जानता है कि यह अयोध्या राम की जन्मभूमि है परन्तु आज कुछ कट्टर मुसलमान इस पावन भूमि पर बने मन्दिर को मस्जिद बनाना चाहते हैं यही नहीं वे यह भी कहते हैं कि राम ने कब जन्म लिया था और कब बाबर ने मन्दिर को तुड़वाकर मस्जिद बनवाया। परन्तु वे यह नहीं जानते हैं कि जिस भूमि पर पिछले ८० वर्षों से पूजा की जा रही है यह मन्दिर नहीं तो क्या मस्जिद है ? ऐसे सबूत भी हमारे पास हैं जिससे पता चलता है कि बाबर ने इस मन्दिर को विध्वंस किया।

समय-समय पर हिन्दू सम्राटों ने इसकी रक्षा की। इस मन्दिर को ईसा से लगभग एक शताब्दी पूर्व हिन्दूकुल के देदीप्यमान भानु सम्राट विक्रमादित्य ने यह विशाल मन्दिर बनवाया था।

ईसवी १५२६ में फतेहपुर सीकरी के पास चित्तौड़ के राजा संग्राम सिंह से पराजित होकर बाबर अयोध्या भाग आया, उन दिनों श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर पर बाबा श्यामानन्द जी नाम के एक पहुँचे हुये सिद्ध महात्मा निवास करते थे, इनकी धाक उस समय समस्त

उत्तर भारत में फैली हुई थी। उनसे प्रभावित होकर हजरत कज्जल असा आसिकाना कलन्दर शाह नामक एक फकीर आया और इनका शिष्य बन गया। कुछ दिनों बाद जलालशाह नामक एक कट्टर मुसलमान वहाँ आया और बाबा श्यामानन्द जी का साधक शिष्य बन गया। उसके दिमाग में इस स्थान को खुद मक्का और सहस्रो नदियों का निवास सिद्ध करने की सनक सवार हुई। उसने अयोध्या स्थित पुराने महर्षियों की समाधि विकृत कर उन्हें कब्रों के ढंग में दलबा दिया। दूर-दूर से मरे हुये मुसलमानों के मुर्दों को मंगाकर सारी अयोध्या में दफनाया जाने लगा। अयोध्या कब्रों से पाटी जाने लगी।

फतेहपुर सीकरी के संग्राम में बुरी तरह पराजित होकर बाबर अपने प्राणों की रक्षा के लिए अयोध्या में जलालशाह और कज्जल अब्बास से मिला। उनके आशीर्वाद में उसने संग्राम सिंह को हराया और फिर अयोध्या वापस आ गया। उसके ऊपर अपनी धाक जमाकर जलालशाह और कज्जल अब्बास ने जन्मभूमि विध्वंस उसके ऊपर एक मस्जिद बनवा देने का वचन ले लिया। बाबर के वजीर मीरबांकी खाँ ताशकन्दी ने मन्दिर को गिरवाया। मस्जिद बनवाना शुरू किया गया। इस बात को जानकर हिन्दू चुप नहीं बैठे। बात ही बात में श्री-राम मन्दिर विध्वंस किये जाने की खबर बिजली की

तरह फैल गयी। अनेकों हिन्दुओं ने युद्ध कर मन्दिर पर अपना अधिकार जमाया, अनेकों पराजित हुए। मन्दिर की रक्षा के लिए राजपूत राजा महताब सिंह, रणविजय सिंह, संग्राम सिंह ने मुसलमानों से टक्कर ली। देवीदीन नाम सूर्यवंशीय क्षत्री पुरोहित ने अकेले ही ७०० आत-ताई सैनिकों का वध करते हुये वीरगति पाई। कुल मिलाकर इसके लिये ७६ युद्ध हुये। अन्त में मुसलमानों को सफलता मिली। मस्जिद बनायी जाने लगी। कहते हैं कि जब मस्जिद बनने लगी तो जितनी दीवार दिन भर में तैयार होती थी वह शाम को अपने आप गिर पड़ती थी। फकीरों की सिद्धाई हवा खाने लगी। मीर-बांकी ने समाचार बाबर के पास लिखा। बाबर अयोध्या के विशिष्ट महात्माओं से यह राय माँगा कि मस्जिद किस प्रकार बने। शाह अपनी हट नहीं छोड़ते थे इस पर महात्माओं ने उत्तर दिया कि मस्जिद के नाम पर इसे हनुमान जी बनने नहीं देंगे, इसमें कुछ परिवर्तन करिये सीता पाक स्थान इसके ऊपर लिखिये। इसे मस्जिद का रूप न दीजिये तब यह बन सकती है। इस प्रकार बाबर ने मन्दिर-मस्जिद दोनों मिलाकर बनवाया। अकबर के समय में बीरबल और टोडरमल के सलाह से कोई हानि मन्दिर को नहीं पहुँचाई गयी। औरंगजेब ने मन्दिर के कुछ भाग विध्वंस करा दिये।

मन्दिर के लिए कुल ७६ युद्ध हुये जिनमें ४ बाबर के समय में, हुमायूँ के समय में १०, अकबर के समय में २०, अंग्रेजों के समय में ३०, नवाब शहादत अली के

समय में ५, नासिरुद्दीन के समय में २, वाजिद अली के समय में २, अंग्रेजों के समय में २ युद्ध हुये।

मन्दिर को तोड़कर मस्जिद का रूप देने में हिन्दू-चिन्ह शेष रह गये, जिन्हें दीवारों के आप से आप गिर जाने के कारण बाबर को जबरदस्ती रखना पड़ा था। मीनार का न होना पक्के परिक्रमा का रहना। जल के लिए किसी कूप का न होना, सदर दरवाजे में चन्दन की एक शिल्ली लगाकर मन्दिर के नियम का पालन किया जाना। झरोखों का रहना तथा निचले द्वार पर अरबी में 'अल्लाह' के बाद मुड़िया पर्सियन भाषा में 'सीता पाक-शाला' होना। इससे पता चलता है कि यह मन्दिर है। इसे हम बनाकर रहेंगे। "सौगन्ध राम की खाते हैं मन्दिर वहीं बनायेंगे।"

बाबर की बाबरी क्रिया का प्रतिशोध लेके।

संस्कृति की लीक का प्रतीक ठीक जोड़ेंगे ॥ १ ॥

कर्महीन, कायर, कलंकी, क्रूर, कर्मियों के।

कूटिल, कुनीत के दुरूह दुर्ग तोड़ेंगे ॥ २ ॥

"शारदा" समस्त विश्व में ही भव्य भारत की-

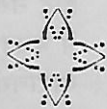
रम्य राजधानी के पानी को निचोड़ेंगे ॥ ३ ॥

प्राणों के मूल्य को चुकायेंगे सहर्ष किन्तु

राम की पवित्र-जन्मभूमि को न छोड़ेंगे ॥ ४ ॥

एक बार हम फिर कसम खाते हैं कि मन्दिर वहीं बनायेंगे हम मन्दिर वहीं बनायेंगे।

॥ जय सिया राम चन्द्र की ॥



# एक युग का अन्त

अश्विनी कुमार  
द्वादश 'क'

[भारत वसुन्धरा पर समय-समय पर अनेक ऋषि महर्षि, मनीषी अवतीर्ण होते रहे हैं। जो लोक-कल्याण का अपना दायित्व पूर्ण करके संसार से विदा हो जाते हैं।] —सम्पादक

हिन्दुस्थान प्राचीन काल से ही अपनी अध्यात्मिक चेतना के कारण विश्व के उन प्रमुख देशों में गिना जाता है, जहाँ सभ्यता एवं संस्कृति का प्रथम सूर्य उदित हुआ था। भारतवर्ष के जगद्गुरु के पदे पर प्रतिष्ठित कराने का श्रेय निश्चय ही हमारे उन ऋषि मनीषियों को जाता है, जिन्होंने अपने अध्यात्मिक ज्ञान से, अपनी साधना से, त्याग से, तपस्या से भारत की इस शस्य-स्यामल भूमि पर अपने ज्ञान का जो ज्योतिमान दीपक हम भारतीयों के हृदय में प्रज्वलित किया था वह आज भी हमें औरों से श्रेष्ठ बनाये हुए है।

भारतीय हिन्दू समाज को गौरवान्वित करते हुए यहाँ अनेक ऋषि-मनीषियों ने जन्म लिया, कहा भी गया है—

गायन्ति देवाः किल गीतकानि,  
धन्यास्तु ये भारत भूमि भागे ।  
स्वर्गापवर्गस्य च हेतु भूते,  
भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात् ॥

आज के समाज में जो प्रमुख मनीषीजन जीवित थे, उनमें से परमपूज्य देवराहा बाबा, श्री राम शर्मा (आचार्य), एवं प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी अग्रगण्य थे।

यह एक संयोग ही है कि तीनों महापुरुषों का निधन

सन् १९९० में ही हुआ अथवा इस वर्ष देश में 'अध्यात्मिक शक्ति' का क्षय बहुत हुआ है।

या यों कह सकते हैं कि एक युग का अन्त हो गया। आइए, इन महान मनीषियों के व्यक्तित्व पर एक दृष्टि डाले।

## परमपूज्य देवराहा बाबा

सभी वर्गों द्वारा पूजित व अभिनन्दित देवराहा बाबा हिन्दू संस्कृति एवं अध्यात्म के मूर्तिमान स्वरूप थे। 'देवरिया' जिले से सम्बद्ध होने के कारण इनका नाम 'देवराहा बाबा पड़ा। बाबा की आयु के बारे में कोई निश्चित प्रमाण प्राप्त नहीं है।

देवरिया के लोगों में यह किंवदन्ती प्रचलित है कि बाबा देवरिया के एक यादव परिवार से संबद्ध थे। प्रारम्भिक जीवन काल में ये ठीक नहीं थे, परन्तु बाद में इन्हें संसार से विरक्ति हुई और 'देवराहा बाबा' के नाम से मशहूर हुए। वे प्रातः मचान पर रहा करते थे। प्रयाग वाराणसी एवं देवरिया में वे प्रतिवर्ष दर्शन देते थे।

बाबा १९ जून को अपराह्न "वृन्दावन आश्रम" में दिवंगत हो गये, उनके निधन का समाचार सुनते ही लोग उनके अंतिम दर्शनों के लिए वृन्दावन पहुँचने लगे।

‘देवराहा बाबा’ प्राचीन परम्परा के तेजस्वी, तपस्वी एवं अध्यात्मिक विभूति थे। इधर कई दिनों से वे यमुना तट पर बने मंचान पर रह रहे थे।

विश्व हिन्दू परिषद् को उनका आशीर्वाद प्राप्त था और उन्होंने लोगों को आश्वसन दिया था कि राम-मंदिर बनके रहेगा। पूज्य बाबा के न रहने से हिन्दू समाज की अपूरणीय क्षति हुई है। वे हिन्दू धर्म, संस्कृति तथा हिन्दू अध्यात्मिकता के जीवन्त रूप थे।

उन्हें कोटिशः प्रणाम।

### श्री श्रीराम शर्मा ‘आचार्य’

सन् १९०८ में जन्में श्रीराम शर्मा ‘आचार्य’ का नाम हिन्दू समाज के लिए चिरपरिचित है।

आचार्य जी व्यक्ति न होकर संस्था थे। उन्होंने लोगों को अभिनव जीवन पद्धति अपनाने की सीख दी।

वे ‘युग निर्माण योजना’ और ‘गायत्री परिवार’ के संस्थापक थे।

आचार्य जी ने इन संस्थाओं के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन लाने का सतत प्रयास किया, अनेक प्रेरणाप्रद पुस्तकों एवं पत्रिकाओं का आपने संपादन किया। ‘गायत्री मंत्र’ को जन-जन तक पहुँचाने का सुसंकल्प लिया और प्रायः पूर्ण भी किया।

उनका निधन विगत दो जून को हुआ, इस समय उनकी आयु ८२ वर्ष की थी। यह दैवी संयोग ही कहा जायेगा कि आचार्य जी का देहावसान उस दिन हुआ, जिस दिन ‘गायत्री जयन्ती’ एवं ‘गंगा दशहरा’ का पावन पर्व था।

आज श्री आचार्य हमारे मध्य नहीं हैं, परन्तु उनके श्रीमुख से प्रस्फुटित ‘सुवचन’ आज भी मानव जीवन को एक नई राह पर चलने का संकल्प कराते हैं, हमें आदर्श बनने की प्रेरणा देते हैं।

ऐसे मनीषी को शत-शत नमन।

### श्री प्रभुदत्त ‘ब्रह्मचारी’

श्री प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी का नाम भारतीय समाज अत्यन्त आदर के साथ लेता है, श्री ब्रह्मचारी को उनके गो प्रेम के कारण अत्यधिक पूजा जाता है, इसके अतिरिक्त वे उच्च कोटि के मनीषी भी थे। झूंसी (इलाहाबाद) में अवस्थित उनका आश्रम हिन्दू जनता के लिए श्रद्धा का केन्द्र है। इलाहाबाद उनकी कर्मभूमि रही है।

“हे ऋष्य, गोविंद हरे मुरारे  
हे नाथ नारायण वासुदेवाय।”

उनका सर्वप्रिय भजन था जिसे वे बड़े मनोयोग से दुह-राया करते थे।

इसी वर्ष आपका भी देहावसान हो गया, और भारतीय साधु-समाज को महान क्षति की प्राप्त हुई, जिसकी पूर्ति होना आज के परिवेश को देखते हुए असम्भव सा प्रतीत होता है।

प्राकृतिक एवं दैवी आपदाओं के साये में बीते इस वर्ष में इन महान संतों के देहावसान से हिन्दू-समाज को आघात लगा है, परन्तु मनीषीजन तो अमर होते हैं, उनके ज्ञान, त्याग एवं तपस्या का जो प्रभाव भारतीय समाज पर पड़ा है वह उसे शाश्वत याद रहेगा।

इन महापुरुषों को मेरा शत-शत नमन।



# गीता : ज्ञान का सागर

बृजेन्द्र सिंह यादव

अष्टम 'क'

[सारे विश्व को ज्ञान का संदेश देने वाली गीता के कतिपय अंश लेखक छात्र की कलम से प्रस्तुत है।]

—सम्पादक

गीता, योग का विज्ञान है। मनोविज्ञान का परम शास्त्र है। निष्ठा की संहिता है। अध्यात्म का सार है। कर्तव्य-कर्म की प्रेरणा है। त्याग का संदेश है। कर्मयोग का महामंत्र है। भक्ति का बीज है। निष्कर्म कर्म की साधना व समस्याओं का समाधान है। ज्ञान को सागर है।

गीता में सम्पूर्ण वेदों का सार संग्रहित किया गया है गीता का आशय इतना गम्भीर है कि आजीवन अविरल अभ्यास करते रहने पर भी उसका अन्तसमझ में नहीं आता।

“मल निर्मोचनं पुसां जलस्नानं दिने दिने ।  
सकृद्गीताम्भसि स्नानं संसार मल नाशनम् ॥”

जल में प्रतिदिन किया हुआ स्नान मनुष्यों के केवल शारीरिक मल का नाश करता है परन्तु गीता ज्ञान रूपी जल में एक बार भी किया हुआ स्नान संसार मल को नष्ट करता है।

“सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपाल-नन्दनः ।

पार्थो वत्सः सुधीर्शोकता दुग्धं गीतामृतं महत् ॥

सम्पूर्ण उपनिषद् गौ के समान हैं गोपाल नन्दन श्री कृष्ण दुहने वाले हैं तथा अर्जुन बछड़ा है। महान गीता-मृत ही उसकी गौ का दुग्ध है और शुद्ध बुद्धि वाला श्रेष्ठ मानव ही उसका भोक्ता है।

वास्तव में भगवत्-प्राप्ति किये बिना मनुष्य का जीवन मरण का यही पर्याय है। त्याग ही भगवत् प्राप्ति का मुख्य साधन है। त्याग के लक्षण निम्न हैं—

१- निषिद्ध कर्मों का त्याग—चोरी, झूठ, कपट, छल और हिंसा को मन वाणी व शरीर से कभी न करना। यह सर्वोच्च त्याग है।

२- स्वार्थ की भावना का त्याग—किसी से अपना स्वार्थ सिद्ध करने की मन में इच्छा न रखना, स्वार्थ के लिए ‘दूसरों की परवाह न करने’ का भाव न रखना आदि-आदि बातें मनुष्य को पशुता के मार्ग से हटाकर प्रकाश का मार्ग प्रदान करती हैं।

३- फल की इच्छा का त्याग—तन, मन और वाणी से कर्म को गतिमान रखना। इसके लिए मन को भी नियंत्रित करना आवश्यक है। फल की कामना तो मन में आनी ही नहीं चाहिये क्योंकि जीवन एक यात्रा पथ है। शरीर रथ है। आत्मा रथी है, इन्द्रियाँ इस रथ से जाते हुये घोड़े हैं और बुद्धि लगाम है जो इन घोड़ों को नियंत्रित रखने के लिए रथी के हाथ में है। यदि हम कर्तव्य को त्याग कर फल की इच्छा करेंगे तो यह घोड़े अनियंत्रित होकर हमें विपथ कर देंगे। अतः हमें गीता में संकलित निम्न दोहे का स्मरण करना चाहिये।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।

माकर्माफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्व कर्मणि ॥

# चरित्र-निर्माण ही राष्ट्र-निर्माण है

विकास अग्रवाल  
पृष्ठ 'क'

[व्यक्ति अमूर्त राष्ट्र की मूर्त इकाई है। अस्तु-राष्ट्र निर्माण व्यक्ति-निर्माण अर्थात् व्यक्ति के चरित्र-निर्माण से ही सम्भव है। व्यष्टि से समष्टि तक पहुँचने की यह कल्पना लेख के चिन्तन का विषय है।] —सम्पादक

**"If wealth is lost, nothing is lost;  
If health is lost, something is lost;  
And if character is lost, everything is lost."**

कोई भी राष्ट्र बड़ी-बड़ी इमारतों, कल-कारखानों अथवा चौड़ी सड़कों से प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं करता बल्कि सच्चरित्र नागरिक ही उस राष्ट्र की पहिचान होते हैं। संभवतः इसी के कारण हमारे ऋषि-मनीषी बालकों की शिक्षा में चरित्र निर्माण पर ही विशेष बल देते थे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि आज विश्व में भौतिक उन्नति अपनी चरम-सीमा तक पहुँच चुकी है परन्तु चरित्र में जो हीनता दृष्टिगत होती यह निश्चय ही चिन्ता-जनक है। ऐसे कठिन समय में शिक्षा-संस्थाएँ ही वे मन्दिर हैं जहाँ बालक का निर्माण होता है और ये बालक ही आगे चलकर राष्ट्र के निर्माण में अहम् भूमिका निभाते हैं।

भारतवर्ष को संसार में विश्व-गुरु माना जाता था। हमारे वेद-ग्रन्थों ने ही संसार को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित किया। वेदों में सम्पूर्ण वसुधा को कुटुम्ब मान कर विश्व-कल्याण की बात कही है—

“सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयः।  
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भागववेत्।”

परन्तु आज इस गौतम व गाँधी के देश में बालकों में आत्मसंयम, इन्द्रिय-विग्रह तथा नैतिक गुणों के स्थान पर भ्रष्ट आचरण का विकास हो रहा है। इसका कारण संभवतः यह है कि हमने भी व्यक्ति-निर्माण के स्थान पर भौतिक उन्नति को अधिक महत्व देना प्रारम्भ कर दिया है। हम भूल गये हैं कि भौतिक प्रगति की भव्य इमारत अध्यात्मिकता की नींव पर ही खड़ी हो सकती है। अतः वर्तमान समय में हमें पुनः भारत को विश्व-गुरु के रूप में प्रतिष्ठित करना है जो कि तभी सम्भव है जब राष्ट्र का निर्माण करने वाले व्यक्तियों की शिक्षा ऐसी हो कि चरित्रवान नागरिक तैयार हो सकें भले ही भौतिक प्रगति में कुछ व्यवधान आ जाए—

निर्माणों के पावन युग में हम चरित्र-निर्माण न भूलें।  
स्वार्थ-साधना की आंधी में वसुधा का कल्याण न भूलें ॥

# भाषा-विवाद : एक साहित्यिक दृष्टिकोण

पंकज श्रीवास्तव

द्वादश 'ख'

[आज का भाषा-विवाद राजनीति की देन है। वोट वाली राजनीति ने भाषा का विवाद खड़ा किया है। उर्दू का द्वितीय राज-भाषा का दर्जा देने में भी वही तुष्टीकरण की नीति अपनाई गई जिसके तहत अपने वोट निश्चित करने की चाल रही है : 'द्वितीय' शब्द इसका परिचायक है। साहित्यकार भाषा-विवाद में नहीं पड़ता। कबीर की पंचमेल भाषा साहित्यकार की इसी उदारता का प्रमाण है।]

—सम्पादक

प्रायः यह देखने में आता है कि विश्व में किसी भी देश की अपनी एक विशेष संस्कृति, एक विशेष धर्म और एक विशेष भाषा होती है। जगत् गुरु ! हमारा प्यारा भारतवर्ष भी अनेक धर्मों को अपनी सुखद छत्र-छाया में पल्लवित व पुष्पित कर रहा है। चूँकि हमारे देश में बहुत से संप्रदायों को मानने वाले लोग रहते हैं, अतः यहाँ पर अनेकों भाषाओं का होना स्वाभाविक ही है। अनेक भाषाओं- वेश-भूषाओं, रहन-सहन, विचारों तथा मान्यताओं से समन्वित विविध रंगों से परिपूरित हमारा यह इन्द्र धनुषी भारत सम्पूर्ण विश्व में सबसे अलग दिखाई देता है। फिर भी यहाँ एकता है, मैत्री-बन्धुत्व की उदात्त भावना है, प्रबल देश-प्रेम है, उत्कट राष्ट्रीय भावना है जो कि इस विविधता भरे देश को एकता के सूत्र में बाँधे हैं। यहाँ विविधता के उदाहरण पग-पग पर देखे जा सकते हैं। इसी परिपेक्ष्य में यदि हम अपने देश की भाषा की ओर दृष्टि डालें तो चरितार्थ हो उठती है निम्नांकित उक्ति—

**'कोस-कोस पर बदले पानी चार कोस पर बानी।'**

उपयुक्त पंक्तियाँ भारत के विषय में अक्षरशः सत्य हैं। इतनी विषमताओं के मध्य कुछ विवाद उसी

प्रकार जन्म लेते हैं; जिस प्रकार इन्द्रधनुषी आकाश में उमड़ते मेघों के मध्य दामिनियों का कड़कना। भारत में उत्पन्न एक वर्तमान भविष्य समस्या है—भाषा। और यह समस्या तमिल, तेलगू, मलयालम, कन्नड़, बंगाली, गुजराती, मराठी, उर्दू व हिन्दी के मध्य अतितीव्र गति से पनपी है।

मैं वर्तमान के समय में उत्पन्न 'हिन्दी-उर्दू विवाद' के मसले की तरफ आपका ध्यान आकर्षित कराना चाहता हूँ। हमारे देश का एक बहुतांश हिन्दुओं के साथ मुस्लिम संप्रदाय को भी अपनी क्रीड में समेटे है। यद्यपि उनके पूर्वज एक ही हैं, फिर भी उनके विश्वास तथा कुछ मान्यताएँ भिन्न होने के कारण राष्ट्र-विरोधी तत्व इनमें तरह-तरह के कूचिचार पनपने में सफल हो जाते हैं।

मैं आपके सामने कुछ उदाहरण प्रस्तुत करके यह सिद्ध करना चाहता हूँ कि सभी भाषाएँ व संस्कृतियाँ पूज्य हैं। केवल उसको स्वार्थ में अंधे व्यक्ति ही अपने कुत्सित विचारों से मैला करते हैं और इंसान को इंसान से लड़ा कर स्वार्थ-सिद्ध को ही सोचते हैं। प्रस्तुत उद्धरणों से आपको यह पता लगेगा कि प्रायः सभी साहित्यों में एक

ही प्रकार की बातें कही गयीं हैं; केवल शब्द रूप व शैलियाँ भले ही बदल गयी हों। आज आवश्यकता है कि हम अपने विचारों को सुधारें। किसी कवि ने कहा है—

तू कुराँ की आयतें पढ़, मैं तेरी गीता पढ़ूँ ।

जो कमी अब तक रही हो, उस कमी की बात कर ॥

—वाहिद

राम, अल्लाह, गॉड, नानक यह चंद नामों की सूची हैं, जिनकी हम सब संतानें हैं और यह सब हमारी एक आधारभूत अंतः शक्ति है। केवल हिन्दू उक्त परमसत्ता को राम के नाम से पुकारता है, तो मुसल्माँ अल्लाह के नाम से; किन्तु मंजिल सभी की एक है—उस परमशक्ति की प्राप्ति। शायरों, कवियों ने उस शक्ति को अनन्त, असीम, अपरिमित व परम शक्तिमान बतलाया है। एक शायर कहते हैं—

मंदिरों में मस्जिदों में कि गिरजों में,

खोजने हम कहाँ—कहाँ जायें ?

वे तो फँसे हुये जहाँ में हैं,

हम कहाँ तक निगाह फँलायें ?

वही संत तुलसीदास भी उस अद्भुत शक्ति को राम के साकार रूप में देखते हैं और कह उठते हैं—

“हरि अनंत हरि कथा अनंता ।”

कबीरदास भी यह कहते हैं कि वह शक्ति हम सभी के अन्तःकरण में समाहित है और हम उसे प्राप्त करने के लिए क्यों मंदिरों व मस्जिदों जैसे उपधान खोजते रहते हैं। जबकि—

“कस्तूरी कुण्डलि बसं, मृग ढूँं वन माँहि ।

ऐसे घट-घट राम हैं, दुनियाँ देखे नाहि ॥”

वहीं ग़ालिब खुदा की बुलंदी को इस प्रकार स्वीकारते हैं :—

“हर चंद हर एक शं में तू है ।

पर तुझ सी कोई शं नहीं है ॥”

अंग्रेजी भाषा के सुप्रसिद्ध कवि John Milton भी लिखते हैं—

**God both not need-  
either mans work or his own gifts.**

परन्तु वहाँ पर साहित्यकार की भावाज और बुलंद हो उठती है जहाँ मन्दिर-मस्जिद का झगड़ा शुरू किया जाता है। वास्तव में ये तो एक पवित्र-स्थल है जहाँ उस परमसत्ता का निवास माना जाता है। ये अलग बात है कि इसे हिन्दू अपना ‘पूजा-गृह’ समझें या मुसलमान अपना ‘इबादतगाह’। किन्तु उसमें हम उपासना करते हैं, इबादत करते हैं; अतः उसके नाम पर रक्त-पात हो; इससे तो बुरी कोई बात हो ही नहीं सकती। कविवर कबीर कहते हैं—

“काँकर पाथर जोरि के मस्जिद लई बनाय ।

ता चढ़ि सुल्ता बाँग दें, क्या बहरा हुआ खुदाय ?”

उसी प्रकार आधुनिक रूबाइयों के सिद्धहस्त कवि श्री बच्चन जी भी इस रक्त-पात की भर्त्सना करते हैं और कहते हैं—

“मुसल्माँ ओ हिन्दू हैं दो, एक मगर उनका प्याला

एक मगर उनका मंदिरालय, एक मगर उनकी हाला

दोनों रहते एक, न जब तक मन्दिर-मस्जिद में जाते,

भेद कराते मन्दिर-मस्जिद, मेल कराती मधुशाला ।”

अब उसी प्रकार मुसलमान कवियों के विचार भी आदरणीय हैं :—

आज तक देरो हरम में तैग ही चलती रही

लाख हम रिदों ने चाहा शीशा-ओ-सागर चले ।

—‘शौक’ असरी रासपुरी

अजां दी काँबा में नाकूस देर में फूँका,

कहाँ—कहाँ तिरा आशिक तुझे पुकार आया ।”

—बर्क लखनवी

जनाब साहिर लुधियानवी बड़े उदास मन से कहते हैं कि वो ही अकेले खुदा के बंदे सही मायने में रह गये हैं:—

कोई हरम से, देर से मनसूब है कोई

इक रह गया हूं मैं कि तुम्हारा कहें जिसे ।

और एक कवि 'मृदुल तिवारी' भी बड़े द्रवित मन से कह उठते हैं कि—

“चाहता कोई नहीं था पर हमारे रहनुमा,  
मंदिरों और मस्जिदों में हमको वाँटते रहे।”

इस प्रकार हम देखते हैं कि जिसके लिये हम लड़ रहे हैं, वह कितना पवित्र, शांत व निर्मल है। इसी प्रकार हमें दोनों साहित्यों में देश-प्रेम की उदात्त भावना के भी दर्शन होते हैं। वास्तव में देश-प्रेम सभी के हृदय से बहने वाली यह भावना है जो कि इन्सान को अपनी सरजमीं से प्यार करना सिखाती है। देश के लिए प्रत्येक व्यक्ति अपने प्राणों का उत्सर्ग करने के लिए बेहिचक तैयार हो जाता है। यदि देश पर कोई संकट आ जाये तो प्रत्येक व्यक्ति प्राण-प्राण से उसकी रक्षा के लिये तत्पर हो जाता है। तब वह भूल जाता है कि उसका मजहब क्या है? उसका धर्म क्या है? उसका एक ही इष्ट रहता है—देश। तब सिर्फ एक ही बात की प्राथमिकता होती है—देश या मुल्क के प्रति प्रेम। जयशंकर प्रसाद जी की भावना देखिए—

“जियें तो सदा उसी के लिये यही अभिमान रहे  
यह हर्ष।

निछावर कर दें हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारत  
वर्ष ॥”

‘जमीर खैरावादी’ भी कहते हैं—

जब भी दामने—वतन पर कोई आँच आती है।

अपने ही खून में हम नहा लेते हैं ॥

वहीं सुभद्रा कुमारी चौहान लिखती हैं—

बढ़ जाता है मान वीर का रण में बलि होने से,

मूल्यवती होती सोने की भस्म यथा सोने से।

अशफाक उल्ला खाँ भी अन्तिम इच्छा प्रकट करते हुए कहते हैं—

कुछ आरजू नहीं है कुछ आरजू तो ये है।

रख दे कोई जरा सी खाके-वतन कफ़न में ॥

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि बालकृष्ण शर्मा ‘नवीन’ जी कहते हैं—

कोटि—कोटि कण्ठों से निकली आज यही स्वर धारा है।

हिन्दुस्थान हमारा है, यह भारतवर्ष हमारा है ॥

और तो और डा० इकबाल को तो उनका भारत सारे जहाँ से अच्छा लगता है—

“सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा।

हम बुलबुले हैं इसका ये गुलसिताँ हमारा ॥”

अंत में वतन पर मरने वाले शहीदों का हृथ क्या होगा; निम्नलिखित पंक्तियों में देखिये जिसका एक-एक शब्द अतुलनीय है—

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर वरस मेले।

वतन पर मरने वालों का यही आखिरी निशाँ होगा ॥

जैसा कि मैंने पहले ही कहा था कि कवियों की रचनायें एक दर्पण हैं जिसमें समाज की सच्ची तस्वीर उभरती है और चूँकि दर्पण कभी झूठ नहीं बोलता। अतः इन कवियों व शायरों के बयान भी सच्चे हैं। इसमें दो मत नहीं हो सकते। वर्तमान समाज में ‘नेता’ शब्द बच्चे-बच्चे की जबान पर है। स्वार्थ, मतलब परस्ती, पदलोलुपता, धन का लोभ, असत्य को यदि मिलाकर एक मानव रूप दे दें तो वर्तमान समाज का नेता खड़ा हो जाता है। रामधारीसिंह ‘दिनकर’ जी कह उठते हैं—  
नेता ! नेता ! नेता !

क्या चाहिये तुझे रे मूरख !

सखा ! बन्धु ! सहचर ! अनुरागी !

या जो तुझको नचा-नचा मारे वह हृदय विजेता ?  
नेता ! नेता ! नेता !

वहीं आज के नौजवान शायर मंजर भोपाली कहते हैं—

नेताओं को सीधा कभी चलते नहीं देखा।

फितरत को सपोलों की बदलते नहीं देखा ॥

यह है आज का रोगी समाज ! जहाँ भूख सामा—  
जिक अन्याय को देखते हुये श्री ओम शंकर जी त्रिपाठी कहते हैं—

सत्य की बल्ली बने कैसे सहारा, न्याय की सब रेत

जल में घुल गयी है,

यह अब्जोली नाव कैसे तन सँभाले, नीति की चप्पू  
भँदर से मिल गयी है।

बेरोजगारी, गरीबी से त्रस्त पद-दलित जनता है जिसको खाने के लिये दो वक्त की रोटी, पहनने को वस्त्र व रहने को एक छत भी भली प्रकार नसीब नहीं है। फिर भी वर्तमान राजनेता ऊँचे महलों में बैठ कर झोपड़ी की गन्दगी दूर करने की बात करते हैं तो दो बूँद अश्रुओं के साथ हँसी आ जाती है। आज हम भारत को विक-सित देशों की श्रेणी में लाने की बात करते हैं तो हमें पहले समाज को भर पेट शारीरिक व मानसिक भोजन देना होगा। पर यहाँ क्या है यह 'दिनकर जी' के शब्दों में देखिये—

“श्वानों को मिलता दूध वस्त्र, बच्चे भूखे अकुलाते हैं।  
माँ की छाती से चिपक ठिठुर जाड़े की रात बिताते हैं ॥”

नवाज देवबन्दी की निम्नलिखित पंक्तियाँ पढ़ कर तो हृदय द्रवित हो उठता है—

भूखे बच्चे की तसल्ली के लिए,  
माँ ने फिर पानी पकाया देर तक।

नीरज जी भी यहाँ की त्रासदी देखकर स्वर्ग ठुकरा देते हैं—

कैसे चल दूँ अभी कुछ और यहाँ मौसम है,  
होने वाली है सुबह पर न स्याही कम है,  
भूखा, बेकारी, गरीबी की घनी छाया में,  
हर जुब्रां बंद है, हर एक नजर पुरनम है,  
तन का कुछ ताप घटे, मन का कुछ पाप घटे,  
दुःखी इंसान के आँसू में नहा लूँ तो चलूँ।

नवाज देवबन्दी गरीबी को लानत मानते हुए कहते हैं—

ये गरीबी भी कैसी लानत है।  
भाई भी काम तक नहीं आता ॥

एक कवि भी इस भूख की बेहाली को सबसे बड़ी त्रासदी मानते हैं—

“बाप बेटा बेचता है,  
भूख से बेहाल होकर, धर्म धीरज प्राण खोकर  
हो रही अनरीति बराबर राष्ट्र सारा देखाता है ॥”  
वहीं एक कवि तो दूध से भूखे बच्चे को देखकर स्वर्ग

लूटने को तैयार हो जाते हैं—

हटो व्योम के मेघ पंथ से स्वर्ग लूटने हम आते हैं,  
दूध, दूध ओ वत्स, तुम्हारा दूध खोजने हम जाते हैं।

इसी प्रकार सांसारिकता में बँधकर, सांसारिक चका चौध में स्वयं को भूलकर यह मनुष्य कितना स्वार्थी हो गया है ? आज मनुष्य में से ईमानदारी का गुण जाता रहा है, वह बेहद मतलबपरस्त, पाखण्डी, धन लोलुप, पदलोभी हो गया है। आज मानवता का निरन्तर हनन हो रहा है। जनाब 'शकील' साहब आज के इंसान के लिये कहते हैं—

“देखिये क्या से क्या हो गया आदमी।

बेवफा हो गया बावफा आदमी ॥

राम और रहमान के लफ्ज के फर्क से।

हो गया आदमी से जुदा आदमी ॥”

चकाचक बनारसी जी का कहना है—

“इंसान मर गया है, इंसानियत के साथ।

यह देश जी रहा है, हैवानियत के साथ ॥”

नवाज देवबन्दी भी भाई-भाई में होने वाली लड़ाई से क्षुब्ध होकर कहते हैं कि—

“भाई से भाई के कुछ तकाज़े भी हैं।

सेहन के बीच दीवार अपनी जगह ॥

मुहत्तर ये बता सरबकफ़ कौन था।

जीत अपनी जगह, हार अपनी जगह ॥”

वहीं 'दिनकर' जी तो क्रोध से तमतमा उठते हैं। उनकी दृष्टि में मनुष्य मानवता का अपमान है। आज मनुष्य अपने कृतित्व से घृणा का पात्र बनता जा रहा है। उसका स्वाभिमान, आत्म-सम्मान, ओज, प्रतिष्ठा, दृढ़ता सब धूमिल होते जा रहे हैं। वे कहते हैं कि—

“यह मनुज जो ज्ञान का आगार,

यह मनुज जो सृष्टि का श्रृंगार,

नाम सुन भूलो नहीं सोचो विचारो कृत्य,

यह मनुज संहार सेवी वासना का मृत्य,

छद्म इसकी कल्पना, पाखण्ड इसका ज्ञान,

यह मनुष्य, मनुष्यता का घोरतम अपमान ॥”

उपर्युक्त पंक्तियों के बाद तो कृष्ण बच्चा ही नहीं, लिखने को। ऐसा नहीं है कि हिन्दी-उर्दू साहित्य में केवल वाह्य जगत् के विषयों में ही समानता नहीं है वरन् अध्यात्म व दर्शन में भी समानता है। जीवन के भिन्न-भिन्न रूपों को कवियों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से कहा है। जीवन की परिभाषा देते हुये कविवर प्रसाद कहते हैं कि-

“जीवन की लम्बी यात्रा में खोये भी हैं मिल जाते,  
जीवन है तो कभी मिलन है, कट जाती दुख की रातें।”

वहीं एक शायर फरमाते हैं-

“जिन्दगी एक रागिनी है गुन-गुनाते जाइये।  
मुश्किलें हों लाख फिर भी मुस्कराते जाइये ॥”

नवाज देवबन्दी भी जिन्दगी को हँसते-खेलते जीना चाहते हैं—

“न तो रोने में है न रलाने में है।

जिन्दगी का मजा मुस्कराने में है ॥”

जीवन की कहानी बताते हुये कविवर नीरज जी कहते हैं—

“जिन्दगी और मौत की ‘नीरज’ कहानी है यही।  
फुर् हो जायेगी चिड़िया आशियाँ रह जायेगा ॥”

‘चकबस्त’ ने तो दो पंक्तियों में पूरा अध्यात्म निचोड़ कर रख दिया। उनका कहना है कि जीवन

तत्वों के संकलन का आविर्भाव है व मौत—उन्हीं तत्वों का बिखर जाना। देखिये—

“जिन्दगी क्या है अनासिर का जुहुरे तरतीब।

मौत क्या है इन्हीं अजजा का परीशां होना ॥”

अतः हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि दोनों हिन्दी व उर्दू साहित्य में कितनी समानता पायी जाती है; फिर भी लोग इन्हें विवादित मसला बनाकर लड़ते हैं। हिन्दी को हमारी राष्ट्र-भाषा का अधिकार प्राप्त है, अतः वह सब रूपों में आदरणीय है। हमें उसका सम्मान करना चाहिये और उसकी अस्मिता की सब प्रकार से रक्षा करनी चाहिये क्योंकि—

“निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।”

किन्तु साथ ही साथ सभी अन्य भाषाओं व साहित्यों के प्रति भी उसी प्रकार का आदर भाव रखना चाहिये। भाषा व साहित्य, वो चाहे किसी भी धर्म का हो, जाति का हो, संप्रदाय का हो, देश का हो, सदैव पूजनीय होता है। और हमें इन्हीं आधारों पर परस्पर मिलकर रहना चाहिये। यही पाठ इस लेख का उद्देश्य है। जैसा कि उर्दू भाषा स्वयं कहती है—

“मैं उर्दू ज़बाँ हूँ, मैं उर्दू ज़बाँ हूँ।

हिन्दी मेरे दिल की धड़कन, मैं हिन्दी की जान ॥”

—हिना तंभूरी



## पं० दीनदयाल उपाध्याय

शैलेन्द्र कुमार  
षष्ठ 'ख'

[युग-पुरुष पं० दीनदयाल जी उन लोगों में से एक थे जो राष्ट्र-प्रेम और मानवता के प्रतीक माने जाते हैं। ऐसे लोग बार—बार याद किये जाने योग्य होते हैं।]

—सम्पादक

लाल बहादुर शास्त्री के पश्चात् सादा जीवन उच्च विचार का यथार्थ रूप किसी में देखने को मिलता है तो उसमें पं० दीनदयाल उपाध्याय का नाम सबसे पहले आता है। ऊपरी परिवेश और रहन-सहन की सादगी देखकर एक साधारण सा भारतीय कृषक लगने वाला उनका व्यक्तित्व भले ही असाधारण और आकर्षक न लग रहा हो, किन्तु लौकिक प्रतिभा से सम्पन्न एक महान प्रचारक एवं मनीषी के रूप में उनका प्रभा-मण्डल भारतीय जीवन-दर्शन एवं राजनीति को निरन्तर आलोकित करता रहा। पं० दीनदयाल का व्यक्तित्व भारत की उस माटी से विकसित हुआ था, जिसमें जगद् गुरु शंकराचार्य चाणक्य की अलौकिक प्रतिभाएँ एक साथ मूर्त हो उठी थीं।

२५ सितम्बर १९१६ को राजस्थान के ग्रामीणांचल में उनका जन्म हुआ। वे पढ़ने में कृणाग्र बुद्धि के थे तथा एकाग्र होकर अध्ययन करते थे। माता-पिता के देहान्त के बाद भी वह अध्ययन में आगे रहे। अजमेर बोर्ड राजस्थान में प्रथम श्रेणी तथा प्रथम स्थान पाया था। उस समय उन्होंने दो स्वर्ण-पदक पाए थे। बिड़ला कालेज, पिलानी से पं० दीनदयाल ने इन्टर की परीक्षा उत्तीर्ण की। इस परीक्षा में भी उन्हें प्रथम स्थान मिला तथा सभी विषयों में विशेष योग्यता प्राप्त की। अब तक इतने अंक किसी भी छात्र ने बिड़ला कालेज में नहीं प्राप्त किये थे। बिड़ला जी ने प्रसन्न होकर उन्हें अपने यहाँ नौकरी देने की बात कही। स्वाभिमानी दीनदयाल

इससे स्पष्ट इन्कार करते हुए बोले, “मुझे अभी पढ़ाई पूरी करनी है।” तत्पश्चात् उन्होंने गणित विषय में बी० ए० किया और पुनः प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए।

सन् १९३७ में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सम्पर्क में आएऔर एक स्वयं सेवक से प्रारम्भ करते हुए उसके सह प्रान्तीय प्रचारक भी बने। वे पूर्ण निष्ठा से संघ कार्य में जुट गये। इस बीच उन्होंने साम्यवाद और समाजवाद का गहन अध्ययन किया। अपनी भारतीय-संस्कृति के साथ अध्यात्मिक ज्ञान का भण्डार का भी जी भरकर पठन-पाठन किया। गम्भीर चिन्तन-मनन करने के पश्चात् उन्होंने पाया कि साम्यवाद और समाजवाद जैसी आधुनिक राजनीतिक व सामाजिक विचार धारायें अधूरी हैं। उन्होंने अध्यात्म पूरक भारतीय जीवन रश्मि से प्रेरित एकात्म मानववाद की घोषणा की।

‘एकात्म मानववाद’ के मूल स्वरूप की व्याख्या करते हुए उन्होंने स्पष्ट किया कि मानव केवल भौतिक आवश्यकताओं का पुंजमात्र नहीं अपितु एक अध्यात्मिक शक्ति का प्रतिनिधि है। उसमें भौतिकता तथा अध्यात्मिकता के तत्व सदा से ही मूल रूप में विद्यमान हैं। मनुष्य के शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के बीच पारस्परिक सामंजस्य से ही एकता उत्पन्न होती है।

सन् १९५२ में उपाध्याय जी को भारतीय जनसंघ का महासचिव नियुक्त किया गया। वे इस पद पर १९६७

तक रहे इस पद पर रह कर उन्होंने भारत के आम चुनगवों में भारतीय जनसंघ के उम्मीदवारों की चयन सूची से लेकर चुनाव-प्रचार प्रसार, संगठन के प्रति रात दिन कार्य कर अपनी विशिष्ट क्षमता का परिचय दिया। जनसंघ को भारत में एक सशक्त विपक्षी दल के रूप में उभारने में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की। किन्तु दुर्भाग्यवश ११ फरवरी १९६८ को अज्ञात व्यक्तियों द्वारा रेलयात्रा में उनकी हत्या कर दी गई।

‘जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी’ की भावना उनके रोम-२ में बसी थी। कोटि-२ भारतीय जन मानस में निवास करने वाली अखण्ड श्रद्धा का ज्योति

पुंज, अनन्त चेतना का एक प्रेरक बिन्दु अपने को राष्ट्र देवता के चरणों में अर्पित कर माँ भारती की कोख को धन्य कर गया।

पं० दीनदयाल की मृत्यु के समाचार से भारतीय जन साधारण के अलावा अनेक महान ‘राजनेताओं’ विद्वानों, विचारकों तथा धर्माचार्यों ने शोक संदेश भेजे।

उन सब के सन्देशों से स्पष्ट पता चलता है कि पं० दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय जन मानस में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया था और वे सच्चे भारतीय प्रतिनिधि के रूप में प्रतिष्ठित हो चुके थे। आज भी उनका दर्शन और चिन्तन हमारे लिये प्रेरणादायक है।

## ‘ॐ’ का महत्व

शैलेन्द्र गुप्त  
अष्टम (क)

(१) ॐ की ध्वनि को शास्त्रों में आदि शब्द माना गया है। इसे “नाद ब्रह्म” भी कहते हैं।

(२) ॐ के लिए दूसरा शब्द “प्रणव” है।

(३) ओऽम् शब्द अ, उ, म तीन अक्षरों से बना है। लिखते समय इस पर चन्द्र बिन्दु (°) लगाया जाता है।

(४) ॐ प्रतीकात्मक शब्द है, जो ब्रह्म एवं परमात्मा का वाचक कहा जाता है।

(५) कहा जाता है कि ब्रह्म द्वारा सृष्टि के आरम्भ में प्रकाश की हलचल के समय ॐ की ध्वनि निकली थी।

(६) परमाणुओं की हलचल से उत्पन्न कम्पन में ॐ की ध्वनि होती है।

(७) ॐ की ध्वनि नाड़ी केन्द्र एवं प्राण की तरंगों पर चमत्कारिक प्रभाव डालती है।

(८) मस्तिष्क में एल्का, बीटा तथा गामा तरंगे ॐ की ध्वनि से सक्रिय व संतुलित रहती हैं।

(९) ॐ की ध्वनि से नाड़ी की चेतना जाग्रत होती है तथा मस्तिष्क की शक्तियाँ बढ़ती हैं।

(१०) ॐ के विधिवत उच्चारण से हृदय रोग आदि अनेक व्याधियों का निवारण होता है।

(११) ॐ से मस्तिष्क शांत एवं एकाग्र होता है।

(१२) ॐ से शारीरिक, मानसिक और अध्यात्मिक शक्ति का विकास होता है।

अर्थात् ओऽम् की ध्वनि ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में समाहित है। जिसके द्वारा ही मानव का मन, हृदय शुद्ध व संयमी बनता है।

# गत वर्ष

अश्विनी कुमार

—द्वादश 'क'

[भावुक कवि ने बीते वर्ष को विदा करते हुये और आगतवर्ष का स्वागत करते हुये राष्ट्रोत्थान के साथ-साथ सम्पूर्ण मानव-जाति के कल्याण की कामना की है।]

—सम्पादकीय

बीत गया है वर्ष पुराना,  
कुछ रीता, कुछ अधिक सुहाना।  
स्वागत है कर्तव्य हमारा,  
अभिनन्दन ! नववर्ष तुम्हारा ॥

अपने अमृतपूरित घट से,  
इस भारत को जीवन देना।  
शापित, शंकित, मानवता को,  
कामधेनु सा तुम सुख देना ॥

जो पथ - भ्रष्ट हुए हैं मानव,  
ईश्वर से हो गये हैं दानव।  
ऐसे दलित जनों पर भी तुम,  
अपना स्नेह दिखा देना ॥  
भारत के निर्माण कार्य में,  
भागी होकर पुण्य कमायें।  
अपने इस कर्तव्य का उन्हें,  
तुम कुछ बोध करा देना ॥

राजनीति का पुण्य क्षेत्र,  
जिसका अतीत गौरव से पूरित  
उसको करते आज कलंकित,  
राजनीति के स्वार्थ तत्व कुछ,  
अपनी भगिनी विषघट को तुम,  
एक कार्य बतला देना,  
इन पदलोलुप स्वार्थ-तत्व को,  
विष का पान करा देना ॥

मृत्यु नहीं है, केवल, पार्थिव,  
है सामाजिक मृत्यु बड़ी ।  
यदि 'श्री हीन' पड़े रहना,  
तो उससे है ये मृत्यु भली ॥  
'श्री' से हीन नहीं संकेतित,  
करता है धन - धान्य कोष को,  
वह जो अपने बुरे कर्म से,  
भरता है कर्तव्य — कोष को ॥

वह कुपात्र, पर वह सुपात्र है,  
मानव की कृष्णा पाने का ।  
पर वह शायद योग्य नहीं है,  
सामाजिक महिमा - मंडन का ॥

वह नेतृत्व नहीं कर सकता,  
उसमें यह सामर्थ्य नहीं है ।  
नायक का अनुसरण कर सके,  
अंग भीड़ का वो बन सकता ॥

पर क्या उसको छोड़ बड़ें,  
वे जो सामर्थ्यवान दिखते हैं ।  
अपने साहस, शौर्य, पराक्रम से,  
जीवन — गाथा लिखते हैं ॥

त्याज्य नहीं कोई भी मानव,  
मानव है सामाजिक प्राणी,  
है समाज का एक अंग वह,  
यह भी है, एक सत्य कहानी ।

कोई अंग नहीं तज सकते,  
चाहे कितना भी हो जर्जर ।  
वे मानव जो कपित, शंकित,  
रहते 'पर' की दया पर निर्भर ॥  
उन्हें छोड़ आगे बढ़ना भी,  
उचित नहीं है किसी दृष्टि से ।  
आखिर वो अपने भाई हैं,  
आए हैं वो इसी सृष्टि से ॥

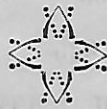
मानव तो मानव होता है,  
भूल अगर उससे हो जाये,  
क्षमा, धर्म भी मानव का है,  
क्षमा, प्रदर्शित यदि की जाये,

मानव, देवतुल्य हो जाता,  
मानव, ईश्वरीय हो जाता,  
उपमित, हो न पाये मानव,  
मानव ही ईश्वर हो जाता ॥

## आगत वर्ष

[चैत्र मास के प्रथम दिवस (वर्ष-प्रतिपदा) के उपलक्ष्य में ।]

आ गया नववर्ष है, चारों तरफ उल्लास छाया ।  
आज का यह अरुण, देखो ! इक नया संदेश लाया ॥  
दया, समता, शौर्य के अंकुर उगाओ ।  
देश के कुचले जनों को, आज अपने साथ लाओ ॥  
याद रखो ! दलित जन तेरे लिए भगवान से हैं,  
छोड़ कर इनको, नहीं आगे तुम्हारे पग बढ़ें ।  
हाथ छोड़ा, साथ छोड़ा, कुछ नहीं पा पाओगे,  
नाम तेरा पक से, इतिहास में अंकित रहेगा ।  
देख कर तुझको, तुम्हारी पीढ़ियाँ भी ये कहेंगी,  
पूर्वजों के बुरे कृत्यों का, हमें प्रतिफल मिला क्यों ?  
पाप करता और कोई शाप उनका हम सहें क्यों ?  
याद रखो ! पीढ़ियों तक रहोगे अभिशप्त ।  
कार्य तेरे बुरे, तुझको करेंगे अतितप्त ॥



# संकट की घड़ियाँ हैं

अखिल कुमार तिवारी

[ देश की सम-सामयिक स्थितियों से विक्षुब्ध बाल कवि के भाव कविता में फूट पड़े हैं। ]

—सम्पादक

धरती बेहाल आज  
अस्वर बेहाल है ।

आहत स्वदेश का,  
चरण भुजा भाल है ।

संकट की घड़ियाँ हैं—  
पीना विष प्याल है

भ्रष्टाचार देश का—  
बना द्वार-पाल है ।

सदाचार कुंठित है—  
बिक रहा ईमान है ।

पदलोलुप हर नेता,  
लगता शैतान है ।

चीख रही नैतिकता—  
लगती लाचार है ।

सोया सा यौवन है—  
लगता बीमार है ।

राजनीति कुर्सी का—  
करती व्यापार है ।

सूरज का पता नहीं,  
घना अंधकार है ।

# देश की संपर्क भाषा हिन्दी ही क्यों ?

विनय कुमार शुक्ल

दशम 'क'

[इस विषय पर एक स्थानीय प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। हमारे यहाँ के कुछ विद्यार्थियों से भी कुछ लेख माँगे गये थे। उन्हीं में से दशम वर्ग के विनय कुमार शुक्ल ने अपने इस लेख में कुछ तथ्य प्रस्तुत किये हैं।]

—सम्पादक

## प्रस्तावना

हिन्दी भारत की जनभाषा है। इसके प्राचीन नाम भाषा, देश-भाषा, हिन्दवी आदि हैं। चन्द्र-वरदायी ने इसे 'भाषा', विद्यापीठ ने देसिय भाषा, कबीर ने भाषा, जायसी ने हिन्दवी, तुलसी और केशव ने इसे भाषा कहा है। इससे यह आभास होता है कि हिन्दी भाषा का विस्तार क्षेत्र कभी सीमित नहीं रहा और हिन्दी कवियों को क्षेत्रीय या प्रादेशिक सीमाओं से आवद्ध होना कभी स्वीकार्य नहीं हुआ। उनका भाषा सम्बन्धी दृष्टिकोण सदा विशाल और व्यापक रहा है। यही नहीं हिन्दी कवियों ने आवश्यकता पड़ने पर संस्कृत प्राकृत, अपभ्रंश, अरबी, फारसी, तुर्की, पुर्तगाली, अंग्रेजी तथा आंचलिक शब्दों को भी ग्रहण करने में कभी संकोच नहीं किया। इससे उनकी उदारता तथा विशाल-हृदयता स्वतः प्रमाणित है।

## हिन्दी का महत्व

हिन्दी किसी विशेष प्रदेश की ही भाषा न होकर समस्त भारत की जनता के सम्पर्क की भाषा है। हिमाचल प्रदेश में पहाड़ी बोली जाती है, हरियाणा में हरियाणवी, पंजाब में पंजाबी, राजस्थान में राजस्थानी, उत्तर प्रदेश में ब्रज, अवधी, पूर्वी आदि। मध्य प्रदेश में बुन्देलखंडी, कन्नौजी आदि, बिहार में भोजपुरी, मागधी, जम्बू में डोगरी, कश्मीर में कश्मीरी, बंगाल में बंगाली,

केरल में मलयालम परन्तु इन प्रदेशों के लोग जब बाहर जाकर दूसरे प्रदेश के लोगों से संपर्क करते हैं, तब हिन्दी के द्वारा ही उनका गुजारा चलता है। इसी प्रकार बम्बई, कलकत्ता आदि महानगरों में विभिन्न भाषा-भाषियों के बीच, भले ही वे उत्तर भारत के हों या दक्षिण के, हिन्दी ही उनके व्यवहार की भाषा है। अंग्रेजी न जानने वालों का एक-दूसरे से व्यवहार के समय हिन्दी के बिना, चाहे वह टूटी-फूटी ही हो, काम नहीं चलता।

## हिन्दी के उत्थान में महापुरुषों का योगदान

अमीर ख़सरो, कबीर, नामदेव, नानक, मीराबाई, दयानन्द, तिलक और गाँधी—इन सबने हिन्दी को सारे देश की भाषा जानकर अपनाया।

बंगाल के केशवचन्द्र सेन ने स्वामी दयानन्द को परामर्श दिया था, “यदि आप अपने ज्ञान का प्रसार जनता में करना चाहते हैं तो हिन्दी में शास्त्रार्थ किया करिए।”

स्वामी दयानन्द कहा करते थे—“हिन्दी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।” वे स्वयं गुजराती थे। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश की रचना हिन्दी में की। उनकी संस्था आर्य समाज ने स्कूल, गुरुकुल कालेज खोलकर हिन्दी के प्रचार में योगदान दिया।

सन् १९१९ में अमृतसर कांग्रेस अधिवेशन में स्वा-  
गताध्यक्ष की हैसियत स पंजाब निवासी स्वामी श्रद्धानंद  
ने हिन्दी में जो भाषण दिया, वह कांग्रेस के मंच से हिन्दी  
का सर्वप्रथम भाषण था ।

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने १९१७ के बाद  
गाँधी जी की प्रेरणा से हिन्दी सीखी और उसके बाद वे  
सार्वजनिक सम्मेलनों में प्रायः हिन्दी में भाषण देते थे ।

महामना भदनमोहन मालवीय को उत्तर प्रदेश के  
न्यायालयों में हिन्दी का प्रवेश कराने का श्रेय प्राप्त  
हुआ । सन् १९१७ में काशी में हिन्दू विश्वविद्यालय  
की स्थापना हुई ।

गुरु रवीन्द्र नाथ टैगोर ने कहा था कि हिन्दी  
भारतीय भाषाओं की माला की सर्वोत्तम मणि है ।

काका कालेलकर ने महाराष्ट्रीय होते हुए भी हिन्दी  
के विकास में योगदान दिया ।

सन् १९१० में 'हिन्दी प्रचारक' मासिक पत्र श्रीराम  
गोपालाचारी ने हिन्दी के अध्ययन के लिए दक्षिण भारत  
के विद्यार्थियों के नाम एक अपील निकाली थी ।

गाँधी जी का आदेश पाकर १९१८ में देवदास गाँधी  
दक्षिण में हिन्दी प्रचारार्थ पहुँचे । वे ही दक्षिण के सर्व-  
प्रथम हिन्दी प्रचारक कहलाये ।

## संविधान में हिन्दी का पद :

हिन्दी के अन्तर्प्रान्तीय तथा सार्वदेशिक रूप को  
ध्यान में रखते हुए ही भारत की संविधानपरिषद ने हिन्दी  
को राष्ट्रभाषा का पद प्रदान किया । इस संविधान परिषद  
में अहिन्दी भाषियों का बहुमत था । हिन्दी को राष्ट्र-  
भाषा बनाने का प्रस्ताव एक अहिन्दी भाषी ने रखा था  
और वह सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया था ।

## उपसंहार :

कोई भी अपनी स्वभाषा का विकास करके ही देश  
का विकास कर सकता है । इत्यायल, रूस आदि देश  
अपने देश की भाषा द्वारा अपना विकास करके विकास  
की उच्चतम स्थिति तक पहुँच सके हैं । भारतेन्दु  
हरिश्चन्द्र जी ने ठीक ही कहा है—

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।

बिनु निज-भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को मूल ॥

समस्त देश में हिन्दी भाषा का प्रचार करना  
हमारी प्राथमिकता एवं पुनीत कर्तव्य है ।



# देश की आजादी निशाचरी मुहूर्त में मिली थी

निर्मल पाण्डेय

द्वादश 'ख'

ऐसा लगता है कि स्वतन्त्रता प्राप्त का मुहूर्त उचित नहीं था। भारतीय स्वतन्त्रता का हस्तान्तरण उस समय हुआ जिस समय समूचा अखण्ड भारत साम्प्रदायिकता की आग में जल रहा था। स्वतन्त्रता के साथ ही राष्ट्र खण्डित हो चुका था। आजादी का शंखनाद करते हुए प्रथम प्रधानमंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू ने कहा था—'भारत की उन असीम परिस्थितियों का अंत हो गया जिन पर विदेशी निशाचरों का हास्तक्षेप था।'

ऐसा प्रतीत होता है कि मानों स्वतन्त्रता प्राप्त होते ही दूसरे दुर्भाग्य का आरम्भ शुरू हो गया। गाँधी दर्शन के पथ से हटकर पं० जवाहर लाल नेहरू ने वोट के प्रतिनिधित्व में दुर्भाग्य की एक अमिट रेखा खींच दी।

राष्ट्रवादी मनीषियों के सम्पर्क में रहकर भी नेहरू जी सत्ता में आने के पश्चात् सिद्धान्तों से भटक गये। हृद हो गयी है कि राजनैतिक दल इन्हीं की छाँह में बैठकर सन्तोष का अनुभव व राष्ट्र की भावी नीतियाँ निर्धारित करते हैं।

## लँगड़ी धर्म—निरपेक्षता :

आज की राजनीति में धर्म—निरपेक्षता एवं सामाजिक न्याय दो ही ध्वनियों की गूँज सम्पूर्ण भारतवर्ष को प्रतिध्वनित कर रही है। आज का नेता यह कहता

है कि धर्म—निरपेक्षता संविधान की मूल-भावना है। हर कीमत पर इसकी रक्षा की जायेगी।

धर्म—निरपेक्षता का मूल सार यह है कि न तो कोई आराधना पद्धति को ठुकरा सकता है और न ही उससे हटकर चलना चाहिए। आज धर्म—निरपेक्षता की जगह लोगों के उन्हीं के धर्म के नाम पर लूटा जा रहा है। आज की धर्म—निरपेक्षता सम्पूर्णतया लंगड़ी हो गई है जिसको किसी मनीषी विचारक के व्यक्तित्व का सहारा लेना परमावश्यक है।

## सामाजिक न्याय का उपहास :

सामाजिक न्याय की बात करना एवं दिलों को जोड़ने की बात करना अत्यन्त सुन्दर बात है और इसे हरगिज नहीं नकारा जा सकता किन्तु वी० पी० सिंह का सामाजिक न्याय एवं मुद्दों तथा सिद्धान्तों की राजनीति हरगिज विश्वास के योग्य नहीं है। सामाजिक न्याय के नाम पर धोखा, राष्ट्रीय-एकता के साथ विश्वासघात है।

अधोगति प्राप्त मोर्चा सरकार के सामाजिक न्याय का असली रूप अयोध्या में देखने को मिला जब राम नाम सकीर्तन करते हुए निहत्थे रामभक्तों पर, कार-सेवकों पर बर्बरता पूर्वक गोलियाँ बरसाई गई तथा ट्रकों से लाशों को ढोकर सरयू में बहा दिया गया।

# रक्षा के बिना विकास भारतीयों से खिलवाड़

[रक्षा और विकास मानव जीवन के नैतिक मूल्य है। एक-दूसरे के पूरक भी। अपने इस लेख में लेखक ने इसी तथ्य को स्पष्ट किया है।]

—सम्पादक

विकास मिश्र

द्वादश 'क'

रक्षा व विकास मानव स्वभाव के दो घटक तथा मानव की मूल प्रवृत्ति से जुड़े गुण हैं। इनके बिना मानव का अस्तित्व नहीं है। ये मानव जीवन के केन्द्रीय मूल्य हैं। मनुष्य जीवन में रक्षा व विकास उन दो अवयवों के समान है जिसमें एक के बिना दूसरा अस्तित्व विहीन है।

वास्तव में विकास और रक्षा क्या हैं? विकास का अर्थ केवल मशीनों, कारखानों का विकास नहीं है। वास्तविक विकास तो औद्योगिक प्रगति के साथ-साथ आर्थिक साहित्यिक, सामाजिक तथा अध्यात्मिक उन्नति ही है। रक्षा का अर्थ केवल सैन्य बल ही नहीं बल्कि अपने चरित्र, साहित्यिक धरोहर, परम्पराएँ, संस्कृति के अस्तित्व की रक्षा ही वास्तविक रक्षा है।

यदि हम रक्षा व विकास की इस अत्योनाद्विजता को मानव जीवन के प्रारम्भ काल से लें, जब मनुष्य अपने जैविक मूल्यों के लिए संघर्षरत था वह अपने अस्तित्व के लिए पशुओं को मारने के नए-नए तरीके खोजता गया। उसने आग की खोज की, जिससे पशु डरते थे। तथा अन्य तरीकों के अन्तर्गत उसने पत्थर के हथियार बनाये। फिर उसने विकास के नए आयाम स्थापित करते हुए लोहे, ताँबे के अस्त्र-शस्त्र बनाये। इस प्रकार वह पशुओं से बचाव व रक्षा के लिए नए तरीके खोजता गया तथा दूसरे पक्ष में उसके जीवन का क्रमबद्ध विकास

होता चला गया। मानव 'स्ट्रगल फार एकजिस्टेंज' पर कार्य करता गया। प्रारम्भ काल से ही मनुष्य सुरक्षा के साथ-साथ सामाजिक, सांस्कृतिक व कला मूल्यों के सोपानों पर चढ़ता हुआ विकास के पथ हर बढ़ता चला गया। मनुष्य ने अपने साहित्यिक विकास के रूप में गुफाओं की दीवारों पर चित्रकारी करना प्रारम्भ की। वस्त्र निर्माण, पशुपालन, गृह निर्माण आदि मनुष्य के विकास प्रक्रिया के तत्व थे।

इस प्रकार मनुष्य सुरक्षा की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए सामाजिक, सांस्कृतिक व कला मूल्यों के सागर पार करते हुए अध्यात्मिक मूल्यों के लक्ष्य तक पहुँचता गया। अध्यात्मिक मूल्यों में मनुष्य ने मोक्ष को जीवन का अन्तिम उद्देश्य बनाया। मनुष्य की इस जीवन यात्रा में इसका सम्बन्ध सुरक्षा से भी बना रहा ताकि वह अपने द्वारा विकसित परिवेश की रक्षा कर सके मनुष्य प्राचीन काल से अध्यात्म व भौतिकता से जुड़ा रहा। उसकी यही विशेषता उसे अन्य पशुओं से अलग करती है।

रक्षा व विकास को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। अगर कोई देश रक्षा व विकास में से किसी भी एक में कमजोर है तो यह उसके लिए ठीक परिस्थिति नहीं। वर्तमान परिस्थिति में विश्व के कुछ एक

देश जहाँ विकास तीव्र गति से हो रहा है परन्तु उनकी रक्षा तैयारी कमजोर होने की वजह से उन्हें शक्तिशाली राष्ट्रों की गुलामी स्वीकार करनी पड़ रही है। तथा दूसरे पक्ष में कुछ देश ऐसे हैं कि उनकी रक्षा तैयारी उच्च कोटि की है परन्तु वहाँ सर्वांगीण विकास के नाम पर मात्र कुछ गतिविधियाँ हैं। विश्व के कुछ देश तो ऐसे हैं जहाँ अध्यापकों की संख्या सैनिकों से भी कम है।

रक्षा व विकास नैतिक मूल्य हैं जो मनुष्य के जीवन के लिए आवश्यक है। जिस प्रकार मनुष्य जीवन के चार पुरुषार्थों में अर्थ आधार है जिससे काम, धर्म व मोक्ष की सिद्धि हो सकती है। अतः जीवन से अर्थ के प्रभाव को नकारा नहीं जा सकता। उसी प्रकार रक्षा आधार-भूत प्रवृत्ति है जिसके लिए विकास आवश्यक है।

प्रश्न यह खड़ा होता है कि हमें रक्षा किससे करनी है? हमें केवल मनुष्यों या दुश्मनों से ही नहीं बल्कि वाह्य तत्वों से अपने सामाजिक परिवेश, साहित्यिक, सांस्कृतिक घरोहर की भी रक्षा करनी है। अगर हम मध्यकाल के भारत का इतिहास देखें, जब हम परतन्त्र थे तब हमारे अध्यात्मिक, सांस्कृतिक, मूल्यों के विकास की पराकाष्ठा थी। लेकिन हमारे समाज ने भौतिकता को नकार दिया और हम अपनी ही रक्षा में असमर्थ हो गए। परिणामतः वाह्य आक्रमणकारियों ने हमारी अखण्डता को घायल करने के प्रयास किये और हमें परतन्त्रता का जख्म सहना पड़ा। यह तो वेदों में भी कहा गया है “शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे नाऽयमात्मा बलही-नेन लभ्यः” यह सूक्ति भी भारत की मध्यकालीन परिस्थिति को दृष्टिगत करती है।

यदि मनुष्य मूल्यों की स्थापना करता है तो तब मूल्यों की रक्षा के लिए विकास भी आवश्यक है। क्योंकि विकसित स्थिति में मानव मूल्य ही उसके अस्तित्व के प्रतीक होते हैं। बिना इन जीवन मूल्यों के मनुष्य पशु तुल्य होता है। मूल्यों का अपदस्थ होना भी तो मनुष्य के अस्तित्व के लिए संकट का सूचक है।

आज के वैज्ञानिक युग की यही स्थिति है कि दुनियाँ बारूद के ढेर पर बैठी हुई है। शांति रूपी कपोत केवल पंख फड़फड़ा कर अपनी विवशता दिखा रहे हैं। दुनियाँ केवल भौतिकता के सुनहरे जगत में खो रही है उसी का विकास कर रही है। जबकि आदर्श विश्व की कल्पना यह थी कि रक्षा व विकास की संयुक्त रूप से प्रगति होते हुए संसार सुखी बने तथा प्रकृति के बरदान मनुष्य को मिले।

रक्षा तो विकास का वह साथी है जो उसका साथ उन्नति के पथ पर देती है। रक्षा के बिना विकास तो एक निष्प्राण ज्योति है जिसका भविष्य तय नहीं है। वास्तविक विकास का तात्पर्य है रक्षा से युक्त विकास। रक्षा व विकास का संयुक्त स्वरूप ही किसी देश की स्थिति विश्व रंगमंच में स्पष्ट करता है।

परन्तु अगर हमारा देश केवल विकास में ही बढ़ता चला जाए तथा रक्षा [अपने अस्तित्व की सुरक्षा] हमसे बहुत पीछे छूट जाए तो हमारी स्थिति केवल उस नाव की स्थिति के समान हो जायेगी जो पूर्ण विकसित नाव है परन्तु वह किसी समुद्री संकट में फँस गई है तथा उसके भविष्य का पता नहीं है। रक्षा का विकास के साथ सहयोग ही विकसित देशों के तीव्र विकास की पूँजी है। उनके यहाँ सैन्य शक्ति व विकास की गति में समन्वय है तभी वहाँ विकास व खुशहाली का चक्र तीव्रता से घूम रहा है।

भारत की तत्कालिक परिस्थितियों में रक्षा व विकास का सम्मिलित स्वरूप भारतवर्ष के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है। आज भारत हर तरफ से समस्याओं से जल रहा है तथा पड़ोसियों की नीयत भी भारत के प्रति ठीक नहीं है। इस परिवेश में केवल विकास को महत्ता परिस्थितिगत दृष्टि से उचित नहीं है। विकास के साथ-साथ सैन्य उन्नति उस विकास रथ को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक है।

यह तो प्रकृति का नियम है “जो अपनी रक्षा में

सक्षम होता है विकास वही करता है वरना बाह्य तत्व कमजोर को विकसित ही न होने दें। रक्षा की परिभाषा यह भी नहीं कहती कि हम दूसरे की प्रभुता, संपूर्णता को ठेंस पहुँचाए। रक्षा केवल अपने अस्तित्व के लिए आवश्यक है। अपनी पहचान कायम करने के लिए जरूरी है। जब रक्षा तैयारी उच्च पराकाष्ठा में पहुँच जाय तब हमें प्रकृति के प्रकोपों से रक्षा करनी है, वरना मनुष्य भी प्रकृति के प्राचीन जीवों के समान स्वयं रक्षा न कर पाया तो उसका अस्तित्व पृथ्वी से समाप्त हो जायेगा।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि सभी देश रक्षा व विकास का समन्वय स्थापित कर एक कल्याणकारी विश्व की स्थापना करें। जहाँ सभी 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का आदर्श मानें। सभी राष्ट्र एक-दूसरे की विकास प्रक्रिया में सहयोग दें तथा शक्तिशाली राष्ट्र समय आने पर कमजोरों को मदद प्रदान करें। अगर सारा संसार इस सिद्धान्त पर चलने को तैयार हो जाए तो एक नया स्वर्ग धरती पर बस जायेगा। जहाँ सभी सुखी व साधन सम्पन्न जीवन निर्वाह करेंगे।

भारत-वर्ष के परिप्रेक्ष्य में भी इस बात को भूला नहीं जा सकता। वहाँ रक्षा व विकास की सम्मिलित उन्नति आवश्यक है और अगर रक्षा को विकास से अलग किया गया तो इससे देश को अच्छे परिणाम नहीं मिलेगा। रक्षा अस्तित्व की लड़ाई का हथियार है और जिसने मूल्य को अपने जीवन से अपदस्थ किया, उसरा पतन अवश्यसंभावी है। अतः ये तथ्य सिद्ध करते हैं कि "बिना रक्षा के विकास भारतीयों के भाग्य से खिलवाड़ है।"

भारत जब रक्षा व विकास का समन्वय करते हुए आदर्श स्थिति में पहुँचेगा तब सभी देश भारत को सम्मान की नजर से देखेंगे तथा भारत को अपनी पुरानी प्रतिष्ठा पुनः मिल सकेगी। भारत ही विश्व का एक मात्र देश है जो विश्व में रक्षा व विकास का समन्वित रूप स्थापित करते हुये विश्व में शांति का ध्वज फहरा सकता है तथा एक कल्याणकारी तथा सर्वांगीण प्रगतिशील विश्व के निर्माण में प्रमुख भूमिका निभा सकता है।

सर्वे भयन्तु सुखिनः सर्वे भवन्तु निरामयाः।

सर्वे मद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत् ॥

## चुनौती

साहस तो सपूतों का कभी चुक न सकेगा।

दीवानों का है कारवाँ ये रुक न सकेगा।

करके कलम स्वयं ही शीश फेंक दें भले-

लेकिन ये असम्भव है, कभी झुक न सकेगा ॥

हर समस्या तो मुझे मेहमान है।

कर रहा जी खोल कर सम्मान है।

कुछ न कुछ अनुभूति मिल जाती नई-

वेदना तो वक्त का परदान है ॥

# क्या आप जानते हैं ?

आनन्द अवस्थी

एकादश 'ख'

## कम्प्यूटर का विकास (Computer Development)

कम्प्यूटर	वर्ष	आविष्कारक	देश
जोड़ने की मशीन	१६४२ ई०	ब्लेसे पास्कल	फ्रांस
डिजिटल कम्प्यूटर	१८३४ ई०	चॉलर्स बेबेज	इंग्लैण्ड
टेलुलेटिंग मशीन	१८९० ई०	हर्मन होलेरिथ	अमरीका
प्रथम एनलॉग कम्प्यूटर	१९३० ई०	वेनेवर बुश	अमरीका
इलेक्ट्रानिक डिजिटल कम्प्यूटर	१९४२ ई०	(जॉन अटानसॉफ क्लीफोर्ड बेरी)	अमरीका
(प्रथम पूर्ण इलेक्ट्रानिक अंकीय इंटरिप्रेटर और कैलकुलेटर	१९४५ ई०	पेन्सिलवानिया विश्वविद्यालय	अमरीका
(बाइनरी अंकों का प्रयोग व सूचनार्य संग्रह करने वाला कम्प्यूटर	१९४६ ई०	जॉन वान न्युमन	अमरीका
संग्रहित प्रोग्राम कम्प्यूटर	१९४७ ई०	मैनचेस्टर विश्वविद्यालय	इंग्लैण्ड
प्रथम व्यापक रूप से उत्पादित कम्प्यूटर	१९५० ई०	(इकर्ट और मौचली कम्प्यूटर कंपनी, फिलाडेल्फिया)	अमरीका
(वाल्वस प्रयोग करने वाला प्रथम व्यापारिक कम्प्यूटर	१९५३ ई०	आई. बी. एम. (I.B.M.)	अमरीका
प्रथम इलेक्ट्रानिक्स व्यापारिक कम्प्यूटर	१९५४ ई०	(ब्रिटिश केटैरिंग कम्पनी, जे०. लेयान्स)	इंग्लैण्ड
ट्रांजिस्टर लगे व्यापारिक कम्प्यूटर	१९६० ई०	(डिजिटल इक्यूपमेंट कॉरपोरेशन)	अमरीका
सिलिकिन चिप कम्प्यूटर	१९६५ ई०	अमरीकन कम्पनी	अमरीका
माइक्रोप्रोसेसर पांकेट कैलकुलेटर	१९७१ ई०	इन्टेल कॉरपोरेशन	अमरीका
बबल मेमोरी कम्प्यूटर	१९७९ ई०	अमरीकन कम्पनी	अमरीका
सुपर कम्प्यूटर	१९८३ ई०	अमरीकन कम्पनी	अमरीका

# हमारा विद्यालय

प्रवीन कटियार

अष्टम

[अपने विद्यालय के प्रति सहज श्रद्धा का भाव विद्यार्थियों के मन में होता है। इसी बात को उजागर कर रही है किशोर कवि की यह सहज भावमयी अभिव्यक्ति।]

—सम्पादक

मैं हूँ छात्र यहाँ का यह है प्रिय विद्यालय मेरा ।  
यहाँ सरस्वति मैया का रहता है नित्य बसेरा ॥  
पहनाती है हार सुनहरा इसको उषा सबरे ।  
गंगा जी की पावन धारा बहती जिसके नेरे ॥ १॥

भारतीय—संस्कृति का पोषक, गौरव मिला बड़ा है ।  
दीनदयाल जी का सपना मानों साकार खड़ा है ॥  
जिसके चरणों तले चाँदनी छिटकाती फुलझड़ियाँ ।  
नित्य बई जुड़ती हैं इसकी कीर्ति—लता में लड़ियाँ ॥२॥

शोभित यहाँ ओमशंकर जी गरिमामय प्राचार्य हैं ।  
छात्रों के हित—चिंतक सच्चे संत पुरुष आचार्य हैं ॥  
जिनमें अनुशासन—शासन का, जुड़ा अनूठा नाता ।  
हम सबके श्रद्धाभाजन हैं, राष्ट्र—भक्ति उद्गाता ॥२॥

गुरुजन अपने शिष्यों को, हैं अच्छी सीख सिखाते ।  
विद्या ज्ञान दानकर, हमको शिक्षित सभ्य बनाते ॥  
बैरिस्टर साहब इसके अध्यक्ष नीति में आगर ।  
संस्था को ऊँचा करने में, रहते हैं जो तत्पर ॥४॥

कानपुर जनपद का, इसने गौरव अधिक बढ़ाया ।  
दीनदयाल विद्यालय उनकी स्मृति में ही कहलाया ॥  
कक्षा अष्टम है, प्रवीन कटियार नाम है मेरा ।  
त्रुटियाँ हों तों क्षमा करें गुरुजन, प्रणाम है मेरा ॥५॥

# सहानुभूति का फल

विशाल गुप्त

षष्ठ 'ख'

[कभी-कभी संसार में घटने वाली छोटी-छोटी घटनायें भी कितनी महत्वपूर्ण सीख देती हैं और कवि को कुछ पंक्तियाँ लिखने को विवश कर देती हैं।]

—सम्पादक

एक दिन,  
पेड़ के नीचे पड़ी एक पत्ती ने  
अपने मन की गाँठ खोली  
और पेड़ पर लगी दूसरी पत्ती से बोली।  
“मैं क्या करूँ ?  
क्या यहीं सर जाऊँ ?  
यों ही पड़ी-पड़ी सड़ जाऊँ।”  
पेड़ पर लगी पत्ती  
हमदर्दी से बोली—  
नहीं—नहीं  
मैं तेरे पास आती हूँ।  
धरती आकर  
तेरी समस्या सुलझाती हूँ।  
और वह टूट कर नीचे आई।  
लेकिन नीचे पड़ी पत्ती की तरह  
जोर-जोर से फड़फड़ाई।  
उसने भी रो-रोकर धरती भिगो दी।  
और सहानुभूति में  
अपनी जिन्दगी खो दी।  
मैं भी,  
इसी तरह सहानुभूति की धारा में फँस जाता हूँ।  
फिर उसे याद कर-कर  
सिहर सिहर जाता हूँ।

# प्राचीन विश्व के सात आश्चर्य

आनन्द कुमार श्रीवास्तव

—नवम 'क'

[ संसार के सात आश्चर्यों की बात तो हम सुनते हैं किन्तु उन आश्चर्यों का विस्तृत परिचय प्रस्तुत लेख का अभीष्ट है । ]

—सम्पादक

(१) मिस्र का पिरामिड संसार का सबसे बड़ा पिरामिड है । यह काहिरा में (मिस्र देश में) स्थित है जो गीजा वाले पिरामिड के नाम से जाना जाता है । यह ८८१ फुट लम्बा तथा चौकोर आधार पर बना हुआ है । इसे वहाँ के शासक खूफू ने बनवाया था । इस पिरामिड को दो हजार गुलाम कारीगरों ने बीस वर्षों के कठिन परिश्रम के पश्चात् तैयार किया था ।

(२) ओलम्पिया में स्थित जीयस देवता की मूर्ति जिसे कि यूनान के प्रसिद्ध शिल्पकार फिडियास ने ४५० ई० पूर्व बनवाया था । चालीस फुट ऊँची इस मूर्ति के वस्त्र सोने के, शरीर हाथी के दांत का एवं आँखें जवाहरातों से बनवायीं गयी थी । इस मूर्ति को ४०० वर्ष बाद यानि की ५० ई० पूर्व ईसाई धर्म के अन्धभक्तों ने नष्ट कर दिया ।

(३) तुर्की देश में स्थित एफेसस में स्थित देवी डायना का मन्दिर जिसको कि ईसा के १०० वर्ष पूर्व बनवाया गया था इसे प्राचीन विश्व का तीसरा आश्चर्य भी माना जाता है । साठ फुट ऊँचे खम्भों पर टिकी छत वाले इस मन्दिर में अनेक कलात्मक वस्तुएँ थीं जो कि अपने में बेजोड़ थी । इसमें वहाँ के लोग धन, सोना रखते थे । क्योंकि इस मन्दिर में चोरी नहीं होती थी उस पवित्र मन्दिर में जाकर किसी के चोरी करने की हिम्मत नहीं होती थी । ३५५ वर्ष बाद ही हीरो स्ट्रेटस नामक शैतान शासक ने इसे जलाकर नष्ट कर दिया ।

(४) राजा मासोलस का मकबरा प्राचीन विश्व का चौथा आश्चर्य माना जाता है । यह एक स्मारक था । एशिया के शासक हैलिकाशनासस ने इसे अपनी रानी की याद में बनवाया था ।

(५) हीलियोस की प्रतिमा रोड्ज द्वीप में निर्मित की गयी थी । सूर्य देवता की बनी हीलियोस की मूर्तियाँ जो कि काँसे की बनी थी संसार में प्रसिद्ध थी ।

५६ वर्ष बाद भूकम्प ने इसे नष्ट कर दिया । यह मूर्ति दिव्य प्रकाश की तरह चमकती थी । जिससे रात में जहाज आते-जाते थे । ऐसा लोगों के प्रचलित मत के अनुसार है ।

(६) सिकन्दरिया (मिस्र) का प्रकाश स्तम्भ जिसे प्लोटी मोरीजा ने बनवाया था । प्रकाश स्तम्भ प्राचीन विश्व का छठा आश्चर्य माना जाता है । चार सौ फुट का प्रकाश स्तम्भ सफेद संगमरमर से बना था दुर्भाग्यवश प्रकाश स्तम्भ को प्रकृति ने ऐसे निगला कि इसका पता भी नहीं चल पाया ।

(७) हैरिंग गार्डेन यानि की झूलते हुए बाग प्राचीन विश्व का सातवाँ आश्चर्य माना जाता है । यह बाग ईरान के बेबीलोन नगर में स्थित था । इसे राजा तेबु दनेदार ने रानी की याद में बनवाया था । इस झूलते हुए बाग को ५१४ ई० में पारसियों के आक्रमण के दौरान नष्ट कर दिया गया ।

# भक्त की आस्था

योगेश श्रीवास्तव

पृष्ठ 'ख'

[ मनुष्य-जीवन में आस्था का महत्वपूर्ण स्थान है। आस्था के बिना न कर्म सम्भव है न ज्ञान सम्भव है, और न भक्ति ही। यही बात सिद्ध होती है नन्हों कलम से लिखी गई इस कथा में। ]

—सम्पादक

गोपाल एक अनाथ बालक था। पड़ोस के आश्रम के एक संत ने उसका पालन-पोषण किया था। एक दिन संत जी ने तीर्थ-यात्रा करने का मन बनाया और गोपाल को बुलाकर कहा— 'गोपाल' 'मैं तीर्थ पर जा रहा हूँ भण्डार में अनाज एवं अन्य आवश्यक सामान भरा है। पहले भगवान का भोग लगाना, फिर भोजन करना।' जब ऋषि चले गये तब फिर गोपाल ने भोजन बनाया और भगवान की मूर्ति के सामने रखकर बोला— 'भगवान भोजन करो!' लेकिन पत्थर की मूर्ति भला भोजन कैसे करती? गोपाल ने फिर कहा— भगवान! जल्दी खाओ तो मैं भी खाऊँ मुझे भूख लगी है। इस पर भी मूर्ति ने भोजन नहीं किया तो गोपाल झुंझला कर बोला— 'अच्छा भगवान! तुम मिठाई खाओगे शायद।' उसने भण्डार-गृह से मिठाइयाँ लाकर मूर्ति के सामने रखी और बोला— 'अब तो खाओ।' परन्तु भगवान ने मिठाई भी नहीं खाई। तब गोपाल ने क्रोधित होते हुये कहा— 'भगवान मेरा भूख के कारण बुरा हाल हो रहा है। तुम खाओ तो मैं भी खाऊँ नहीं तो यह डंडा देखा है।' उसने हाथ में डंडा लिया अचानक मूर्ति से भगवान प्रकट हुये और भोजन करने लगे। भगवान को पूरा खाना खाते देखकर गोपाल कहने लगा— 'हे भगवान! मेरे लिये भी थोड़ा छोड़ देना। मैं भी भूखा हूँ।' पूरा खाना तुम ही खा जाओगे तो मैं भूखा ही रह जाऊँगा।' उस दिन से गोपाल बड़े प्रेम से

भोजन परोस कर भगवान के सामने रखता और भगवान के खा चुकने के बाद ही स्वयं खाता।

बहुत दिनों के बाद अपनी तीर्थ-यात्रा पूरी करके लौटे संत जी तो गोपाल ने उन्हें बताया कि भंडार-गृह की सामग्री समाप्त होने को है। संत ने पूँछा— 'इतनी जल्दी समाप्त हो गया।' गोपाल ने बताया— 'इतने दिनों तक मैंने खाया और स्वयं भगवान ने भी खाया, फिर समाप्त क्यों नहीं होगा? ऋषि सोच में पड़ गये कहीं भगवान भी खाते हैं? उन्हें गोपाल की बात पर विश्वास नहीं हुआ। लेकिन गोपाल ने बताया; कि आज भगवान खाने फिर आयेंगे। तब तो आपको देखकर विश्वास होगा। उस दिन भी शाम को भगवान फिर प्रकट हुए उन्होंने भोजन भी किया। संत ने यह चमत्कार अपनी आँखों से देखा तो प्रभु के चरणों पर गिर पड़े और कहने लगे हे प्रभु! 'मैं वर्षों तपस्या करता रहा आपने कभी दर्शन नहीं दिये। भगवान ने कहा इसने मेरा मन जीत लिया है और मैं तो भावना का भूखा हूँ। यह कहकर भगवान अन्तर्धान हो गये।

संत ने अपने शिष्य को गले से लगा लिया और बोले— 'बेटा! तुम्हारे जैसा शिष्य पाकर मैं धन्य हो गया। आज मेरी तपस्या सफल हो गई। मैं समझ गया कि भगवान भावना के भूखे होते हैं। भगवान को पाने के लिये कठोर तप की नहीं अपितु भावना की आवश्यकता होती है।

# तथाकथित छात्र

[ एक रासायनिक विश्लेषण ]

अक्षय माथुर  
एकादश 'ख'

[ आज का विद्यार्थी किस प्रकार पथ-भ्रमित हो गया है और उसका वर्तमान स्वरूप आदर्श से कितना भिन्न है । यह संकेत प्रस्तुत व्यंग्य लेख से मिलता है । ]

—सम्पादक

प्रतीक—St

भार-४५ किग्रा० से ६५ किग्रा०

**खोज**—छात्र का अस्तित्व अति प्राचीन काल से है । अतः इसके खोजकर्ता आदि का नाम अज्ञात है ।

छात्र + अध्यापक का चॉटा = अध्यापक का घेराव + प्रधानाचार्य को ज्ञापन

**प्राप्ति स्थान**—छात्र प्रायः पिक्चर हॉल के अन्दर या सामने पान की दूकान पर या बाजार में टहलते हुये पाये जाते हैं । विद्यालय में ये उपलब्ध नहीं हैं । ये प्रायः समूह में मिलते हैं ।

**पहचान**—

पान से रंगे ओंठ, बड़े बाल, गले में रूमाल, लूजर, जींस आँखों पर चश्मा, मुँह में सिगरेट व फिल्मी गाने या संवाद छात्र की पहचान है ।

**बनाने की विधि**—आधुनिक शिक्षा द्वारा ये अत्यंत सरलता से प्राप्त किये जा सकते हैं । निम्नांकित साम-ग्रियों के संयोग से ये प्राप्त होते हैं—

**अपररूप**—छात्रों के कुछ अपररूप बैठकर सीधी तरह अध्ययन करते दिखायी देते हैं । परन्तु इनकी संख्या बहुत कम होती है ।

- |         |          |               |
|---------|----------|---------------|
| १—जींस  | २—लूजर   | ३—बैगी        |
| ४—चश्मा | ५—सिगरेट | ६—लक्ष्मी आदि |

**भौतिक गुण** :—

**सावधानियाँ**—१-छात्र से दूर रहना चाहिये ।

१-छात्र का क्वथनांक बहुत निम्न तथा गलनांक अत्यन्त उच्च होता है । (गुस्सा जल्दी आता है तथा दया देर से)

२-छात्र द्वारा दी गई आज्ञा का पालन करना चाहिये आदि ।

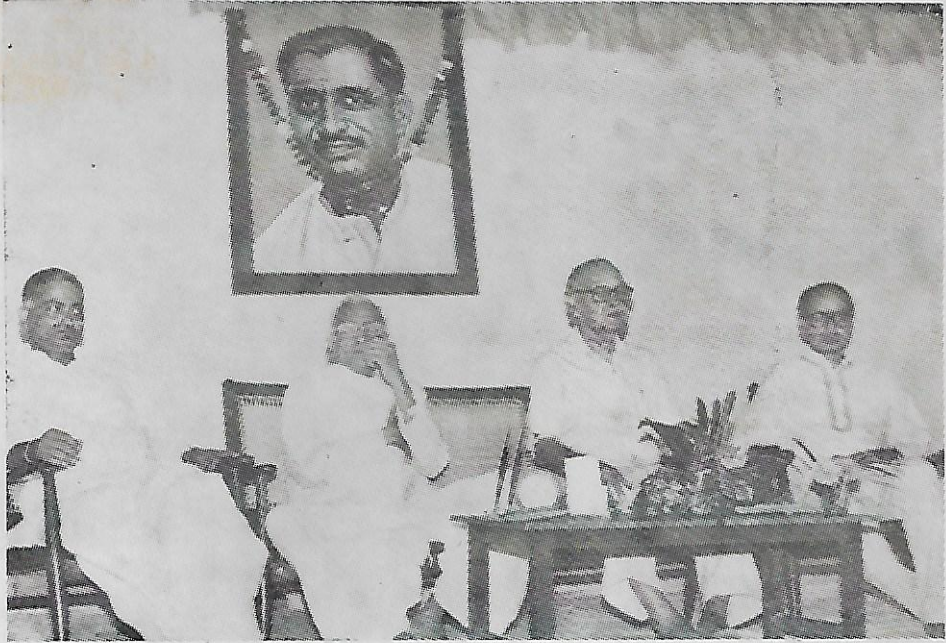
२-ये पूर्ण अविलेय होते हैं ।

३-इनके अनेक रंग व विविध गन्ध होती है ।

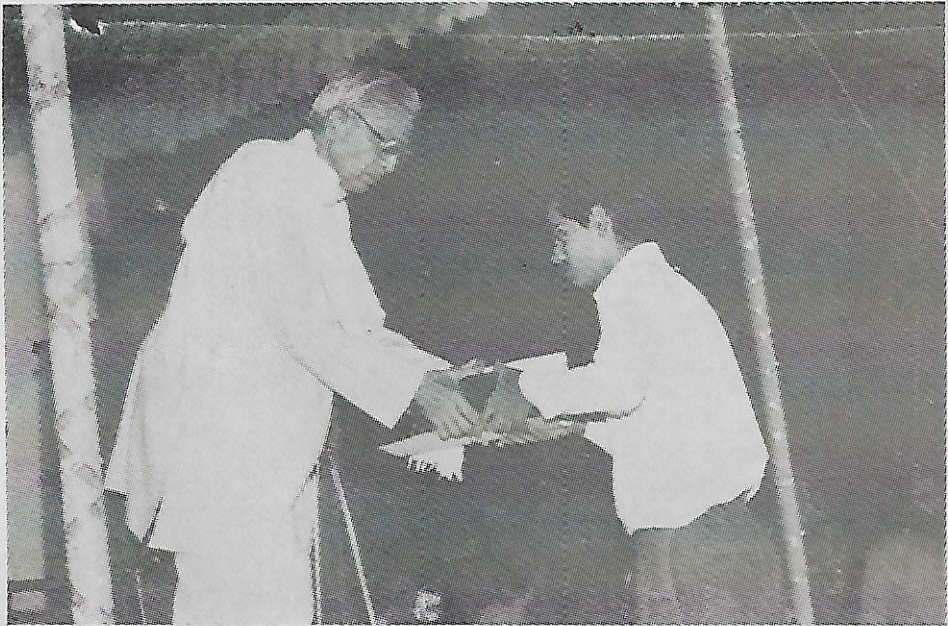
**रासायनिक गुण** :

छात्र + अध्यापक की डाँट = अध्यापक का घेराव + अध्यापक को धमकी है ।

**विशेष**—जब निरंकुश शासन के जुल्म बढ़ जाते हैं, तो उस पर अंकुश लगाने के लिए छात्र एक ऐसी देश-व्यापी शक्ति के रूप में खड़े होते हैं जिससे शासन थर्रा उठता है और नेस्तनाबूत (जड़ मूल से नष्ट) हो जाता है ।



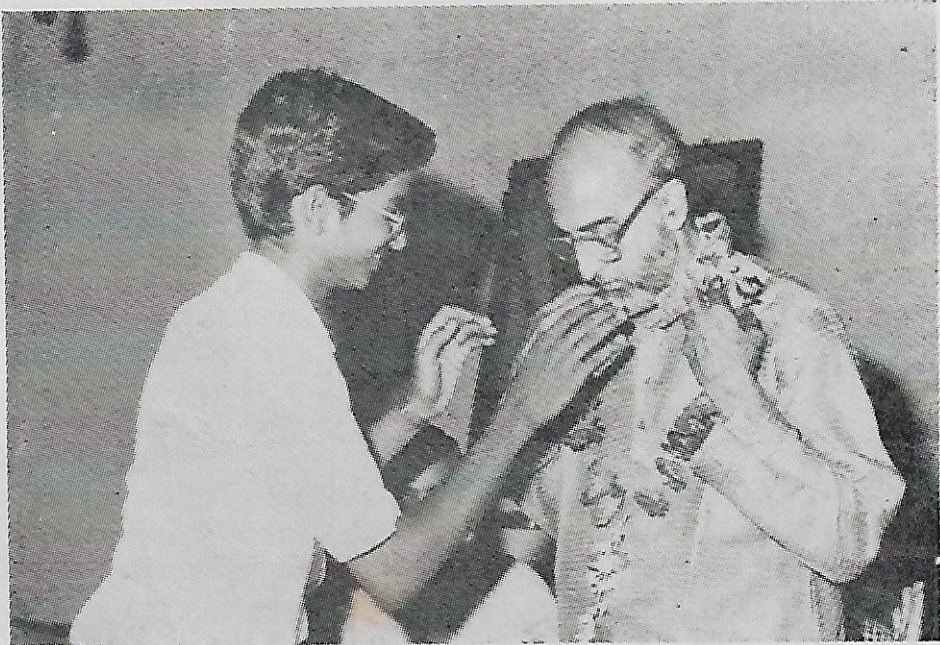
वार्षिकोत्सव के अवसर पर मुख्य अतिथि- माननीय भाउराय देवरस ।



वार्षिकोत्सव के अवसर पर माननीय भाउराव जो देवरस से पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र प्राप्त करते हुए आशीष तिवारी (द्वादश क)



पुरस्कार-वितरण समारोह में मुख्य अतिथि हिन्दी के मूर्धन्य विद्वान एवं डी० ए० वी० कालेज के भूतपूर्व विभागाध्यक्ष डा० प्रेम नारायण शुक्ल को माल्यार्पण करते हुए विद्यालय के प्रधानाचार्य जी ।



मुख्य अतिथि श्री रमेश मरौलिया को माल्यार्पण करते हुए किशोर भारती के मंत्री पंकज श्रीवास्तव

## लोकोक्तियों में स्वास्थ्य-चर्चा

राष्ट्रपति पदक् विभूषित

डा० रमाकान्त मणि

पोस्ट वाडें, नवाबगंज, कानपुर

वैद्य [विशारद] [रजि०]

आयुर्वेद शास्त्ररत्न, एम० ए०

साहित्यरत्न, एम० डी० एच०, बी० लिव, एस० सी०

भारत गाँवों में बसता है। जहाँ अधिकतर कृषक रहते हैं। खेती बारी का काम और अशिक्षा के कारण गाँव के लोग पहले बहुत कम शहरों में जा पाते थे। आज भी ऐसी स्थिति में जब कोई बीमार पड़ जाता है तो पहले घर के लोग अपने ढंग से इलाज करते हैं। वर्षों पहले आज की तरह डाक्टर वैद्यों की बहुतायत न थी। गाँवों में न तो डाक्टर थे और न तो अस्पताल। हाँ, वैद्य थे परन्तु बहुत कम। उस समय घर में किसी के बीमार हो जाने पर गाँव के बड़े-बूढ़ों और सयानों से राय ली जाती थी। वे ही पहले आकर दवा-दारू का नुस्खा बता देते थे, जिसके प्रयोग से रोगी अधिकतर ठीक हो जाते थे। छोटी-मोटी बीमारियों की दवा लोगों की जुबान पर ही रहती थी।

आज भी गाँवों में वे ही नुस्खे लोगों को रामबाण साबित होते हैं। इसी कारण वे नुस्खे आज आयुर्विज्ञान में लोकोक्तियों के रूप में प्रचलित हो गये हैं। इन लोकोक्तियों का प्रचलन किसी न किसी रूप में देश की हर भाषा में मिलता है। इनकी उपयोगिता, गाँव हो या नगर, हर जगह एक सी ही है।

### आँख पर :

- १- आँख कान के मध्य में चूना लेहु लगाय।  
आई आँख अच्छी करै और ललाई जाय ॥

- २- केशर शहद मिलाय कर नैनन माँहि लगाव।  
ललामी गरमी मिटै और रतौंधी जाय ॥

### कान दर्द पर :

- १- पीले पात मदार के, घृत का लेप लगाय।  
गरम—गरम रस डालिये कर्ण दर्द मिट जाय ॥
- २- तुलसी रस कर गुनगुना कान में डालो भाय।  
तो थोड़ी ही देर में कान—दर्द मिट जाय ॥
- ३- पात सुदर्शन गरम कर—अर्क कान में डाल।  
फोड़ा—फुन्सी आदि का मिटै दर्द तत्काल ॥

### जुकाम :

- १- जब ही जुकाम प्रारम्भ हो खीर, दूध, घी, चाय।  
मूँगफली अरू तेल तजे, तुरत जुकाम मिट जाय ॥
- २- प्याला भर जल संग में, पाँच ही लौंग पकाय।  
सर्दी जुकाम में पिये, शीघ्र स्वस्थ हो जाय ॥
- ३- यदि अभिलाषा हृदय में कबहूँ न होय जुकाम।  
पानी पियै नित नाक से पहुँचावै आराम ॥
- ४- छोटी पीपल शहद से, रोज सुबह जो खाय।  
कुछ दिन जो नियमित भखै, दमा स्वांस मिट जाय ॥

५- आधा तोला मुलहठी, अरू ग्यारह तुलसी पात मगावै।  
तीन माशा चीनी डाले, ग्यारह कालीमिर्च पिसावै।  
डेढ़ पाव जल में औटावे, चीनी संग सब वस्तु  
मिलावे।  
छठा भाग जल रह जाने पर—पी के अपना जुकाम  
मिटावे ॥

६- लौंग आग में भून कर लेवे उसे पिसाय।  
शहद संग में चाटिये, कूकर खाँसी जाय ॥

### पेट की कृमि पर :

- १- आधा तोला वजन में बाभी रंग मिलाय।  
रत्ती भर मधु संग ले, पेट—कीट मिट जाय।
- २- पत्ती पीसे नीम की, लेवे रस निकलाय।  
आधा तोला नित पिये, पेट पीर मिट जाय ॥

### कुत्ता काटने पर :

- १- कुत्ता काटे ठौर पर दे चूना चिपकाय।  
जब जब पीला रंग पड़े, बारम्बार लगाय ॥

### बिच्छू डंक पर :

- १- लाल दवा (पोटास) में लीजिये नीबू अर्क मिलाय।  
बिच्छू काटे पर धरै जहर, डंक मिट जाय ॥

### अजीर्ण पर :

लौंग सोंठ अजवायन, बटी बनाकर खाय।  
सुबह दोपहर शाम ले पेट अजीरन जाय।

### पेट दर्द :

तोला एक पुराना गुड़, चूना माशा चार।  
बटी बनाकर खाइये वायु शूल मिट जाय ॥

### पेट दर्द, पेट गैस पर :

- १- सोंठ सोंहागा सोचर गान्हीं।  
सहिजन के रस बरिया बान्ही।  
शत्तर शूल बहत्तर बाई।  
कहै धनन्तरि क्षण में जाई ॥  
चौकिया सोहागा ताव पर गरम कर लावा बना  
लेवें।

### कब्ज :

- १- हरड़ बहेड़ा आँवला भाग एक दो चार।  
चूर्ण बना संग लीजिये कब्ज नष्ट हो जाय ॥

### उल्टी पर :

- १- प्याज और नीबू रस लीजे शहद मिलाय।  
बार - बार पीता रहे उल्टी बन्द हो जाय।
- २- ज्यादा खाये जल्दी मरै सुखी जो थोड़ा खाये।  
रहे निरोगी कम खाये से, बिगरै काम न गम खाये।
- ३- जाको मारन चाहिये बिन मारे बिन घाव।  
उसको कहिये प्रेम से घुँइयाँ पूरी खाव ॥

### खूनी बवासीर पर :

- १- कुकरौंघा को पीस दो, चम्मच अर्क निकार।  
सम मात्रा मधु में पिये, रक्त-अर्स मिट जाय ॥
- २- घी कपूर को लीजिये एक साथ मिलाय।  
फिर माथे पर रगड़िये दर्द तुरत भग जाय ॥
- ३- हरी दूब को कुचल कर लीजे स्वरस निकाल।  
आधा तोला पीजिए आँव मिटे तत्काल ॥



# मंगल : एक चुनौती

दीपक अग्रवाल

द्वादश 'ख'

[विज्ञान प्रकृति पर विजय प्राप्त करने का स्वप्न संजोये निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है। मंगल ग्रह पर विज्ञान के अभियान की एक झाँकी प्रस्तुत लेख का विषय है।]

—सम्पादक

सुप्रसिद्ध कवि 'सुमित्रानन्दन पंत की कविता की एक पंक्ति है 'तु जाने नक्षत्रों से कौन, निमन्त्रण देता मुझको मौन। लगता है कवि की कल्पना कोरी कल्पना नहीं होती। उममें कहीं सूदूर भविष्य की कोई सच्चाई भी छिपी होती है। मंगल का निमन्त्रण तो मनुष्य को मनु के समय से आन्दोलित कर रहा है। इसे आकाश स्पष्ट होने पर ग्रीष्म और शरद् ऋतु के मध्य में संध्या के समय देखा जा सकता है। यह नारंगी रंग के एक चमकदार प्रकाश बिन्दु के रूप में देखा जा सकता है। दूरबीन के आविष्कार के बाद इस रहस्यमय ग्रह के प्रति मनुष्य की रुचि और अधिक जाग्रत हुयी। परन्तु इसका जितना अध्ययन किया गया यह ग्रह उतना ही रहस्यमय बनता गया।

## मानव के कदम :

मंगल ग्रह के रहस्यों को जानने की दिशा में धरती से बाहर जाकर अध्ययन करने की शुरुआत हुई सोवियत रूस के अन्तरग्रहीय अंतरिक्ष यान मार्स-१ से जो १-११-१९६२ को छोड़ा गया। इसके बाद १५ जुलाई १९६५ को अमेरिका ने अन्तरग्रहीय यान मेरिनर—४ छोड़ा जिसने मंगल के पास से गुजरते हुए कुछ चित्र खींचे। उधन रूस ने मार्स-३ नामक अपने अन्तरग्रहीय यान को २ दिसम्बर १९७१ को मंगल ग्रह पर उतार दिया। १९७६ को अमेरिका ने अपने यान वाइकिंग-१ को मंगल

पर उतार कर ग्रह की धरती का सर्वप्रथम अध्ययन किया। रूस द्वारा सात और १२ जुलाई १९८८ को दो अन्तरिक्ष यान फोबोस—प्रथम और फोबोस—द्वितीय छोड़े गये हैं। सन् २०२० में मनुष्य स्वयं ही मंगल पर पर पदार्पण करेगा। तब तक अनेक यान छोड़े जायेंगे जो मंगल ग्रह की बाहरी व भीतरी टोह लेंगे।

## मंगल के उपग्रह :

मंगल न तो चन्द्रमा विहीन है और न ही उसके ध्रुवों पर बर्फ जमी है। इसके दो उपग्रह 'फोबोस' और 'डिमास' हैं। दोनों उपग्रह अत्यंत छोटे और धुंधले हैं। फोबोस का व्यास सिर्फ १६ किमी० और डिमास का व्यास केवल ८ किमी० है। फोबोस मंगल से लगभग ९३८० किमी० दूर व डीमास २३५०० किमी० की दूरी पर है। फोबोस एक दिन में मंगल की तीन परिक्रमा करता है और डीमास चार दिन में पाँच बार। मंगल के ये दोनों उपग्रह भी कम रहस्यमय नहीं हैं। फोबोस उपग्रह को मंगल ग्रह धीरे-धीरे अपनी ओर खींचता जा रहा है, जिससे उसकी परिक्रमा के पथ में बदलाव आ रहा है और अनुमान है कि यह उसे ७ करोड़ वर्ष में मंगल से जा टकरायेगा।

## मंगल यात्रा की कठिनाइयाँ—

मानव की मंगल यात्रा की सबसे कठिनाई है मार्ग

की लम्बाई। पृथ्वी से मंगल तक पहुँचने के लिये जो मार्ग अपनाया जायेगा वह लगभग ४० करोड़ मील का होगा। जिसे तय करने में नौ माह से अधिक का समय लगेगा। इतनी लम्बी अवधि की यात्रा से यात्रियों पर शारीरिक व मानसिक कुप्रभाव पड़ेंगे। इतनी लम्बी अवधि तक भारहीनता की अवस्था में रहने से मांस-पेशियों का क्षय होगा तथा हड्डियों से कैल्शियम लगभग समाप्त हो जायेगा।

मंगल का वायुमण्डल भी समस्यायें पैदा करता है। वहाँ का वायुमण्डल पृथ्वी के वायुमण्डल से १०० गुना कम घना है। जिसमें मुक्त रूप से कार्बन डाई आक्साइड है। यहाँ पानी का अभाव है। मंगल की बंजर भूमि का रंग गुलाबी है। यहाँ पर चट्टाने और शिलाखण्ड हैं। बहुत पहले मंगल अत्यधिक क्रियाशील था। इसकी सतह पर गहरे गड्ढे, ज्वालामुखी और ऐसी घाटियाँ हैं जिनसे पता चलता है कि यहाँ पर कभी पानी का मुक्त बहाव था। मंगल की गुरुत्वाकर्षण शक्ति भी पृथ्वी की एक तिहाई है। यात्रियों को पराबैंगनी किरणों का भी सीधे प्रहार झेलने होंगे क्योंकि मंगल के वायुमण्डल के ऊपरी भाग में पृथ्वी जैसी कोई ओजोन परत नहीं है। इनसे बचने के उपाय भी कर लिये गये हैं।

मंगल हमारी पृथ्वी के सबसे पास २० नवम्बर १९९० को था इतनी पास यह हर १५ वर्षों में आता है। अब यह २००५ में इतने पास आयेगा।

### मंगल ग्रह की विशेषतायें .

सूर्य से औसत दूरी	= २२५,५६०,००० किमी०
सूर्य से अधिकतम दूरी	= २४७,०४०,००० किमी०
सूर्य से न्यूनतम दूरी	= २०७,०००,००० किमी०
पृथ्वी से औसत दूरी	= १४९,६००,००० किमी०
नाक्षत्रिक समय	= ६८६,९८ दिन
नक्षत्र के समुच्चय का समय	= २४ घंटे ३७ मिनट २३ सेकण्ड
कक्षीय झुकाव	= १° ५१'
व्यास	= ६७५० किमी०
द्रव्यमान (पृथ्वी = १)	= ०.११
आयतन (पृथ्वी = १)	= ०.१५
उपग्रहों की संख्या	= २
एस्केप वेलोसिटी	= ५.० किमी०/से०
अधिकतम ताप	= २२° C
न्यूनतम ताप	= -७०° C



### सुभाष

मिलता नहीं विकल्प ज्यों रवि के प्रकाश का,

उजली सी रोशनी का औ तम-तोम ह्रास का ।

बेजोड़ सूरमा था लाल माँ की कोख का-

कोई विकल्प था नहीं नेता सुभाष का ॥

# राशियों और तारों के कल्पित रूप

दीपेश सिंह

नवम 'क'

[ब्रह्माण्ड में बिखरे हुये रहस्य मानव-बुद्धि के लिये ऐसी चुनौती के रूप में हैं जिनकी खोज में वह सदियों से लगा हुआ है। प्रस्तुत लेख में ऐसे ही एक रहस्य के सम्बन्ध में वैज्ञानिक तथ्यों को लेखक ने रेखांकित किया है।]

—सम्पादक

आकाश में कितने तारे दिखाई दे रहे हैं। आप कहेंगे कि तारे असंख्य हैं। यह बात ठीक नहीं मालुम होती। ज्योतिषियों ने दूरबीन लगाकर छोटे-सोटे सभी तारों को गिनने का प्रयत्न किया है। उनका कहना है कि किसी एक समय में हमको आकाश में ६००० से अधिक तारे नहीं दिखाई देते, हमारी दूरबीन से भी वे ओझल हैं। हमारी पृथ्वी भी तो चलती फिरती है और जो तारे हमें आज दिखायी दे रहे हैं, वे सब के सब दो चार महीने बाद भी दिखायी देंगे, यह आवश्यक नहीं। भिन्न-भिन्न महीनों में हम पृथ्वी से लगभग १ अरब ५० करोड़ तारे दूरबीन की सहायता से देखने में समर्थ हुये हैं। हम यह जानते हैं कि सूर्य के चारो ओर घूमने वाले पिण्डों को ग्रह और ग्रहों के चारो ओर जो पिण्ड घूमते हैं वे उपग्रह कहलाते हैं। पर ये तारे क्या हैं? ये तारे ग्रह या उपग्रह नहीं हैं।

इन तारों में से सभी सूर्य से १००० गुना बड़े होंगे। तारों के पास सूर्य के समान ही अपनी रोशनी व ताप है। हमें किसी तारे का प्रकाश लाल दिखायी देता है तो किसी का नीला। इनमें से लाल रोशनी वाले तारे नीली रोशनी वाले तारों से बहुत बड़े हैं। हम सभी यह जानते हैं कि प्रकाश १ सेकण्ड में २९७६०० किमी० चलता है। अर्थात् १ सेकण्ड में प्रकाश की किरण पृथ्वी का ७ बार चक्कर लगा लेगी। आकाश के हम एक तारे को लेते हैं जिसका नाम 'आर्कट्यूरस' (Arcturus) है। यह सूर्य से ४१ गुना अधिक चमकीला है। यह इतनी

दूर है कि इसका प्रकाश धरती पर २०० वर्षों में आ पाता है। इस बात को विज्ञान की शब्दावली में इस प्रकार व्यक्त करेंगे कि यह तारा पृथ्वी से २०० प्रकाश वर्ष दूर है। एक दूसरा तारा 'एण्टेरीज' (Antares) है। जिसका व्यास सूर्य के व्यास से ४५० गुना अधिक है और इसकी चमक भी सूर्य की चमक से ४०० गुनी है। इसकी रोशनी पृथ्वी पर ३८० वर्षों में आ पाती है। अर्थात् अकबर के शासन काल में जो किरण 'एण्टेरीज' से चली होगी वह अब हमारी इस सदी में धरती में पहुँची होगी।

## राशियाँ क्या हैं ?

आकाश में किसी तारे को केवल उसके रंग-रूप से पहचानना आसान नहीं है। हम बहुधा तारे को उसकी स्थिति से पहचानते हैं। लगभग १८०० वर्ष हुये 'टोलेमी' (Ptolemy) नामक एक ज्योतिषी ने आकाश में लगभग ४८ तारा समूहों को पहचाना जो सदा एक साथ ही दिखायी देते हैं। भारतीय ज्योतिषियों ने इन्हीं समूहों को 'राशि' कहा और इनके नामों का आधार इस प्रकार लिया कि जिस समूह के तारों को आपस में रेखाओं से जोड़ देने पर बैल की सी आकृति बनी उसका नाम 'वृष' रखा। जिन तारों को आपस में रेखा द्वारा जोड़ कर धनुष का सा अकार बना उसका नाम 'धनु' रखा। इसीप्रकार किसी का नाम 'मकर' (भारत में यह मगर एवं यूरोपीय चित्रों में बकरे की आकृति का), किसी का नाम 'मीन'

(मछली सा), किसी का 'वृश्चिक' (बिच्छू सा), किसी का 'कर्क' (केकड़े सा), किसी का 'सिंह' (शेर का सा), किसी का 'कन्या' किसी का 'तुला', किसी का 'मिथुन' (जोड़ा) और किसी का 'मेघ' (मेढ़ा) रखा। इसी प्रकार किसी राशि का नाम 'श्वान' [कुत्ता सा], किसी का 'नौका' किसी का 'हंस', किसी का 'व्याध' [बहेलिया] और किसी का 'स्वस्तिक' रखा। टोलिमी ने ४८ राशियाँ दी इसके बाद ज्योतिषियों ने इसमें २० राशियाँ और बढ़ायी।

सब तारों या राशियों को हम एक साथ आकाश में नहीं देख सकते। ये तारे पूर्व से पश्चिम की ओर थोड़ा सा घूमते भी दिखायी देंगे। वस्तुतः बात तो यह है कि राशियाँ स्वयं तो नहीं घूमती, पर क्योंकि हमारी पृथ्वी घूमती है। इसलिये वे भी घूमती दिखायी देती हैं।

कुछ राशियाँ कुछ विशेष महीनों में ही दिखायी देती हैं। यह भी इसलिये है कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूम रही है और जिस महीने में पृथ्वी जिस स्थान पर होती है वहाँ से दीखने वाली राशियाँ हमें दिखायी पड़ जाती हैं।

लगभग ६८ राशियों की गणना ज्योतिषियों ने की है, पर इनमें से १२ राशियाँ हमारे लिये बड़ी महत्वपूर्ण हैं। इनका सम्बन्ध हमारे १२ महीनों से है। पृथ्वी की परिक्रमा के इस गोल मार्ग को बारह बराबर भागों में बाँट दिया गया है। और उस खण्ड में जो राशि स्थित दिखायी दी उसके नाम पर उस खण्ड का भी नाम रख दिया गया। जितने दिन पृथ्वी इस खण्ड पर रही उतने दिनों का वह 'सौर मास' कहलाया। बारह राशियाँ ये हैं—

- |                      |                       |
|----------------------|-----------------------|
| १- मेघ (Aries)       | २- वृष (Jaurus)       |
| ३- मिथुन (Gemini)    | ४- कर्क (Carcur)      |
| ५- सिंह (So)         | ६- कन्या (Virgo)      |
| ७- तुला (Subra)      | ८- वृश्चिक (Scorpins) |
| ९- धनु (Sagittarius) | १०- मकर (Capricornus) |
| ११- कुम्भ (Aquarius) | १२- मीन (Pisces)      |

यदि इन राशियों को आकाश मण्डल में पहचानने

का प्रयत्न करें तो यह मत समझें कि इन राशियों के जैसे नाम हैं सचमुच वैसी ही इनकी आकृति होगी। कागज पर यदि बहुत से बिन्दु बिखेर दिये जायें तो उन बिन्दुओं से अनेक आकृतियाँ बनाई जा सकती हैं। इसी प्रकार आकाश के तारों को पहचानने के लिये ज्योतिषियों ने अनेक आकृतियाँ की कल्पना की है।

मेघ राशि और उसके पूर्व में वृष राशि जाड़े और वसंत में दक्षिण की ओर दिखायी देते हैं। मिथुन राशि उसके पूर्व में होती है। कर्क राशि में तारों का खुला समूह होता है। और फिर इसके पूर्व में सिंह राशि है। सिंह के बाद कन्या है। इसके भीतर कई कुन्तलाकार नीहारिकायें हैं। तुला में कोई विशेष चमकीला तारा नहीं है पर वृश्चिक में एक लाल चमकता तारा दिखाई देगा जिसे एण्टरीज [Antares] कहते हैं। यह तारा आकाश गंगा में स्थित है। इसके बाद धनु भी इसी आकाश गंगा में है। धनु के बाद क्रमशः मकर, कुम्भ, व मीन हैं जिनमें कोई उल्लेखनीय बात नहीं है। यूरोपीय नक्षत्रों में मकर राशि को अज [बकरा] के चित्र से व्यक्त करते हैं। इन राशियों के अतिरिक्त कुछ अन्य राशियाँ भी बहुत प्रसिद्ध हैं। जैसे वल्केयूला (Vulpecula) जिसे लोपाश या लोमड़ी की आकृति देते हैं। इक्यूलियस (Equuleus) को घोड़ा [अश्व] बनाते हैं। ल्यूपस (Lupus) को कुत्ता [श्वान], हरक्यूलीज (Hercules) को भीम [पहलवान], लिरा (Lyra) को वीणा, ओफ्यूकस (Ophiuchus) को सर्पधारी और बूटीज (Bootes) को गोप या ग्वाला कहते हैं। जिसे भारत में मृगसिरा नक्षत्र कहा जाता है; इसे अंग्रेजी में ओरियन (Orion) कहते हैं। इस शब्द का अर्थ बलवान शिकारी है।

प्रकृति की लीला इतनी विचित्र है कि जिसकी गहराइयों का ओर-छोर हमें ज्ञात करना असम्भव है परन्तु जो प्रकृति हमारे रूपकों की दुनियाँ में सजी-संजीई बैठी है उसे उभार कर निखार कर हमें ऊपर लाना है। विज्ञान एक काल्पनिक रूप से यथार्थ रूप में व स्थूल से सूक्ष्म में ले जाने वाला विषय है इसके द्वारा हम अपने सपनों को साकार कर सकेंगे।

# भारतीय प्रक्षेपास्त्रों का संक्षिप्त परिचय

राजेश अवस्थी

नवम 'क'

[वैज्ञानिक प्रगति के साथ-साथ अत्याधुनिक घातक हथियारों का आविष्कार भी हुआ है। अब समय जमीनी लड़ाई का नहीं है। हवा से हवा में मार करने वाले प्रक्षेपास्त्रों का है। ऐसे प्रक्षेपास्त्रों के सम्बन्ध की जानकारी कोमलमति लेखक ने अपने प्रकार से दी है।]

—सम्पादक

धरती से हवा (Surface to Air) में मार करने वाले भारत के अत्याधुनिक बहुलक्षीय प्रक्षेपास्त्र 'आकाश' का सफल परीक्षण १४ अगस्त, १९९० को अन्तरिम परीक्षण रेंज चाँदीपुर [उड़ीसा] से किया गया।

मिसाइलों के निर्माण के लिये स्व० श्रीमती इन्दिरा गांधी [तत्कालीन प्रधानमंत्री] ने जुलाई, १९८३ ई. में एक परियोजना की आधारशिला रखी—जिसका नाम था—

समेकित निर्देशित प्रक्षेपास्त्र विकास कार्यक्रम :

(Integrated Guided Missile Development Programme : IGMDP)

इस योजना की शुरुआत के लिये उन्होंने तत्काल ३८० करोड़ रुपये की धनराशि स्वीकृत की थी। ६ वर्ष की लघु अवधि में ही भारत ने अपने पाँच प्रक्षेपास्त्रों का परीक्षण कर डाला।

'आकाश' भारत में 'अभिकल्पित' पाँचवीं मिसाइल है। अन्य चार प्रक्षेपास्त्र हैं—'पृथ्वी त्रिशूल' अग्नि और 'नाग'। पृथ्वी [२२ फरवरी १९८८ ई० को सफल परीक्षण] कम दूरी पर धरती से धरती पर मार करने वाली मिसाइल है। त्रिशूल कम दूरी की तुरन्त कार्यकारी, बहुउद्देशीय, धरती से हवा में मार करने वाली मिसाइल है। नाग टैंक भेदी मिसाइल है और अग्नि [२२ मई १९८९ ई० को सफल परीक्षण] मध्यम दूरी (Inter-mediate range) की धरती से धरती पर मार करने वाली मिसाइल है।

लम्बी दूरी के धरती से हवा में मार कर सकने वाले प्रक्षेपास्त्र 'आकाश' का विकास हैदराबाद की 'रक्षा अनुसंधान और विकास प्रयोगशाला' (Defence Reserch & Development Laboratory, D. R. D. L.) में किया गया है।

भारतीय प्रक्षेपास्त्रों की श्रंखला में टैंक भेदी 'नाग' पर बहुत पहले से कार्य कर रहा है। भारत के प्रथम घरेलू, तीसरी पीढ़ी के टैंक भेदी मिसाइल 'नाग' का सफल परीक्षण २९ नवम्बर १९९० ई० को चाँदीपुर में किया गया।

नाग को नाटो अथवा वारसा सन्धि के शस्त्रागारों में इस तरह की मिसाइलों से कहीं अधिक सक्षम बताया गया है। इसका मूल मन्त्र है—'दागो और भूल जाओ' (Fire & Forget)। उच्च आक्रमण क्षमताओं से युक्त मिसाइल 'नाग' को भू-आधारित किसी भी प्रक्षेपास्त्र वाहन अथवा हेलीकाप्टर से भी प्रक्षेपित किया जा सकता है। चार किमी० की दूरी से टैंकों को नष्ट करने में 'नाग' सक्षम है। कुछ और परीक्षणों तथा मारक क्षमता में वृद्धि करने के बाद इसे भारतीय वायुसेना में १९९४ ई० के आरम्भ में शामिल किये जाने की आशा है। यह फ्रांस-निर्मित 'मिलान' टैंक भेदी प्रक्षेपास्त्र का अनुपूरक सिद्ध होता है। यह चार किमी० के क्षेत्र में किसी भी टैंक को ध्वस्त करने में पूर्णतः सक्षम एवं नियन्त्रित प्रक्षेपास्त्र है।

# लेसर किरणें [LASER RAYS]

राजेश अवस्थी

नवम 'क'

[लेसर किरणें आज के वैज्ञानिक युग की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इसका उपयोग सैन्य-विज्ञान, प्रौद्योगिकी तथा चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में अत्यंत उपयोगी है।] —सम्पादक

आधुनिक युग चमत्कारी प्राद्योगिकी और उपयोगी विज्ञान का युग है। लेसर किरणें इस शताब्दी की एक बहुत ही महत्वपूर्ण वैज्ञानिक उपलब्धि है। इन किरणों की विलक्षण गुणों के कारण इन्हें सैनिक विज्ञान, प्राद्योगिकी तथा चिकित्सा विज्ञान में अनेक कार्यों के लिये प्रयोग किया जा रहा है। आज वैज्ञानिकों ने भाँति-२ की लेसर किरणों का आविष्कार किया है जिन्हें टैंकों की दूरी मापने, निश्चित स्थान पर बम गिराने, मिसाइलों को निर्देशित करने, समुद्र के भीतर पनडुब्बियों का पता लगाने और विनाशकारी अस्त्र-शस्त्रों के रूप में प्रयोग किया जा रहा है। उद्योगों में धातुओं के काटने उनमें छिद्र करने तथा जोड़ने के लिये भी इन किरणों को उपयोग में लाया जा रहा है। आयुर्विज्ञान में तो इन किरणों ने क्रान्ति उत्पन्न कर दी है। इन्हें नेत्र रोगों, उदर रोगों, दन्त-क्षय तथा कैंसर जैसे घातक रोगों की चिकित्सा के लिये उपयोग में लाया जा रहा है। फोटोग्राफी, होलोग्राफी आदि अनेक क्षेत्रों में इन किरणों के उपयोगों ने एक नया अध्याय जोड़ दिया है। इसके अतिरिक्त विज्ञान के मूलभूत अनुसंधानों, संचार माध्यमों कम्प्यूटर, टेलिविजन, मौसम विज्ञान, प्रदूषण आदि क्षेत्रों में लेसर किरणें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

लेसर किरणों का सर्वाधिक रचनात्मक उपयोग अन्तरिक्ष अनुसंधानों में हो सकता है क्योंकि इन किरणों का एक विचित्र लक्षण यह है कि लाखों मील दूर जाने

पर भी ये किरणें बहुत कम अपसरित होती हैं। वैज्ञानिक परीक्षणों से पता चला है कि पृथ्वी से चन्द्रमा की सतह तक पहुँचने पर ये किरणें मात्र ३ किमी० व्यास में ही फैलती हैं। इसी गुण को प्रयोग में लाकर चन्द्रमा पर पहुँचने के लिए सन् १९६९ ई० में की गई अपोलो-II की उड़ान में चन्द्रमा की सतह पर एक रिट्रो-परिवर्तक (Retro-reflector) की स्थापना की गई और धरती से लेसर किरणें भेजकर चन्द्रमा की सही दूरी मापी गई। भविष्य में यह सम्भव है कि लेसर किरणों की सहायता से चन्द्रमा, मंगल, बुध आदि ग्रहों की वाह्य सतहों का अध्ययन सरलता से हो सकेगा और जब तक मनुष्य इन ग्रहों-उपग्रहों पर नहीं पहुँच पाता, तब तक वह बैठ कर ही उनके बारे में लेसर किरणों की सहायता से ऐसी बहुमूल्य जानकारी प्राप्त कर लेगा, जो उसके भविष्य के कार्यक्रमों में निश्चय ही अत्यन्त सहायक सिद्ध होगी।

लेसर (Lasor) वास्तव में ऊर्जा रूपान्तरण (Energy Conversion) की एक ऐसी युक्ति है जिसके द्वारा विद्युत-चुम्बकीय ऊर्जा या विद्युत ऊर्जा को विशेष गुण वाली विद्युत चुम्बकीय किरणों में बदला जाता है। किसी भी स्रोत से निकलने वाली लेसर किरणों में एक-वर्णता (Monochromaticity), दिशात्मकता (Directionality), सम्बद्धता (Coherence) और उच्च-तीव्रता (High Intensity) के लक्षण होते हैं। लेसर

शब्द अंग्रेजी के पाँच अक्षरों से मिलकर बना है। ये अक्षर उस प्रक्रिया को प्रदर्शित करते हैं जिसके द्वारा ये किरणें उत्पन्न होती हैं। इस प्रक्रिया का पूरा नाम है—

### “Light Amplification by Stimulated Emission of Radiation.”

“(त्रिकिरण के उद्दीपित उत्सर्जन द्वारा प्रकाश का प्रवर्धन)”

#### विश्व की प्रथम लेसर—रूबी लेसर :

संसार के सर्वप्रथम लेसर का निर्माण अमेरिका की ‘टी० एच० मेनन’ नामक वैज्ञानिक ने सन् १९६० ई० में किया था। लेसर से पूर्व सन् १९५४ ई० में ‘मेसर (Maser ; Microwave Amplification by Stimulated Emission of Radiation)” का आविष्कार हो चुका था। मेसर में सूक्ष्म तरंगें पैदा होती हैं जबकि लेसर प्रकाश-किरणें उत्पन्न होती हैं। लेसर के आविष्कार की प्रेरणा मेसर से ही प्राप्त हुई। सन् १९६० ई० में ‘मेनन’ ने प्रथम ‘रूबी’ लेसर बनाने में सफलता प्राप्त की थी।

#### लेसरों के प्रकार (Types of Laser)

संसार के प्रथम लेसर के आविष्कार के पश्चात् और इसके विशिष्ट लक्षणों के कारण संसार के सभी देशों में विभिन्न प्रकार के लेसर विकसित करने की एक होड़ सी लग गई। इस प्रतिस्पर्धा में अनेक प्रकार के लेसरों को तैयार किया गया। इन लेसरों का वर्गीकरण प्रयोग होने वाले लेसर माध्यम और उत्तेजित करने के लिये काम आने वाले ऊर्जा स्रोत के आधार पर किया जाता है। विभिन्न प्रकार के लेसरों को सामान्यतः निम्नांकित वर्गों में बाँटा जाता है—

- १- प्रकाशतः उर्जित ठोस अवस्था लेसर (Solid state Laser)
- २- गैस लेसर (Gas Laser)
- ३- अर्द्धचालक लेसर (Semiconductor Laser)
- ४- डाय और अन्य लेसर (Dye & other Laser)

किसी भी लेसर के तीन मुख्य भाग होते हैं लेसर किरणें पैदा करने वाला माध्यम, इस माध्यम को उत्तेजित करने वाला ऊर्जा स्रोत तथा रेजोनेटर केविटी।

लेसर किरणें पैदा करने वाले माध्यम में पदार्थ ठोस, द्रव या गैस किसी भी अवस्था में हो सकता है। रूबी नियोडिमियम ग्लास, हीलियम, नियान, आर्गन, कार्बन डाय-आक्साइड, गैलियम, फास्फाइड, बहुत सी डायॉ आदि ऐसे पदार्थ हैं, जो लेसर किरणें उत्पन्न करने के लिये माध्यम के रूप में प्रयुक्त होते हैं। इन पदार्थों को उत्तेजित करने के लिये आमतौर पर जीनॉन फ्लैश लैम्प क्रिप्टॉन आर्क लैम्प या विद्युत ऊर्जा काम में लायी जाती है।

#### १- प्रकाशतः उर्जित ठोस अवस्था लेसर (Optically Pumped Laser)

ये वे लेसर हैं जिनमें पदार्थ को उत्तेजित करने के लिये ऊर्जा प्रकाश के रूप में दी जाती है। रूबी लेसर इसी वर्ग में आता है। इसके अतिरिक्त नियोडिमियम ग्लास व नियोडिमियम याग इस वर्ग के बहुत ही महत्वपूर्ण लेसर हैं। अलेक्जेन्डराइट, कलर सेन्टर और अरबियम लेसर भी इसी के अन्तर्गत आते हैं।

#### २- गैस लेसर (Gas Laser)

इस वर्ग में प्रयोग होने वाले लेसर पदार्थ विभिन्न गैसों हैं। विश्व के सबसे पहले गैस लेसर का आविष्कार सन् १९६१ ई० में हुआ था। इस लेसर के निर्माण में हीलियम तथा नियान गैसों का मिश्रण प्रयोग में लाया गया था। तत्पश्चात् आर्गन, क्रिप्टन, जीनॉन, नाइट्रोजन, कार्बन डाय-आक्साइड आदि बहुत सी गैसों से विभिन्न रंगों की लेसर किरणें प्राप्त की जा चुकी हैं। गैस लेसर वर्ग में कुछ और भी जटिल प्रकार के लेसर बनाये जा चुके हैं।

#### ३- अर्द्धचालक लेसर (Semiconductor Laser)

सन् १९६२ में प्रथम अर्द्धचालक लेसर का जन्म हुआ। सबसे पहले गैलियम अर्सेनाइड नामक अर्द्धचालक में लेसर क्रिया को सम्पन्न किया गया। तत्पश्चात् इंडियम एण्टिमोनाइड आदि कई अर्द्धचालकों से प्रकाशतः उर्जित लेसरों की तुलना में कम शक्ति प्राप्त होती है और इनको बनाना भी काफी कठिन होता है।

## आग्रह

परितोष श्रीवास्तव  
द्वादश 'ख'

[जीवन की तमाम सुविधाओं को नकारते हुये भावुक कवि संघर्षों को स्वीकारना  
चाहता है।]

—सम्पादक

मोती जिसमें मिल जाये,  
उस सीपी की मुझे 'चाह' नहीं  
बूँद मिले दो बूँद मिले  
खारे - सागर के खारे - जल की ॥  
मुझे सीपी की तलाश नहीं ।  
मोती की भी नहीं ।  
सागर के खारे जल की  
बूँद - दो बूँद ही पर्याप्त हैं मेरे लिये ।  
मिले बयार शीतल पवन की  
मन के एकान्त आँगन में  
जिसके किसी कोने में छिपी थी  
किसी की मनुहार ।  
मुझे नहीं चाहिये नीरस उपहास से अण  
इस तपते मन के उजड़े से,  
रूखे - सूखे प्रांगण में,  
सूखी कलियां खिल जायें फिर  
मिले किरण आशाओं की,  
मिलें मुझे बोझिल आँखों में  
कृछ बूँदे शरद - वारि की ॥  
खारे सागर की  
बूँद - दो बूँद ही पर्याप्त है मेरे लिये  
लेकिन शंकित , सागर में  
उसके अप्रतिहत कंपन से ॥  
मिले मुझे बस ऐसा 'आँगन'  
जिसमे हो ज्योति सूर्य की  
खिलें विविध रंगों के पुष्प  
इसी पवित्र 'आँगन' में हरियाली हो ।  
रंगों का उत्सव हो ।

# क्वार्क (QUARK) क्या है ?

अमित राय

नवम 'क'

[पदार्थ की संरचना एक ऐसा रहस्य है जो विज्ञान के लिये चुनौती है। आज का विज्ञान परमाणु की सूक्ष्मताम इकाई की खोज में लगा है और यह क्वार्क तक की यात्रा तय कर सकता है।]

—सम्पादक

हम जानते हैं कि प्रत्येक पदार्थ छोटे-छोटे कणों से मिलकर बना है। इन कणों को परमाणु कहते हैं। जो अत्यन्त सूक्ष्म होते हैं। बीसवीं शताब्दी के शुरू में वैज्ञानिकों ने यह भी पता लगा लिया कि परमाणु और भी अत्यन्त सूक्ष्म कणों से मिलकर बने हैं। ये अत्यन्त सूक्ष्म कण हैं : इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन व न्यूट्रॉन। इन कणों को हम मूल कण कहते हैं। इन मूल कणों के अतिरिक्त वैज्ञानिकों ने और भी बहुत से मूल-कणों का पता लगाया है। इनमें मीसोन (Meson), म्यूऑन (Muon), न्यूट्रिनो, पोजीट्रॉन (Positron) आदि भी मुख्य मूल कण ही हैं।

कुछ ही वर्ष पहले वैज्ञानिकों ने यह पता लगाया है कि ये अत्यन्त सूक्ष्म कण और भी बहुत से सूक्ष्म कणों से मिलकर बने हैं। मूल कणों को बनाने वाले इन कणों को क्वार्क (Quark) का नाम दिया गया है। अभी तक क्वार्क केवल काल्पनिक कण हैं। इन्हें प्रयोगशालाओं के परीक्षणों में नहीं देखा जा सका है। लेकिन कुछ वैज्ञानिक तथ्यों से यह निश्चित हो गया है कि क्वार्क नामक कणों का अस्तित्व है। और क्वार्क के मिलने से ही दूसरे कण बने हैं। फोटोन (Photon), इलेक्ट्रॉन (Electron), म्यूऑन (Muon) और न्यूट्रिनो (Neutrino) नामक मूल कणों को छोड़कर शेष सभी मूल कण क्वार्कों से मिलकर बने हैं।

क्वार्क मूल कणों का निर्माण करने वाले काल्पनिक कण हैं जिन पर आंशिक-आवेश (Fractional Charge) होता है। इनके विषय में सर्वप्रथम १९६४ में अमरीका के भौतिक शास्त्रियों, मूरे गेल-मान (Murray Gell-Mann) और जार्ज ज्वीग (George

Jrveig) ने कल्पना की थी। उन्होंने कहा अधिकतर मूल कण क्वार्क नामक कणों से मिलकर बने हैं।

वैज्ञानिकों की कल्पना के अनुसार क्वार्क चार प्रकार के होते हैं। प्रत्येक क्वार्क का एक एन्टी क्वार्क है। सन् १९७४ तक केवल तीन ही प्रकार के क्वार्क ज्ञात थे। जिनमें से दो लगभग समान द्रव्यमान के थे। जो प्रोटोन न्यूट्रॉन व पाई मीसोन का निर्माण करते हैं। तीसरा क्वार्क भारी द्रव्यमान का था जो के. मीसोन व हाइपर-रॉन जैसे मूल कणों को बनाता है। इन तीन क्वार्कों का नाम क्रमशः अपक्वार्क (Up Quark), डाउन क्वार्क (Down Quark) और स्ट्रेन्ज क्वार्क (Strange Quark) रखा गया। इन्हें अंग्रेजी वर्णमाला के **U**, **D**, व **S** अक्षरों से प्रदर्शित किया जाता है। सन् १९-७४ में एक क्वार्क का ओर पता लगाया गया, जिसे चार्म क्वार्क (Charm Quark) के नाम से पुकारा गया। इसे C अक्षर से प्रदर्शित करते हैं। एन्टी-क्वार्कों को इन अक्षरों के ऊपर एक छोटी-सी रेखा खींच कर प्रदर्शित किया जाता है। (**U**, **D**, **S**, **C**)

चारों क्वार्कों (**U**, **D**, **S**, **C**) पर इलेक्ट्रॉन की तुलना में  $+2/3$ ,  $-1/3$ ,  $-1/3$ , और  $+2/3$  आवेश होता है। एन्टी क्वार्कों पर इसके विपरीत आवेश होता है। सभी क्वार्कों का अपने अक्ष पर घूमने का मान  $1/2$  होता है।

विभिन्न क्वार्कों के मिलने से अलग-अलग मूल कण बनते हैं। जैसे : **U**, **U**, **D**, क्वार्कों के मिलने से प्रोटोन बनते हैं। **U**, **D**, **D**, क्वार्कों से न्यूट्रॉन बनते हैं। प्रत्येक मीसोन एक क्वार्क और एन्टी क्वार्क से मिलकर बना है। वैज्ञानिक ऐसे प्रयोगों की खोज में हैं, जिनसे क्वार्कों की उपस्थिति को देखा जा सके। \*

# अति सघन अदृश्य आकाशीय पिण्ड 'ब्लैक होल'

प्रवीण कुमार सिन्हा  
दशम 'क'

[खगोल शास्त्र में 'ब्लैक होल' को रहस्यमय पिण्डों के रूप में माना जाता है। हजारों वर्ष पहले भारतीय ज्योति-विज्ञान में पाराशर जंसे ऋषि ने शायद इन्हीं आकाशीय पिण्डों को 'श्याम-विवर, कहा था।] —सम्पादक

सामान्यतः 'ब्लैक होल' या 'काला छिद्र' या 'कुष्ण विवर' एक भ्रान्ति पैदा करता है कि यह एक सुरंग या गुफा का नाम है। वस्तुतः शुरू में ऐसी धारणा भी थी कि 'ब्लैक होल' दूसरे ब्रह्माण्ड में जाने का मार्ग है, लेकिन अब यह स्पष्ट रूप से ज्ञात हो गया है कि 'ब्लैक होल' कोई सुरंग या गुफा नहीं है, बल्कि अति सघन आकाशीय पिण्ड है। यह एक ऐसा अन्धकारमय प्रबल क्षेत्र है, जिसके आसपास से कोई भी आकाशीय पिण्ड गुजरता है तो उसे यह अपने मार्ग से विचलित कर देता है और यदि वह पिण्ड आकार में छोटा होता है तो वह 'ब्लैक होल' में समा जाता है। आस-पास के तारों को भी अपनी ओर खींचकर यह उन्हें उदरस्थ करता रहता है, इसलिए इसे 'ब्लैक होल' की संज्ञा दी गई।

खगोलविदों का मत है कि हमारी आकाश गंगा में अनेक 'ब्लैक होलों' का अस्तित्व होना चाहिए।

## ब्लैक होल की खोज :

यद्यपि सर्वप्रथम 'लाप्लास' नामक वैज्ञानिक ने सन् १७९८ में सैद्धान्तिक रूप से 'ब्लैक होल' के अस्तित्व की सम्भावना व्यक्त की थी, और इसका वास्तविक अध्ययन सन् १९६० के कुछ पहले प्रारम्भ हुआ। उस समय खगोलविदों ने तारों और उनके सौर-मण्डल के

सदस्यों के एक विशेष विन्दु हर असामान्य व्यवहार का लक्ष्य किया था। यह पिण्ड अपने निश्चित पथ पर घूमते हुये उस विशेष विन्दु पर आकर अपने पथ से कुछ गुजर जाने पर पुनः सामान्य पथ पर घूमने लगते हैं। ऐसा क्यों होता था? उस समय के खगोलविद् इस गुत्थी को मुलज्ञाने में असमर्थ थे। सन् १९६७ में सुग्राही दूरदर्शी यन्त्रों की सहायता से पल्सर तथा न्यूट्रान तारों का पता चला।

'ब्लैक होल' के सम्बन्ध में प्रायोगिक रूप से कुछ जानने के लिये अमेरिका की 'नेशनल एरोनॉटिक्स एण्ड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन' ने 'उडुरु' नामक पहला खगोलीय कृत्रिम उपग्रह बनाया, जिसे इटली के 'एयरो स्पेस रिसर्च सेन्टर' से १२ दिसम्बर १९७० को अन्तरिक्ष में छोड़ा गया। 'उडुरु' ने अपने रेडियो टेलिस्कोपो से ऐसे २०० तारों के स्रोतों का पता लगाया जो एकसरे और औ रक्त तरंगों उत्सर्जित करते हैं। इनमें हरक्यूलिस एक्स-1, सैतोरस एक्स-3, लिगनस एक्स-1, लिगनस एक्स-3 आदि प्रमुख हैं।

खगोलविदों का विश्वास है कि १००० किमी. के ब्लैक होल भी सम्भव है, जिनका घनत्व कल्पना से परे होगा। इसका अनुमान हम इस तथ्य से लगा सकते हैं कि यदि हमारी पृथ्वी ब्लैक होल बन जाती तो इसकी

त्रिज्या १ सेमी० के लगभग हो जाती जबकि इसकी वर्तमान त्रिज्या ६४०० किमी. है और द्रव्यमान  $६ \times १०^{३१}$  किग्रा० ।

अमेरिका के 'ओहियो स्टेट विश्वविद्यालय' के दो खगोलविदों 'बडले पोटरसन' और 'फरलेण्ड' ने लगभग ढाई वर्ष पहले 'N.C.C. - ५५४८' नामक आकाश गंगा का अवलोकन करते समय अनायास ही 'ब्लैक होल' को खोज लिया तथा उसे तारे निकलते हुए देखा ।

### ब्लैक होल का निर्माण—

जब हीलियम तथा अन्य तत्व जलकर राख हो जाते हैं, तब तारे का केन्द्रिय भाग सिकुड़कर अत्यन्त घना हो जाता है । फिर एक ऐसी अवस्था आती है जब इलेक्ट्रानों का दाब सिकुड़ने की इस प्रक्रिया को रोक देता है और तारा बौना होकर 'ह्वाइट ड्वार्फ' की अवस्था में पहुँचता है । ऐसा तारा लगभग हमारी पृथ्वी के आकार का होता है ।

इलेक्ट्रान प्रोट्रान के साथ संयुक्त होकर न्यूट्रानों में रूपान्तरित हो जाते हैं । कुछ तारों में सिकुड़ने की प्रक्रिया यहीं रुक जाती है । अधिकतर न्यूट्रानों से निर्मित ऐसा पिण्ड 'न्यूट्रान नक्षत्र' कहलाता है । इसका आकार 'श्वेत वामन' की तुलना में ५०० वाँ हिस्सा ही रह जाता है । न्यूट्रान नक्षत्र मुश्किल से १० किलोमीटर की त्रिज्या का होता है । इसके एक चम्मच द्रव्य का भार

२० करोड़ हाथी के बराबर होता है । परन्तु द्रव्य के घनत्व की यही सीमा नहीं है । तारे का प्रारम्भिक द्रव्यमान यदि सूर्य के द्रव्यमान के १० गुने से अधिक है तो न्यूट्रान तारे की अवस्था के आगे भी तारे का सिकुड़ना जारी रहेगा । ऐसा तारा मुश्किल से ३ किलोमीटर के आकार का हो जायेगा और तब इसके एक चम्मच द्रव्य का भार खरबों टन के बराबर होता है । ऐसा ही पिण्ड 'ब्लैक होल' कहलाता है ।

### ब्लैक होल की पहचान—

'ब्लैक होल' के स्थान का पता लगाने के लिए वैज्ञानिक विद्युत चुम्बकीय तरंगें भेजते हैं । यदि ये तरंगें अकारण ही मुड़ जाती हैं, तो वैज्ञानिक समझ जाते हैं कि अमुक स्थान पर 'ब्लैक होल' है । इस ब्लैक होल को न तो हम आँख से देख सकते हैं और न ही किसी यंत्र की सहायता से । ऐसा इसलिए है कि सूचना लाने के लिए भेजी गयी प्रकाश किरणें और रेडियो तरंगें दोनों ही ब्लैक होल में समा जाती हैं । ज्वारीय प्रतिक्रिया द्वारा भी ब्लैक होल की पहचान की जाती है ।

यद्यपि वैज्ञानिकों ने आकाश में दर्जनों ब्लैक होल जैसे स्थान खोज निकाले हैं, फिर भी ब्लैक होल के बारे में हमें पर्याप्त जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी है कारण, कि ब्लैक होल की आन्तरिक प्रक्रिया अभी भी वैज्ञानिकों के लिए रहस्य बना हुआ है ।



## डापलर प्रभाव किसे कहते हैं ?

कैलाश उपाध्याय

—नवम 'ख'

[वैज्ञानिक अनुसंधान-सम्बन्धी पाठ्य विषयक सिद्धान्त को अपनी शैली में प्रस्तुत करने का एक प्रयास ।]

—सम्पादक

ध्वनि प्रकाश या रेडियो-तरंगों की आवृत्ति में होने वाले आभासी परिवर्तन को, जो स्रोत, दर्शक या माध्यम की गति के कारण पैदा होता है, डापलर प्रभाव कहते हैं। जब हमारी ओर आती हुई कोई रेलगाड़ी सीटी बजाती है, तो उसकी आवाज की पिच ऊंची होती प्रतीत होती है। परन्तु यदि रेल हमसे दूर जा रही हो, तो उसी स्थान से पिच कम होती हुई लगती है। पर वस्तुस्थिति यह है कि आवाज की पिच दोनों स्थितियों में एक ही होती है। पिच का परिवर्तन क्यों लगता है। इस तथ्य की विवेचना पहले-पहल १८४२ में एक आस्ट्रियायी भौतिक शास्त्री क्रिश्चियन जोहान्न डापलर ने की थी। इसी के नाम पर इसे डापलर प्रभाव का नाम दिया गया है।

डापलर प्रभाव का आधार—सिद्धान्त यह है कि ध्वनि-तरंगों के रूप में यात्रा करती है। ध्वनि की पिच इसकी आवृत्ति पर निर्भर करती है। आवृत्ति ध्वनि-तरंगों की उस संख्या को कहते हैं, जो प्रति सेकण्ड कानों से टकराती है, जब ध्वनि स्रोत हमारी तरफ बढ़ रहा होता है। तो स्रोत से निकली प्रत्येक ध्वनि-तरंग को पहले निकली तरंग से कम रास्ता तय करना

होता है। इस प्रकार प्रत्येक स्रोत के स्थिर होने की अपेक्षा श्रोता के कानों तक जल्दी पहुँच जाती है। परिणाम यह होता है कि तरंगों के बीच की दूरी कम होती जाती है। अतः इनकी आवृत्ति या पिच अनुपात में ऊँची होती जाती है। जैसे ही रेल श्रोता से आगे निकल जाती है यानी दूर जाने लगती है, समान्य स्थिति के विपरीत प्रत्येक तरंग कुछ लम्बी हो जाती है, जिससे पिच कम हो जाती है।

किसी और तरंग गति में भी यही होता है। प्रकाश भी तरंगों में यात्रा करता है। डापलर प्रभाव प्रकाश में भी देखा गया है, जबकि प्रकाश स्रोत (जैसे दूर स्थित तारा) गतिशील हो। उन तारों के स्पैक्ट्रम में जो धरती से दूर जाते होते हैं रेड शिफ्ट (आवृत्ति में गिरावट) होती जाती है। इसके विपरीत जो तारे धरती की ओर गतिशील होते हैं, उनके स्पैक्ट्रम में ब्लू शिफ्ट हो जाती है। तारे स्पैक्ट्रम की रेखाओं के पैटर्न में शिफ्ट होना खगोल शास्त्रियों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है क्योंकि इससे तारों की दिशा और वेग दोनों के विषय में ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

# यह भी आपने कभी सोचा है ?

हिमांशु कटियार  
नवम 'ख'

[यन्त्र-तन्त्र बिखरी हुई ज्ञानात्मक निधियों का एक छोटा सा संकलन] ]

-सम्पादक

## वायुयान हवा में कैसे टिकता है ?

वायुयान हवा से भारी मशीन होती है फिर भी वह हवा में तैरता रहता है जिसका प्रमुख कारण है, उसका चारो ओर से खिंचाव । जब एक हवाई जहाज उड़ रहा होता है, तो उसे एक ही समय में ऊपरनीचे आगे-पीछे चारो ओर खींचा जा रहा होता है । उसे इस प्रकार कौन खींचता है, यह जानने के लिए निम्नांकित बातों का समझना आवश्यक है ।

वास्तव में उड़ान के दौरान वायुयान पर चार बल कार्य करते हैं । १-भार [Weight] २-उत्थापक बल [Lift] ३-प्रणोद [Thrust] ४-खिंचाव [Drag] । भार वह गुरुत्व बल है जो जहाज को नीचे की ओर खींचता है । उत्थापक बल जहाज को ऊपर ले जाता है । खिंचाव-बल जहाज को पीछे की ओर खींचता है । प्रणोद आगे की ओर ढकेलता है । प्रणोद प्रोप्रेलर्स से पैदा किया जाता है । हवाई जहाज दो प्रमुख कारणों से बराबर उड़ता रहता है :-

१-इंजिन द्वारा पैदा किया गया प्रणोद बल खिंचाव बल के बराबर होता है ।

२-पंखों द्वारा पैदा किया गया बल भार के बराबर होता है ।

हवाई जहाज के तीन प्रमुख भाग होते हैं :-पंख, बाडी, पृष्ठ भाग या एसेम्बली ।

पंख हवा के दबाव की मदद से जहाज को ऊपर आकाश में उठा देते हैं । एयलेरोन पंखों पर लगी पंख-ड्रियां होती हैं, जो मुड़ते समय जहाज को संतुलित रखने का कार्य करती है पंखों पर और पंखड्रियां लगी होती हैं । जो हवाई जहाज के उत्थापक बल को उतरने या उड़ना आरम्भ करने के समय बढ़ाती है । उड़ान के दौरान फिन्सयान को स्थिर रखते हैं । तथा स्टेबलाइजर यान को ऊपर नीचे जाने से रोकता है । तथा यान हवा में टिका रहता है ।

° ° ° ° °

## बिल्ली क्यों घुरघुराती है ?

जब कोई बिल्ली सन्तोष अथवा आनन्द का प्रदर्शन करना चाहती है तब वह घुरघुराती है ।

घुरघुराहट एक किस्म की धीमी एवं निरन्तर की जाने वाली गुंजन होती है । जिसका बिल्ली की वास्तविक आवाज से कोई सम्बन्ध नहीं होता । जन्म के कुछ समय बाद तक बिल्ली के बच्चे न तो देख पाते हैं और न ही सूँघ पाते हैं । इन स्थितियों में बिल्ली की घुरघुराहट ही बिल्ली व बच्चों के बीच सम्बन्ध रखने का कार्य करती है । इस तरह घुरघुराना एक तरह की अभिलक्ष्यी युक्ति है ।

## कोई बिल्ली कैसे घुरघुराती है ?

बिल्ली के स्वर तारों के कम्पनों से घुरघुराहट पैदा होती है। जब कोई बिल्ली अपने फेफड़ों में हवा भरती है तो वह हवा उसके ध्वनि-बाक्स से होकर गुजरती है। जहाँ उसके स्वर तार होते हैं। अगर बिल्ली सन्तोष या आनन्द का प्रदर्शन करना चाहती है। तो वह साँस लेते समय हवा अन्दर-बाहर गुजारते हुये अपने स्वर तारों को कम्पित करती है। और जब वह घुरघुराना नहीं चाहती है। तब ध्वनि बाक्स से गुजरने वाली हवा स्वर तारों पर असर नहीं डालती। अतः इस किस्म की आवाज ही नहीं पैदा होती।

## दुनियाँ में सबसे आगे :

### सबसे ऊँचाई पर बना होटल :

संसार का सर्वोच्च होटल धरातल से ७२३ फुट ऊपर ११९९ कमरे वाला ७० मंजिला सेन्ट्रल प्लाजा है। अटलांटा में स्थित इस होटल की लागत लगभग ५० करोड़ रुपये है।

### दुनियाँ की सबसे मूल्यवान मूर्ति :

बैकाक, थाईलैण्ड स्थित वार्तात्रिमित्र मन्दिर में १५ वीं शताब्दी की बुद्ध की स्वर्ण-प्रतिमा १० फुट ऊँची और वजन लगभग साढ़े पाँच टन है इस मूर्ति का अनुमानित मूल्य ५२ करोड़ रुपये आँका गया है।

### दुनियाँ का सबसे छोटा बन्दर :

आमेजन नदी के किनारे पाये जाने वाले पिग्मी मार्मोसिट जाति का यह बन्दर मनुष्य के अँगूठे पर आराम से बैठ सकता है। इसका अधिकतम वजन ७५ ग्राम होता है।

### वर्फ की बनी सबसे बड़ी इमारत :

१९८०-८१ की सर्दी में जापान के शहर नियागाता में १६०० टन वर्फ की मदद से बर्फ की बनी विश्व की सबसे बड़ी इमारत 'वर्फ मरल' का निर्माण हुआ था २३ मीटर ऊँची इस इमारत को बनाने में ८०० लोग व ५० बुल्डोजर लगे थे।

## एक दिन में फिल्म की सर्वाधिक आय :

सुपरमैन-II फिल्म की २० जून १९८२ के दिन उत्तरी अमेरिका के १३९५ सिनेमा गृहों में लगभग ५ करोड़ रुपये की टिकटों की बिक्री हुई।

## मानव शरीर पर सबसे अधिक गोदने :

नाटिषम शायर के विटफ्रेक हार्डी का केवल ४% शरीर ही गोदने से बचा है। यहाँ तक कि गोदने मुखा के अन्दर भी है। इन्होंने भीतरी गाल, जीभ, मसूड़ा और भौंह तक पर गोदने करवाये हैं।

## आश्चर्यजनक प्रयोग :

आवश्यक सामान :-१-मलमल या रेशम का कपड़ा जिस हर ५ अण्डे आराम से आ सकें। २- एक अण्डा ३- मोटा धागा ४- नमक, पानी, टब।

**तैयारियाँ**-१- अण्डे लेकर उसके नुकीले भाग में एक छेद कर दीजिए परन्तु यह छेद बहुत छोटा होना चाहिये फिर इसके सामने एक और छोटा छेद करके उससे फूँक कर सारा अन्दर का निकाल लीजिये अब यह एक अण्डे का खाली खोल बचा।

२- अब टब में नमक घोल लीजिये। मात्रा १ ली० में १० चम्मच मिलाकर मलमल या रेशम का कपड़ा व धागा भिगाकर सुखा दीजिये यह क्रिया कम से कम ५ बार होनी चाहिये। बार-बार भिगोएँ व फिर वैसे ही सुखा दें।

**प्रयोग**-कमरे में गड़ी चार कीलो से कपड़े के चारो कोने बाँध कर लटका दीजिये इस पर अण्डे का खाली खोग रख दीजिये। अब आप जैसे ही एक माचिस की तीली जलाकर लगायेंगे वैसे ही कपड़ा व धागा तो जल जायेगा परन्तु अण्डा वैसे ही हवा में लटका रहेगा। है न आश्चर्य जनक।

**अवधि**-अण्डे को हवा में लटकने की अवधि १ से ३ मिनट तक हो सकती है।



## कुछ और जानकारियाँ

अमित कुमार सिंह भदौरिया

नवम 'क'

### छिपकली दीवार पर कैसे चलती है फिसलती क्यों नहीं ?

छिपकली को दीवार पर चिपक कर चलते देख कर वास्तव में आश्चर्य होता है कि यह गिरती क्यों नहीं है। छिपकली के पैर छोटे तथा शरीर बेलनाकार (लम्बा-पतला) होता है। इसके पैर प्याले के आकार के होते हैं। जब ये दीवार पर चलती है तो इसके पैरों तथा दीवारों के बीच निर्वात उत्पन्न हो जाता है और पैरों पर बाहरी दबाव पड़ता रहता है। इसी दबाव तथा निर्वात के कारण छिपकली दीवार से चिपकी रहती है। परन्तु जब किसी कारणवश दीवार तथा पैर के बीच से निर्वात समाप्त हो जाता है तो छिपकली गिर पड़ती है।

### गिरगिट रंग क्यों बदलते हैं ?

सरीसृप वर्ग के कुछ जन्तु जैसे गिरगिट आदि जिस स्थान पर बैठते हैं उसी स्थान के रंग के अनुसार अपना रंग भी बदल लेते हैं ताकि शत्रु इनको आसानी से न देख पायें। इन प्राणियों की त्वचा में कुछ विशेष प्रकार की रंजक कोशिकाएँ अथवा मैलेनोफोर होती है, जो ताप बढ़ने तथा घटने के साथ-साथ सिकुड़ती व फैलती हैं। ये कोशिकाएँ इनके शरीर में स्रावित होने

वाले कुछ हार्मोनों द्वारा उत्तेजित होकर रंग बदलती हैं। ये हार्मोन इण्टरमेडिन, एसीटिलकोलिन तथा एडी-नेलिन हैं। त्वचा की ऊपरी सतह की कोशिकाएँ पीली उसके नीचे गहरी भूरी तथा काले रंग की और सबसे नीचे सफेद रंग की होती हैं। ताप कम होने से इनका रंग गहरा और ताप बढ़ने से हल्का होने लगता है। रात्रि में विचरण करने वाले सरीसृपों में विपरीत प्रक्रिया होती है। लैंगिक तथा भावनात्मक अवस्था का भी इनके रंग पर प्रभाव पड़ता है। पेड़ों पर चढ़ने वाले या उनमें वास करने वाले सरीसृपों में रंग बदलने की प्रवृत्ति अधिक होती है। यह हरा, पीला, भूरा तथा स्लेटी रंग बदलते हैं।

### प्याज काटते समय हमारी आँखों से पानी क्यों आने लगता है ?

प्याज का तीखा स्वाद और इसकी गंध प्याज के बलब तथा शाक में पाये जाने वाले सगंध आसव के कारण होते हैं। असंतृप्त सल्फर अवयव, जैसे एल्काइल डाई तथा ट्राई सल्फाइड और कार्बनिक संघटक मुख्यतः प्याज की सुवास के कारक होते हैं। इन सब अवयवों के साथ ही प्याज के रस में एक अश्रुजनक अवयव

थायोप्रोपेनल - सल्फर - आक्साइड [CH<sub>3</sub>, CH<sub>2</sub> CH=S=O] के रूप में सगंध तेल भी पाया जाता है, जो अश्रु ग्रन्थि को उत्तेजित करता है। इसलिए जब प्याज को काटा जाता है तब यह वाष्पशील पदार्थ हवा में मिलकर हमारी आँखों में आँसू लाता है। यदि प्याज को पानी में रखकर काटा जाय तो आँसू नहीं आयेंगे।

**यदि सेब को काटकर रख दिया जाय तो उसके गूदे का सफेद रंग कुछ देर बाद बादामी क्यों हो जाता है ?**

सेब के गूदे में कुछ विशेष पदार्थ होते हैं, जिनको टैनिन कहा जाता है। इन टैनिनों के नाम हैं—कैफिटैनिन

कैटिचिन और एपिकैटिचिन। इसमें फीनोलिक यौगिक के रूप में क्लोरिकजोनिक अम्ल भी पाया जाता है। सेब में फीनोलेज, पालीफीनोलेज, पालीफीनोल आक्सीडेन नामक आक्सीडेज एंजाइम होता है। एंजाइम रासायनिक क्रियाओं को तेज करने में सहायक होते हैं। जब फीनोलीज और क्लोरोजेनिक अम्ल तथा थोड़ी मात्रा में कैटीचिन हवा के सम्पर्क में आते हैं तो फीनोलेज एंजाइम, क्लोरोजेनिक अम्ल और कैटिचिन का आक्सीकरण कर देता है जिससे सेब का रंग भूरा या बादामी पड़ जाता है। इसको रोकने के लिए १-२ प्रतिशत लवण घोल, शक्कर का शीरा या एस्कार्बिक अम्ल का उपयोग किया जाता है।



### भ्रष्टाचार

भ्रष्ट भाव नाव में है बँठा आज लोकतन्त्र,  
जल भी है भ्रष्ट तो हिलोरें क्यों आयेंगी।  
भ्रष्ट जल बीच बँठी भ्रष्ट पनडुब्बी जल।  
तो लाख कोशिशों के बाद डूब क्यों न जायेगी ॥

शिक्षालय केन्द्र आज बने व्यवसाय—पंठ  
तो कैसे गुरु शिष्य की परम्परा सुहायेगी।  
पंसे की खनक जब गूँज रही चारों ओर,  
तो वीणा की झनक कैसे कानों तक आयगी।

## विज्ञान सम्बन्धी कुछ रोचक तथ्य

श्रद्धेश चतुर्वेदी

नवम 'क'

सामान्यतः विज्ञान एक रोचक विषय के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता है, परन्तु विज्ञान से संबन्धित अनेक तथ्य इसकी रोचकता को पूर्ण रूप से प्रमाणित कर देते हैं। वास्तव में विज्ञान सारगर्भित प्रश्नों प्रयोगों, कहानियों, पहलियों तथा विरोधाभासों का अक्षय कोष है। विज्ञान को समझ सकने वाले शिक्षा-थियों के लिए यह विषय एक आनन्दरूपी सागर के समान है। विज्ञान की रोचकता को प्रभाणित करने वाले कुछ तथ्य निम्नांकित हैं।

### पानी आग क्यों बुझाता है ?

पानी द्वारा आग को बुझाने के दो प्रमुख कारण हैं। प्रथमतः, पानी जलती वस्तु के संसर्ग में आकर वाष्प में परिवर्तित हो जाता है और इस क्रिया में वह जलती वस्तु से ताप का बहुत बड़ा अंश लेकर खर्च कर देता है; खोलते पानी को पूर्णरूपेण वाष्प में परिणित करने के लिए, ठण्डे पानी को 100° तक गरम करने के लिए आवश्यक ताप के पाँच गुने ताप की आवश्यकता होती है। द्वितीयतः; इस प्रकार उत्पन्न वाष्प का आयतन पानी के प्रारम्भिक आयतन से सैकड़ों गुना अधिक होता है; यह वाष्प जलती वस्तु को घेर कर उसके चारो तरफ की वायु को विस्थापित कर देता है और वायु के बिना कोई वस्तु जल नहीं सकती।

### लालटेन का शीशा किसलिए है ?

लालटेन में शीशे की वही भूमिका होती है, जो फैंकटरी में धुआँ निकालने के लिए चिमनी की होती है।

हिन्दी में लालटेन के शीशे को चिमनी ही कहते हैं। शीशे के अन्दर का वायु-स्तम्भ बाह्य वायु की अपेक्षा शीघ्र गर्म होता है। गर्म होने के कारण वायु हल्की हो जाती है और दूसरी ठंडी हवा द्वारा विस्थापित हो जाती है। ठंडी हवा के प्रविष्ट होने के लिए ही नीचे छिद्र बने होते हैं। इस प्रकार नीचे से ऊपर तक ताजी हवा का संवहन होता रहता है और जलने से प्राप्त गैस, कालिख आदि भी दूर होती रहती है। शीशे की ऊँचाई जितनी अधिक होगी, गर्म व ठण्डी हवा के स्तम्भों की ऊँचाइयों में अंतर उतना ही अधिक होगा और अन्तर जितना अधिक होगा वायु उतनी शीघ्र आएगी और आग की लपट उतनी ही तीव्र होगी।

### अन्धा आदमी क्यों नहीं देख सकता

अन्धे व्यक्ति की आँख का क्रिस्टलिक, उसकी काँचवत आर्द्रता और उसके अन्य भाग प्रकाश किरणों को इस प्रकार अपवर्तित करते हैं कि रेटिना पर बाह्य वस्तुओं का धिम्ब बनने लगता है। लेकिन आँख और हवा के अपवर्तनांक समान हैं क्योंकि अदृश्य होने के लिए इनका समान होना आवश्यक है, इस प्रकार अपवर्तन का एकमात्र कारण नष्ट हो जाता है। समान अपवर्तनता वाले एक परिवेश से दूसरे में प्रविष्ट होते समय किरणें अपने मार्ग से विचलित नहीं होतीं और इसी कारण वे एक बिन्दु पर नहीं मिल सकतीं। अदृश्य व्यक्ति की आँखों से गुजरते समय किरणों को कोई बाधा नहीं होगी न कहीं रुकेंगी, रंजक पदार्थ का भी अभाव है इसलिए

वे चेतना में कोई बिम्ब भी नहीं प्रस्तुत करेगी अर्थात् अदृश्य व्यक्ति अंधा होता है।

## सबसे गर्म बर्फ का ताप कितना होगा ?

सामान्यतः सबका उत्तर होगा ०°-५ परन्तु अंग्रेज भौतिकवेत्ता ब्रिजमेन ने २०६०० वातदाब पर ७६°C ताप वाली बर्फ न० ५ की खोज की। बर्फ न० ५ शक्तिशाली प्रेस के दबाव से मोटी दीवार वाले बर्तन में बनती है, जो सबसे अच्छे इस्पात का बना होता है इसलिये इस बर्फ को देखना या स्पर्श करना सम्भव नहीं है। ये बर्फ साधारण बर्फ से ही नहीं, पानी से भी भारी होती है।

## नाचता लट्टू नहीं गिरता ?

लट्टू के सभी कण वृत्ताकार पथों पर हैं घूमते और ये पथ अक्ष के अभिलम्ब समतलों पर हैं। जड़त्व के नियमानुसार कण हर क्षण वृत्ताकार पथ को छोड़कर वृत्त की स्पर्श रेखा की दिशा में सरल रेखा पर भागने को प्रवृत्ति रहता है। चूँकि किसी भी वृत्त की सभी स्पर्श रेखाएँ उसी समतल पर होती हैं, जिस पर स्वयं वृत्त होता है, इसलिए हर कण अपने वृत्ताकार पथ वाले समतल पर ही बने रहने का प्रयत्न करता है। लेकिन यह समतल लट्टू के अक्ष पर लम्ब है इसलिए लट्टू में अक्ष के अभिलम्ब सभी समतलों की प्रवृत्ति व्योम में अपनी स्थिति स्थिर बनाये रखने की होती है इसलिए उनका सामूहिक लम्ब, अर्थात् अक्ष, भी स्व-स्थिति स्थायी रखने की प्रवृत्ति रखता है।

## लपट अपने आप क्यों नहीं बुझती ?

अर्थात् जब तक सारा ईंधन समाप्त नहीं हो जाता क्यों नहीं बुझती ? सिर्फ इसलिए कि गैसें गर्म होकर फैलती हैं और आयतन प्रसार के कारण हल्की हो जाती हैं। इसी कारण दहन के उत्पाद (जो कि अदहनशील पदार्थ हैं) अपने उद्भव - स्थल पर टिके नहीं रह पाते,

शीघ्र ही ताजी हवा द्वारा ऊपर विस्थापित कर दिए जाते हैं इसलिए लपट स्वतः नहीं बुझती है।

## क्या पानी को बर्फ से खौलाया जा सकता है ?

पानी को बर्फ से खौलाया जा सकता है। वास्तव में ये एक आश्चर्यजनक तथ्य है। इसकी सत्यता को प्रमाणित करने के लिए निम्न प्रयोग करें—

एक छोटी शीशी को आधी दूरी तक पानी से भर दीजिए और नमकीन खौलते पानी में डुबा दीजिए। जब शीशी में पानी खौलने लगे तो उसको पतली से निकाल कर एक डॉट से उसका मुँह अच्छी तरह बन्द कर दीजिए। अब शीशी को आधा लटका दीजिए। जब शीशी के पानी का खौलना बन्द हो जाए तो उसकी पेंदी पर थोड़ा बर्फ रखें, आप देखेंगे कि पानी खौलने लगा है। शीशी की दीवार पतली होने पर विस्फोट हो सकता है। इसलिए फ्लास्क का प्रयोग उत्तम रहता है।

## ठंडे पानी की करामात :

पानी की शक्ति को देखने के लिए एक प्रयोग करें जो निम्नांकित हैं—

एक टिन में डिब्बे में थोड़ा पानी खौलाकर उसका डॉट अच्छी तरह से बन्द कर दीजिए और उस पर ठंडा पानी उड़ेलिए। वाष्प से भरा डिब्बा बाह्य वायु के दबाव से पिचक जाएगा, क्योंकि आन्तरिक वाष्प ठंडी होकर पानी में परिणित हो जाएगी। डिब्बा पिचक कर इस तरह टेढ़ा मेढ़ा हो जाएगा। जैसे उस पर हथौड़े चलाए गए हों।

## अत्यंत क्षीण प्रकाश में वस्तुएं भूरी क्यों ?

क्षीण प्रकाश में आंखें रंग-भेद नहीं बता सकतीं परिणामस्वरूप हर सतह भूरी प्रतीत होती है। यदि रंगीन या श्वेत सतह पर क्षीण श्वेत प्रकाश या रंगीन

प्रकाश डाला जाय [अर्थात् रंगीन सतह पर श्वेत प्रकाश और श्वेत सतह पर रंगीन प्रकाश] और प्रकाश की शक्ति धीरे-धीरे बढ़ायी जाय तो प्रारम्भ में केवल भूरा रंग दिखाई देगा। जब प्रकाश की शक्ति एक नियत सीमा तक पहुँचती है, आँख को रंग की अनुभूति मिलनी शुरू हो जाती है। प्रकाश की यह शक्ति वर्ण-संवेदना की निचली सीमा कहलाती है। अर्थात् वर्ण-संवेदना की सीमा से नीचे सभी वस्तुयें भूरी लगती है।

काफी तीव्र प्रकाश में आँखें रंग-भेद करने में अस-

मर्थ होती हैं; सभी रंगीन सतहें समान रूप से श्वेत लगती हैं।

### अदृश्य सुई बनाना :—

काग की गोल चक्ती के बीचों-बीच सुई या पिन चुभाकर पानी की सतह पर उलट दें। यदि काग बहुत अधिक चौड़ा नहीं है और सुई पर्याप्त लम्बी है, तो सिर झुकाने पर सुई पानी के सतह के पार से दिखनी चाहिए लेकिन सुई नहीं दिखती क्योंकि सुई से चलने वाली प्रकाश किरणों का पूर्ण परावर्तन हो जाता है।



\* हम महान व्यक्तियों के निकटतम पहुँच जाते हैं जब हम नम्रता से महान होते हैं।

—गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर

\* दुःखों में सबसे बड़ा अज्ञानता।

—अश्वघोष

\* अपने मन वासना को जीतो क्योंकि तुम्हारा शत्रु कोई मनुष्य नहीं तुम्हारे मन की वासना है।

—महात्मा बुद्ध

\* परमेश्वर का प्यार केवल सदाचारी और कर्तव्य परायणों के लिये सुरक्षित है।

—श्री रामशर्मा आचार्य

# अनोखी झीलें व नदियाँ

वेद प्रकाश सिंह

अष्टम 'ख'

(१) हवाई द्वीप में एक ऐसी झील है जिसे आग की झील कहते हैं। इसमें चौबीसों घंटे आग की लपटें तथा धुएँ निकलते हैं। यह मोना लोवा नामक ज्वालामुखी के मुहाने पर है इसी कारण ज्वालामुखी के भीतर की चट्टानों में पिघला लावा इसमें भरा रहता है जो हर समय उबलता रहता है।

(२) तिनिडाड नामक द्वीप में एक बड़ी झील पायी जाती है जिसमें तारकोल पाया जाता है।

(३) कैलिफोर्निया में मोना लेक नामक एक झील है जिसके बारे में यह निष्कर्ष निकाला गया है कि यह सोना दे सकती है। वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि इस सोने की झील में ५ करोड़ टन पानी है और इसमें स्वर्ण रेणु प्रति १०० टन में ४० भाग है।

(४) आयरलैण्ड में एक ऐसी झील है जिसे पत्थरों का झील कहते हैं इसमें कोई भी चीज डालने पर पत्थर बन जाता है अथवा उसके चारों ओर पत्थर जम जाता है।

(५) आस्ट्रेलिया के न्यू साउथ में एक झील है जिसका नाम जार्ज लेक है इसका पानी कभी-कभी स्वयं ही गायब हो जाता है फिर बाद में पानी आ जाता है।

(६) अल्जीरिया में एक ऐसी नदी है जिसमें स्याही पायी जाती है इस नदी के पानी में लौह लवण और लैड आक्साइड भी मिले हैं।

(७) चिली और अर्जेन्टीना देशों के बीच सीमा रेखा के रूप में एक नदी बहती है जिसका नाम रायओद विनारो है। इसका जल चखने पर ताजा नींबू के पानी का स्वाद देता है।

(८) अमेरिका में नेब्रास्का नामक नदी बहती है जिसका पानी बहुत मीठा होता है। इसे एक गिलास से ज्यादा नहीं पिया जा सकता।

(९) पूर्वी अफ्रीका में एंगारी न्यार्की नामक एक नदी बहती है जिसका स्वाद बीयर की तरह लगता है जबकि इसमें एल्कोहल की मात्रा बिल्कुल नहीं है।



# प्रसाद की अनुपम छाया

पंकज श्रीवास्तव

द्वादश 'ख'

[छायावाद जैसे वह समीक्षित विषय पर किशोर लेखक द्वारा परिश्रम पूर्वक लिखा गया निबन्ध।]

—सम्पादक

काव्य-साहित्य के इतिहास में आदिकाल से लेकर रीतिकाल तक या तो पाठकों के समक्ष वीर राजाओं की शौर्य-गाथाओं का, युद्धों का सजीव वर्णन या आश्रय दाता राजाओं से सम्बन्धित यशगान या फिर किसी व्यक्ति-विशेष से सम्बन्धित कथा ही काव्य रखे ये इसी कालखण्ड में ईश-भक्ति अथवा ईश्वर तक पहुँचने का सुमार्ग बताने वाला काव्य और सांसारिक मनुष्यों की नीत विषयक काव्य दिये गये।

आधुनिक काल में 'द्विवेदी-युग' की कविता में राष्ट्रीयता प्रधान रही, इतिवृत्तात्मकता के भार से कला दबी रही। इस एकरस व स्थूल काव्य की प्रतिक्रिया — स्वरूप हिन्दी-साहित्य गगन में एक नवोदित सूर्य के दर्शन हुये। जिसने पठकों के हृदय को समझा और उसका सुसंस्कृत, परिमार्जित, सौन्दर्यमय हल प्रस्तुत किया, जिसका नाम पड़ा,

'छायावाद'

सन् १९२३ ई० से सन् १९३८ ई० तक का समय साहित्य के इतिहास में 'छायावादी-युग' कहा जाता है। हिन्दी-साहित्य में छायावाद का जन्म उस समय हुआ जब प्रथम युद्ध की समाप्ति पर स्वाधीनता न मिलने पर व सत्याग्रह आंदोलन के विफल हो जाने के कारण भारत की जनता व साहित्यकार निराश थे। अतः पलायन प्रवृत्ति जाग्रत होने से साहित्यकारों का

ध्यान इस वस्तु जगत से हट कर क्षितिज के उस पार का रहस्य जानने के लिये आकर्षित हुआ। इस समय की कविताओं में इन सभी भावनाओं का प्रतिबिम्ब दिखाई पड़ता है। इस प्रकार 'छायावाद' का जन्म हुआ।

वास्तव में यदि हम सरल रूप में छायावाद को प्रस्तुत करें तो वह होगा —

वास्तविकता में कल्पना की छाया ही 'छायावाद' है।

'छायावाद' के प्रवर्तक महाकवि श्री जय शङ्कर प्रसाद जी हैं। इनके अनुसार छायावाद का रूप है :—

'मोती की आभा ही छाया है और इसी से छायावाद उत्पन्न होता है।'

'बाबू गुलाबराय' जी का छायावाद से सम्बन्धित मत है —

प्रकृति में मानवीय-भावों का आरोप कर जड़-चेतन के एकीकरण की प्रवृत्ति छायावाद की एक विशेषता है जो उसे मूर्त से अमूर्त की तुलना करने वाले अलंकार विधान में परिलक्षित होती है।'

'डा० राम कुमार वर्मा, 'छायावाद को इस प्रकार परिभाषित करते हैं :—

'जब परमात्मा की छाया आत्मा पर पड़ने लगती है और आत्मा की परमात्मा में, यही 'छायावाद' है।'

श्री रामकृष्ण जी का मत है :—

“छायावाद प्रकृति में मानव-जीवन का प्रतिबिम्ब देखता है, ‘रहस्यवाद’ समस्त सृष्टि में ईश्वर का, ईश्वर अव्यक्त है और मनुष्य व्यक्त है।

डा० नगेन्द्र कहते हैं :—

“छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है।”

डा० देवराज ‘छायावाद’ की व्याख्या इस प्रकार करते हैं :—

“छायावाद नीति काव्य है, प्रकृति काव्य है, प्रेम काव्य है।”

पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी का मत है :—

“मानवीय सृष्टि से कवि की कल्पना अनुभूति और चिंतन के भीतर से निकली हुई वैयक्तिक अनुभूतियों के आवेग को स्वतः समुच्छ्वसित अभिव्यक्ति बिना किसी आभास और बिना किसी प्रयत्न स्वयं निकल पड़ा भाव स्रोत ही ‘छायावादी’ कविता का प्राण है।”

छायावादी काव्य का भवन चार कवि स्तम्भों का आश्रय लेकर खड़ा है। उनमें एक है — छायावादी युग प्रवर्तक ‘श्री जय शंकर प्रसाद’ दूसरे प्रकृति की कोमल भावनाओं के कुशल चित्तरे ‘श्री सुमित्रानंदन पंत’ तृतीय स्तम्भ के रूप में अडिग, हृदय में दुःख का सागर समेटे, पीड़ा की वह अमर गायिका ‘महादेवी वर्मा’ और अंतिम सुदृढ़ स्तम्भ है ‘श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला’ जी। इन चार महारथियों ने हिन्दी साहित्य को छायावादी काव्य देकर अपना ऋणी बना दिया।

हिन्दी-साहित्य में छायावाद का जन्म श्री प्रसाद जी द्वारा रचित ‘झरना’ (१९१९) से समझना चाहिये। वैसे साहित्य का कोई पूर्णतः कोई विवेचन नहीं कर पाया है, किन्तु यदि हम गहराई में जाकर अध्ययन करें तो हमें एक बात पता चलती है कि छायावादी काव्य की एक विशेष धारा है, एक विशेष गतव्य है, एक विशेष उद्देश्य है। इनके काव्य में कुछ मुख्य

विशेषताएं भी पाई जाती हैं जो इनको अन्य काव्य धाराओं से पृथक करती हैं। इनकी (छायावादी काव्य की) मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :—

[१] कोई प्रधान विषय नहीं होता, वरन् स्वयं कवि और उसका राग-विराग प्रधान हो जाता है।

[२] छायावादी काव्य में व्यक्तिगत भावनार्ये प्रकट की जाती हैं। उसमें कवि के निजी जीवन का समावेश होता है।

[३] प्रकृति को चेतन मानते हुये उसका मोहक मानवीकरण किया जाता है।

[४] प्रकृति का आश्रय लेकर नारी का अनुपम सौंदर्य अंकित करना और अपने मन में छिपी श्रृंगार-भावना को प्रकट करना।

[५] व्यक्तिगत आशा-निराशा, सुख-दुःख, व्यथा-वेदना से काव्य भूमि को सिंचित करना एवं इन सब में भी अपने को सुखी अनुभव करना।

[६] छायावादी काव्य अन्तर्मुखी व गेयता को प्रधानता देता है।

[७] छायावादी कवियों ने भाव-सौंदर्य पर अधिक ध्यान दिया है। इसकी भाषा में प्रवाह व लालित्य पाया जाता है।

[८] छायावादी कवियों ने प्रकृति के स्थूल सौंदर्य के साथ-साथ सूक्ष्म सौंदर्य पर अधिक ध्यान दिया है।

[९] काव्य में नवीन अलंकारों का प्रयोग किया है। मूर्त के स्थान पर अमूर्त उपमान का प्रयोग किया है।

[१०] प्रतीकात्मक लाक्षणिक शैली इसकी मुख्य विशेषता है। प्रतीकों के माध्यम से इन्होंने काव्य-धारा में एक नयी ज्योति जलाई।

इस प्रकार हम देखते हैं कि छायावादी काव्य में ‘मैं’ शब्द की प्रधानता रही है। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि छायावादी कवियों ने व्यक्तिगत कविताये अधिक लिखी हैं, जिसमें उन्होंने स्वयं को आधार बनाया है। इन्हें बाह्य वस्तुओं विषयों आदि का आश्रय नहीं लेना पड़ा है। बल्कि अपनी भावनाओं को स्वयं के माध्यम से ही

चित्रित करने में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है। दृष्टव्य है :—

“चित्रित तू मैं हूँ रेखाक्रम,  
मधुर राग तू में श्वर सरगम।”  
(महादेवी)

\* \* \* \* \*

“कुसुमाकर रजनी के जब, पिछले पहरों में खिलता।  
उस मृदूल शिरीष सुमन-सा, मैं प्रात धूल में मिलता।”  
(प्रसाद)

इस व्यक्तिगत काव्य-रचना में मानों कवि ने स्वयं अपने जीवन को काव्य का रूप दे डाला है। अपने जीवन के सुख-दुःख, उतार-चढ़ाव, ऊँच-नीच, अच्छाई-बुराई, सत्य-असत्य व उपलब्धियों आदि को भी काव्यात्मक रूप दिया है। निराला जी ने तो सम्पूर्ण काव्य ग्रंथ ‘तुम और मैं’ लिख डाला। स्पष्ट है :—

“तुम स्वेच्छाचारी मुक्त पुरुष;  
मैं प्रकृति प्रेम जंजीर,  
तुम शिव हो मैं हूँ शक्ति;  
तुम यश हो मैं हूँ प्राप्ति।”  
(निराला)

प्रकृति का मानवीकरण छायावाद की प्रमुखतम विशेषता है। प्रकृति के विविध रूपों को देखकर उसका सजीव अनुपम, अलौकिक व मनोहारी चित्रण इसप्रकार किया है कि मानों स्वयं ब्रह्मा का रूप धर कर ये मनीषी कवि इस प्रकृति की सृष्टि को अपने काव्य के माध्यम से कर रहे हों। ‘कामायनी’ में ‘श्रद्धा’ के खुले अंगों को देखकर कवि कहते हैं :—

“नील परिधान बीच सुकुमार,  
खिल रहा मृदुल  
अधखुला अंग।

खिला हो ज्यों बिजली का फूल, मेघ बन बीच  
गुलाबी रंग ॥”

छायावाद की अभिव्यंजना शैली में कोमलकान्त रूपकों के द्वारा प्रकृति के हर रूप को सँजाने-सँवारने में ‘महादेवी’ जी अपना स्थान रखती हैं। ‘नीरजा’ में वह ‘वर्षा-सुन्दरी के प्रति’ नामक कविता में वर्षा-सुन्दरी को संसार की माता मानती हैं और कहती हैं :—

“इन स्निग्ध लटों से छा दे तन, पुलकित अंकों में  
भर विशाल।  
दुलरा देना, बहला देना, यह तेरा शिशु जग है  
उदास ॥

कविवर पंत जी तो गंगा की स्वच्छ, श्वेत लग रही लहरों को उठता-गिरता देखकर अनायास अपनी प्रिय-तमा की सोच में लीन हो जाते हैं। ‘मानवीकरण में उनके मनोभाव देखिये :—

संकेत शंभ्या पर दुग्ध धवल, तन्वंगी गंगा ग्रीष्म विरल,  
बैठी है श्रान्त, क्लान्त, निश्चल,  
गोरे अंगों पर सिहर-सिहर लहराता तार तरख सुन्दर,  
चंचल, अंचल सा नीलाम्बर।

सभी छायावादी रचयिताओं ने नारी के चित्र को प्रकृति के माध्यम से चित्रित किया है। नारी के विविध भावों, विविध क्रिया-कलापों का बड़ा ही अद्भुत वर्णन किया है। ‘प्रसाद’ जी ने अपने काव्य-चक्षु से नारी को केवल भोग-विलास की सामग्री के रूप में न देखकर अपितु ममतामयी माँ, त्यागमयी बहन व श्रद्धामयी देवी के रूप में देखा है। जैसे :—

“नारी तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास रजत-नग-पग-  
तल में।”

प्रकृति के कुशल चितेरे सर्वश्री सुमित्रानन्दन पंत जी ने भी प्रकृति के माध्यम में नारी सौंदर्य का मोहक वर्णन किया है। जिसमें कहीं भी भोग, लिप्सा, मोह, वासना आदि की छाया तक नहीं पड़ी है। पंत जी ने भी नारी के सौंदर्य को दैवीय रूप में स्वीकारा है :—

“अरुण अधरों पर पल्लव प्रात, मोतियों सा हिलता  
हिमहास।”

इन्द्रधनुषी पट से ढक गात, बाल विद्युत सा पावस  
लास ॥”

छायावादी कविताओं में प्रायः विरह का स्वर देखने को मिलता है। कवियों ने अपने सुख-दुःख, हर्ष-विषाद का ऐसा मनोवैज्ञानिक वर्णन किया है कि पाठकों के नेत्र अश्रुपूरित हो जाते हैं। युग प्रवर्तक

‘प्रसाद जी तो अपने सम्पूर्ण जीवन में दुःख का सागर में डूबते रहे, शायद उन्होंने अपने अश्रुओं को लेखनी के माध्यम से ‘आँसू’ नामक ग्रन्थ में संकलित कर लिया। देखिये :-

“उत्तेजित कर मत दौड़ाओ, मैं करुणा का थका  
चरण हूँ।”

\* \* \* \* \*

“जो धनीभूति पीड़ा थी, मस्तक में स्मृति सी छायी।  
दुर्दिन में आँसू बनकर वह आज बरसने आयी।”

निराला जी ने पीड़ाओं को लेखनी के माध्यम से काव्य-रूप देने में जो सफलता प्राप्त की है। वह अद्वितीय है। उनके काव्य में आँसुओं की नमी है। अपने जीवन की सम्पूर्ण व्यथा को स्वयं मूक रहकर लेखनी को माध्यम बनाकर कहा है। स्पष्ट है :-

“दुःख ही जीवन की कथा रही,  
क्या कहूँ आज जो कही नहीं।”

करुणा और विरह की देवी ‘आधुनिक मीरा’ की संज्ञा से अलंकृत, महादेवी जी के करुणा व संवेदनशीलता से परिपूर्ण हृदय ने उनके काव्य और जीवन दोनों को एक दिव्य सात्विकता प्रदान की है। अश्रु, विरह, वेदना पीड़ा आदि उनकी पूँजी है। वेदना इनके काव्य का प्राण है। महादेवी के गीतों में बुद्ध का दुःखवाद है। उनके काव्य में मार्मिक टीसों की अभिव्यक्ति हुयी है। उनका जन्म पीड़ा में हुआ है और वे पीड़ा में ही रहना चाहती हैं :-

“भैं नीर भरी दुःख की बदली,  
परिचय इतना इतिहास यही।  
उमड़ी कल थी मिट आज चलो।”

“पर शेष नहीं होगी, मेरे प्राणों की पीड़ा,  
तुमको पीड़ा में ढूँढ़ा तुममें ढूँढ़गी पीड़ा।”

छायावादी कवियों ने प्रकृति में एक अचेतन सत्ता को स्वीकार किया है। यहीं पर एक ऐसा स्थान आता है, जहाँ छायावाद में अप्रत्यक्ष रूप में रहस्यवाद प्रकट हो जाता है। जब मानव, चिंतन और ज्ञान के बल पर उस अव्यक्त सत्ता को जानने का प्रयत्न करता है तब

‘दार्शनिकता’ जन्म लेती है। जब मानव हृदय की प्रेम भावना के द्वारा उसे पाने के लिये प्रयत्नशील होता है तब उसके काव्य में स्वतः रहस्यवाद का पुट आ जाता है। छायावादी कवि पंत भी इस सत्ता को स्वीकार करते हैं। उन्होंने भी इस शस्य-श्यामला, सुरम्य प्रकृति की सृष्टि के पीछे जो व्यक्तित्व है उसे शत्-शत् नमन किया है। पंत जी प्रकृति के अंक में ही पले हैं और उसके दुःख-सुख का अनुभव करते हुये बड़े हुये हैं। अतः प्रकृति भी अपने इस अद्वितीय पुत्र को कभी-कभी पुकारती है। पंत जी स्वयं इसका अनुभव करते हैं :-

“न जाने नक्षत्रों से कौन, निमंत्रण देता मुझकी मौन”

‘प्रसाद’ जी भी इस अचेतन सत्ता के स्वामी के समक्ष सिर झुकाते हैं। उन्होंने स्वयं इस अदृश्य सत्ता को जानने की जिज्ञासा प्रकट की है :-

“सिर नचा कर सकी सत्ता सब करते स्वीकार  
यहाँ।

सदा मौन हो प्रवचन करते जिसका वह अस्तित्व  
कहाँ?”

महादेवी जी की आत्मा इस विश्व से व्याकुल होकर अव्यक्त पूर्णता के अन्वेषण में लीन हैं और उसी के विरह में सदा जलती रहती हैं। महादेवी जी के रहस्यवाद की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि उनकी विरहिणी आत्मा अपने प्रिय से मिलने के लिये सदैव तड़पती रहती हैं। वह कहती हैं —

“बीन भी हूँ मैं, तुम्हारी रागिनी भी हूँ।”

छायावादी कवि के रूप में महाकवि ‘निराला’ जी ने रहस्यवाद को एक अलग ही भाव से प्रदर्शित किया है। इनके काव्य में दार्शनिकता प्रत्यक्ष रूप से परिलक्षित होती है। विचारों की दृष्टि से आप उच्चकोटि के दार्शनिकता थे। चूँकि निराला जी, विवेकानन्द जी के दार्शनिक विचारों से प्रभावित थे। ऐसी दशा में उनकी कविता में अध्यात्मिक भावों का आ जाना स्वभाविक ही था। अमूर्त भावों को मूर्त रूप देने में निराला जी ‘प्रसाद’ के समकक्ष हैं। इसी रहस्यवादी काव्य में

निराला जी ने जीवात्मा की क्षुद्रता और परमात्मा की विराटता का चित्र भी अंकित किया है। यहीं पर छायावादी काव्य में अंग्रेजी साहित्य की भी झलक मिलती है। छायावादी कवियों के अनुरूप ही अंग्रेजी साहित्य व अन्य पाश्चात्य साहित्यों में भी ईश्वर को परम शक्तिशाली बताया है और यह भी कहा है कि जीवात्मा सदैव परमात्मा की ऋणी रहती है और परमात्मा, जीवात्मा के कार्यों को स्वीकारना उचित भी नहीं समझती है। SIR, JOHN, MILTON ने ON HIS BLINDNESS नामक कविता में कहा है :-

God doth not need,  
Either man's work, or his own gifts.

अतः इस प्रकार अन्त में हम यह देखते हैं कि छायावाद, हिन्दी साहित्य परिवर्तन की राह में पड़ा एक सशक्त, मधुर, दार्शनिकता से परिपूर्ण एक मुरम्य पड़ाव है। उस पड़ाव में साहित्य प्रेमियों को काल्पनिक संसार में विचरण करने का अवसर प्राप्त हुआ। भाषा की दुरुहता, शैली की कठिनता, वीभत्सता आदि से हटकर प्रकृति के अपूर्व सौंदर्य का दर्शन कराने का श्रेय यदि किसी को जाता है तो वह छायावादी काव्य व उनके सृजन कर्ता कवि हैं।

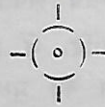
छायावादी काव्य में जहाँ उत्कृष्ट प्रकृति-चित्रण व दार्शनिक विचारों के दर्शन होते हैं, वहीं पर इसमें सुघड़

छन्द योजना, मनोहारी व अद्भुत अलंकारिक सृष्टि और नारी का अद्वितीय, पूजनीय व भावमयी धान्तरिक सौन्दर्य भी साक्षात् परिलक्षित होता है।

छायावाद, २०वीं शती के पूर्वार्द्ध के समय के तत्कालीन पाठकों के लिये, मानो तपती रेत के मरुस्थल में सुखद वर्षा के रूप में प्रकट हुआ था। इस वर्षा ने काव्य पाठकों के अतृप्त मान-स्थलों को मानों तृप्त कर दिया था। इस युग में हिन्दी साहित्य में एक इस प्रकार की कविताओं की धारा बही थी जिसका कव्य मधुर, कोमल और ललित था। इन कविताओं में लाक्षणिकता का प्रयोग और प्रतीकात्मकता का बाहुल्य था। कुछ भी हो छायावाद ने हिन्दी साहित्य जगत् कभी उसके महत्त्व को भुला नहीं सकता है और वह वस्तु है—कोमलकान्त पदावली। कवि मङ्गल ने मानों सम्पूर्ण छायावाद को निम्नलिखित चार पंक्तियों में व्यक्त कर दिया है :-

“अन्तर्मुखी व गेय पदों की,  
कोमल, मधुर, ललित मुक्तावलि।  
कवि 'प्रसाद' का शुभ प्रसाद यह,  
'छायावाद', सरस, कवितावलि ॥”

अन्त में हम यह सकते हैं कि हिन्दी साहित्य जगत् 'बाबू जय शङ्कर द्रसाद' और उनके कृतित्व 'छायावाद' के लिये उनका सदैव ऋणी रहेगा। और यह ऐसा ऋण है जिससे उच्छ्रय होना संभव नहीं।



# मैं हूँ अनादि, मैं हूँ अनन्त ०००००

ओम शङ्कर त्रिपाठी

(प्राचार्य)

[कवि की एक सशक्त लेखनी की एक दार्शनिक प्रस्तुति ।] —सम्पादक

मैं अन्तर्तम की आशा हूँ ।  
मन की उद्दाम पिपासा हूँ ।  
जो सदा जागती रहती है—  
ऐसी उर की अभिलाषा हूँ ।

मैंने करवट ली तो मानो, हिल उठे क्षितिज के ओर—छोर ।  
मैं सोया तो जड़ हुआ विश्व, निर्मिति फिर—२ विस्मित विभोर ।  
मैंने यम के दरवाजे पर, दस्तक देकर ललकारा है ।  
मैंने सर्जन को प्रलय—पाठ पढ़ने के लिये पुकारा है ।  
मैं हँसा और पी गया गरल मैं शुद्ध प्रेम—परिभाषा हूँ ॥ १ ॥

मैं शान्ति—पाठ युग के इति का,  
मैं प्रणव—घोष अथ का असीम ।  
मैं सृजन—प्रलय के मध्य सेतु—  
हूँ पौरुष का विग्रह ससीम ।  
बँखरी भावनाओं की मैं—  
सात्वती सदा विश्वासों की ।  
मैं सदियों का आकलन—बिन्दु,  
ऊर्जा हूँ मैं निश्वासों की ।

पर, परिवेशों में मैं जब-तब लगता हूँ घोर निराशा हूँ ॥ २ ॥

मैं हूँ अनादि, मैं हूँ अनन्त,  
मैं मध्यदिन का प्रखर सूर्य ।  
मैं हिम नग का उत्तुंग शिखर,  
उत्ताल उदधि का प्रबल तूर्य ।  
दिग्ब्याप्त पवन उन्चास, और—  
मैं अन्तरिक्ष का हूँ कृशानु ।  
मैं माटी की सद्गन्ध और  
रस में रहता बन तरल प्राण ।

पर आत्मबोध से रहित स्वयं मैं ही मजबूर हताशा हूँ ॥ ३ ॥

मैं स्रष्टा का उत्कृष्ट सृजन,  
 पालनकर्ता का सहयोगी ।  
 मैं हूँ विध्वंस कपाली का,  
 हूँ सृजन, प्रलय का अनुयोगी ।  
 मैं ही इतिहास रचा करता,  
 भूमिति के बिन्दु हमारे हैं ।  
 अटके — भटके पथ — भेदों के,  
 मैंने सम्बन्ध सुधारे हैं ।

पर, चला और पथ भूल गया, मैं क्षिप्त चित्त की भाषा हूँ ॥ ४ ॥

जब सोया तो सपने देखे,  
 अब जगा, सोच कर रोता हूँ ।  
 अपने गँदले इन हाथों से,  
 प्रज्ञा मल — मल कर धोता हूँ ।  
 छिप गया क्षितिज में सिन्धु-सूर्य —  
 मैं ठगा-ठगा रह गया खड़ा ।  
 अपनी ही आँखों से देखा,  
 मैं अपने से हो गया बड़ा ।

पर सभी नए उपमान, अभी तक मैं व्यासा का व्यासा हूँ ॥ ५ ॥



## राम जन्म भूमि

घुट - घुट के करुण रस में रसायन सा  
राम ने सहा है कौन-कौन दुख दाह ना,  
रामयानी रूपवन्त सृष्टि का समग्र श्रेय  
सिर्फ व्यक्तिमान तानो भ्रम के वितानना,  
मानवीय जीवन के मूल्य जानने हों जिसे  
जान लेवो राम तो रहे न कुछ जानना ।  
भारतीयता का अपमान है मनुष्यता की  
घोर अवमानना है राम को न मानना ॥१॥

ध्यान में मगन होके योगी रमते हैं जहाँ  
राम की कसम रामनाम वह ठौर है ।  
दुनियाँ में जितने भी नाम परमेश्वर के  
'राम' ये सुनाम सर्वनाम सिरमौर है ।  
नयनाभिराम पूर्णकाम पूर्णधाम राम  
विपदा विराम राम सा न कोई और है ।  
अंग प्रति अंग राम रंग-रंगा देश यहाँ  
राम का विरोध राष्ट्रद्रोह के बतौर है ॥२॥

राम का चरित्र भारतीयता का मानदण्ड  
राम नाम राष्ट्र एकता का अग्रदूत है ।  
ऐसा प्रजा प्राण भूत भूपर हुआ न होगा  
सारा इतिहास इस बात का सबूत है ।  
राजा बन जाए अवधूत प्रेम में प्रजा के  
राम के अलावा ऐसा कौन सा सपूत है ।  
राम का नहीं जो एहसानमंद भारतीय  
देश का कलंक मातृ-भूमि का कपूत है ॥३॥

अपनाइये असार को न सार छोड़ बन्धू  
निन्दनीय पंथ पै प्रयाण की न ठानिये ।  
तानिये न तंग खयाली के अपने वितान  
महापुरुषों में राम अग्रगण्य जानिये ।  
अनुमानिये महत्व राम का भरत भूपै  
व्यर्थ वैमनस्य के कुपंक में न सानिये ।  
मानिये कि भारत विभूति राम हैं, भले ही  
विष्णु अवतार उन्हें मानिये न मानिये ॥४॥

जिस दिन देश को स्वतन्त्रता मिली थी, तुम्हें  
सोचने के ढंग को नवीन मोड़ देना था ।  
देने हेतु देश भक्ति का सबूत मजबूत  
संकुचित वृत्तियों का घेरा तोड़ देना था ।  
हिन्दू मुसलिम भाई चारे और एकता का  
इतिहास में नवीन पृष्ठ जोड़ देना था ।  
दिल खोल के वे मस्जिदें जो कभी मंदिर थीं  
हिन्दुओं को सौंप अधिकार छोड़ देना था ॥५॥

किन्तु भाई-भाई कहने के साथ-साथ रहा  
इसलाम खतरे में नारा बन्धु आपका ।  
जहाँ - जहाँ बहुमत में हुए वहाँ वहाँ पै  
भारत नदारत, नजारा बन्धु आपका ॥  
मौगा लगते ही चर जाओ जिसे भाई कहो  
देखा आज तक भाई चारा बन्धु आपका ।  
जम्बू कश्मीर से दुबारा हो रहा है आज  
उसी भाई चारे का इशारा बन्धु आपका ॥६॥

तोड़ा नहीं मंदिरों को आक्रमण कारियों ने  
 देशवासियों के मनमंदिरों को तोड़ा है ।  
 शल्य अपमान के निकाले न गये कभी भी  
 घायल उरों में गया गरल निचोड़ा है ।  
 हिन्दू हृदय स्थली सी राम जन्म भूमि तामे  
 बाबरी का फोड़ा हुआ जब से निगोड़ा है ।  
 पकता न फूटतान बैठता अजीब हाल  
 फोड़ा भी न जाए ऐसा बेशरम फोड़ा है ॥७॥

जन्म भूमि पै बनी है बाबरी बलात् बन्धु  
 मोड़िये न सत्य को न तथ्य को मरोड़िये ।  
 दे चुके हो बन्धुता के वक्ष पै अनेक घाव  
 है यही निचोड़ इतिहास जो निचोड़िये ।  
 जिस्म में कहीं पै यदि आत्मा विराजती हो  
 एक बार बन्धु प्यार से उसे क्षिञ्चोड़िये ।  
 तंग आ के अपने अतीत की कुरूपता से  
 बार बार दर्पण स्वदेश का न तोड़िये ॥८॥

बदला जमाना आक्रमणकारी मनोवृत्ति  
 अपने हृदय से भगाओ भले मानसो ।  
 अपमान हिन्दुओं के मान विन्दुओं का कर  
 और ज्यादा दिल न दुखाओ भले मानसो ।  
 माना हो मुसलमान किन्तु रामकृष्ण ही हैं  
 पुरखे तुम्हारे, न भुलाओ भले मानसो ।  
 बाबा विश्वनाथ और कृष्ण जन्मभूमि के भी  
 उलझे सवाल सुलझाओ भले मानसो ॥९॥

सत्ता के नशे में चूर शासकों की शह पै  
 बिखेरे गये काँटो के बुहारने का वक्त है ।  
 अत्याचार को भी अधिकार मानने की वृत्ति  
 यारो, आज मन से निकालने का वक्त है ।  
 राम जन्म भूमि पै बनाई गई है कि नहीं  
 मसजिद बाबरी विचारने का वक्त है ।  
 भाईचारा सही माने में निभाने के बहाने  
 पुरखों की गलती सुधारने का वक्त है ॥१०॥

राम जन्मभूमि का समादर करो, विरोध-  
 बाबरी के कारण बिरादर न कीजिये ।  
 राम जन्मभूमि जिनकी है उन्हें दे दो बन्धु  
 व्यर्थ के विवाद को उजागर न कीजिये ।  
 भारतीय सभ्यता के प्राण कण-कण रमें  
 राम अवतार का निरादर न कीजिये ।  
 राम के समान दुनियाँ में सिर्फ राम ही हैं  
 बाबर को राम के बराबर न कीजिये ॥११॥

भारतीयता की मूलधारा से किनाराकर  
 आदतें अतीत की प्रजागर न कीजिए ।  
 अज गज को तुला पै तौलिये न एक साथ  
 समकक्ष सागर के गागर न कीजिये ।  
 सादर रहीम रसखान ने बुनी है चारू  
 चादर प्रतीति की सो जाँजर न कीजिये ।  
 नागर हो देश के अनागर बनो न बन्धु  
 बाबर को राम के बराबर न कीजिये ॥१२॥

कहाँ पूजाजल परिपूर्ण हेमपात्र और  
 कहाँ द्वेष व्यंजनों भरी अशुद्ध क्राकरी ।  
 कहाँ फँसकर की मराल मण्डली औ कहाँ  
 कूल छल छद्म वृत्ति बगुला बिरादरी ।  
 कहाँ भानु कुलभानु उदयस्थली ज्वलंत  
 कहाँ चाँद तारों वाली बाबरी विभावरी  
 कैसे कर सकती है राम जन्मभूमि की ये  
 बरबर बाबर की बाबरी बराबरी ॥१३॥

प्रेम दया द्वारा हिन्दू धर्म का प्रसार हुआ  
 हिंसा या बलातकार भाया हो बताइये ।  
 निज धर्म के प्रसार हेतु अन्य धर भाव-  
 लम्बियों को हमने सताया हो बताइये ।  
 आगे-आगे तलवार पीछे-पीछे धर्म चले  
 ढंग हिन्दुओं ने अपनाया हो बताइये ।  
 मंदिर का निर्माण मस्जिद गिरा के कभी  
 आर्य वंशजों ने करवाया हो बताइये ॥१४॥

## क्रीडा-विभाग

[प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी विद्यालय की वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिता में अपनी उज्ज्वल परम्परा के अनुसार चारों कुंजों (शौर्य, धैर्य, शक्ति तथा सत्य) के चारों दलों (अभिमन्यु, एकलव्य, लवकुश तथा ध्रुव) ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। दलों के अनुसार व्यक्तिगत परिणाम तथा कुंजों के अनुसार सामूहिक स्थानों का विवरण निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत है।]

-सम्पादक

### अभिमन्यु दल गोला प्रक्षेप

क्र०	नाम	कक्षा	स्थान	कुञ्ज
१-	क्षितिज जयपुरियार	११ 'क'	I	धैर्य
२-	चक्रपाणि	११ 'क'	II	शौर्य
२-	शिव कुमार	११ 'ख'	III	धैर्य

### लम्बी कूद

क्र०	नाम	कक्षा	स्थान	कुञ्ज
१-	विपिन धामा	११ 'क'	I	धैर्य
२-	सतीश कुमार	१२ 'क'	II	धैर्य
३-	चक्रपाणि सिंह	११ 'क'	II	शौर्य
४-	आलोक पोरवाल	११ 'क'	III	शक्ति

### भाला फेंक

क्र०	नाम	कक्षा	स्थान	कुञ्ज
१-	क्षितिज जयपुरियार	एकादश 'क'	I	धैर्य
२-	अभिषेक शुक्ल	एकादश 'क'	II	शक्ति
३-	अमित जैन	द्वादश 'ख'	III	शक्ति

### ८०० मीटर दौड़

क्र०	नाम	कक्षा	स्थान	कुञ्ज
१-	आशीष तिवारी	द्वादश 'क'	I	शौर्य
२-	हरीश गुप्त	एकादश 'ख'	II	शौर्य
३-	आनन्द शर्मा	द्वादश 'क'	III	शक्ति

### १०० मीटर दौड़

क्र०	नाम	कक्षा	स्थान	कुञ्ज
१-	विपिन धामा	११ 'क'	I	धैर्य
२-	कमलेश अग्निहोत्री	१२ 'क'	II	शौर्य
३-	देवेश सिंह	११ 'क'	III	शौर्य

माँगे जब सब अपने पुराने पूजा गृह-  
आप बरसाते मिले क्रोध दुःख है यही ।  
चाहें जब सब हम शान्तिपूर्ण समाधान  
आप बन जाते अवरोध, दुःख है यही ।  
आप करें बातें खून की नदी बहाने वाली  
वो खुले आम निर्विरोध, दुःख है यही ।  
और मेरे अनुरोध को भी वोट के गुलाम  
लोग कह देते प्रतिशोध, दुःख है यही ॥१५॥

धर्म व्यक्ति के लिये समाज के लिये है धर्म  
धर्म देश के लिये है, वेद का विधान है ।  
देश हित के जो विपरीत वह धर्म नहीं  
धर्म है वही जो देश का निगहवान है ।  
मेरे भगवान राम ने सिखाया एक धर्म  
जननी और जन्म भूमि स्वर्ग से महान है ।  
मानिये सभी से बड़ा देश को यही है धर्म  
देश से बड़ा न कोई धर्म या ईमान है ॥१६॥



## जो गरल पी गये . . . .

कृष्ण कुमार गुप्ता "निश्चल"

संकटों में हँसो, शूर बनकर धंसो  
संकटों से कभी—वीर डरते नहीं।  
जिन्दगी है समर, आत्मा पर अमर—  
मर के भी हम कभी जग में मरते नहीं ॥

मानता हूँ कि होनी यहाँ अति प्रबल  
और आँधी दिये तो जलाती नहीं।  
ऐसे अवसर भी आते यहाँ हैं कभी—  
शक्ति—सामर्थ्य कुछ काम आती नहीं।

दृष्टि ऊँची किये, रख के पाहन हिये—  
घात सहते पुरुष, आह मरते नहीं।

हार का कष्ट से, जीत का हर्ष से,  
है बहुत जग मे नाता पुराना रहा।  
हास ने होंठ से अश्रु ने नैन से —  
सत्य शाश्वत यही मौत मेरे कहा।

हार रोते न जो, धैर्य खोते न जो —  
उनके आगे कभी दुःख ठहरते नहीं ॥

तन रहे न रहे, धन रहे न रहे —  
हम युगों तक जियें, या इसी पल मरे  
सत्य की राह पर, प्रीति की चाह भर  
हों अकेले अगर तो अकेले चलें।

जो गरल पी गये, वे अमर हो गये —  
लोग उनकी कथा कह थकते नहीं ॥

## ऊँची कूद

क्र०	नाम	कक्षा	स्थान	कुञ्ज
१-	ज्ञान प्रकाश	द्वादश 'क'	I	शौर्य
२-	देवेश सिंह	एकादश 'क'	II	शौर्य
३-	सतीश कुमार	द्वादश 'क'	III	धैर्य

## ४०० मीटर

१-	आशीष तिवारी	द्वादश 'क'	I	शौर्य
२-	अभिषेक शुक्ल	एकादश 'क'	II	शक्ति
३-	विपिन धामा	एकादश 'क'	III	धैर्य

## २०० मीटर

१-	अभिषेक कुमार	एकादश 'क'	I	शक्ति
२-	कमलेश अग्निहोत्री	द्वादश 'क'	II	शौर्य
३-	मोहित अग्रवाल	द्वादश 'ख'	III	सत्य

## १५०० मीटर

१-	आशीष तिवारी	द्वादश 'क'	I	शौर्य
२-	अभिषेक गुप्त	एकादश 'क'	II	शक्ति
३-	हरीश गुप्त	एकादश 'ख'	III	शौर्य

## ४ × १०० मीटर रिले

१-	आशीष तिवारी	शौर्य, कुञ्ज, प्रथम
२-	कमलेश अग्निहोत्री	
३-	देवेश सिंह	
४-	कुलदीप सिंह	
१-	अभिषेक शुक्ल	शक्ति, कुञ्ज द्वितीय
२-	अभिषेक कुमार	
३-	दीपक अग्रवाल	
४-	अंशु बड़ौनी	
१-	विपिन धामा	धैर्य, कुंज तृतीय
२-	शिव कुमार	
३-	संदीप बोड़स	
४-	सुजय सिंह	

# एकलव्य दल

## गोला प्रक्षेप

क्र०	नाम	कक्षा	स्थान	कुञ्ज
१.	रोहित सिंह	नवम 'ख'	I	सत्य
२.	मुदित जैन	दशम 'क'	II	सत्य
३.	वीरेन्द्र विक्रम	दशम 'ख'	III	धैर्य

## लम्बी कूद

१.	ज्ञान सिंह	दशम 'ख'	I	शौर्य
२.	महेन्द्र सिंह	नवम 'क'	II	सत्य
३.	अमित कुमार	नवम 'क'	II	शक्ति
४.	अभिषेक उपाध्याय	नवम 'ख'	III	शक्ति

## भाला प्रक्षेप

१.	मनीष राजपूत	दशम 'ख'	I	शौर्य
२.	प्रणय यादव	दशम 'ख'	II	सत्य
३.	शशांक ओमर	दशम 'क'	III	धैर्य

## १०० मीटर दौड़

१.	मुदित जैन	दशम 'क'	I	सत्य
२.	रवि गुप्त	नवम 'क'	II	धैर्य
३.	ऋषि पुरवार	नवम 'क'	III	सत्य

## ५०० मीटर दौड़

१.	अखिलेश गुप्त	दशम 'ख'	I	शक्ति
२.	नरेन्द्र चौरसिया	दशम 'क'	II	सत्य
३.	अमित कुमार	नवम 'क'	III	शक्ति

## २०० मीटर दौड़

१.	मुदित जैन	दशम 'क'	I	सत्य
२.	रवि गुप्त	नवम 'क'	II	धैर्य
३.	अंकुश शर्मा	दशम 'क'	III	शक्ति

## ४०० मीटर दौड़

१.	स्वयं प्रकाश	दशम 'ख'	I	धैर्य
२.	रवि गुप्त	नवम 'क'	II	धैर्य
३.	विवेक गुप्त	दशम 'ख'	III	धैर्य

### ऊंची कूद

१.	धर्मेन्द्र वर्मा	दशम 'क'	I	शौर्य
२.	अमित कटियार	दशम 'क'	II	शक्ति
३.	शरद श्रीवास्तव	नवम 'क'	III	धैर्य

### १५०० मीटर

१.	नरेन्द्र चौरसिया	दशम 'क'	I	सत्य
२.	अखिलेश गुप्त	दशम 'ख'	II	शक्ति
३.	महेन्द्र सिंह सेंगर	नवम 'क'	III	सत्य

### ४×१०० मीटर रिले

१-	नरेन्द्र चौरसिया		सत्य, प्रथम	कुंज
२-	मुदित जैन			
३-	संजय गुप्त			
४-	ऋषि पुरवार			
१-	अमित राय		शक्ति द्वितीय	कुंज
२-	अंकुश शर्मा			
३-	अमित कुमार			
४-	अखिलेश गुप्त			
१-	ज्ञान सिंह		शौर्य	कुंज
२-	धर्मेन्द्र वर्मा			
३-	हरिओम सिंह			
४-	दीपक मिश्र			

## लवकुश दल

### गोला प्रक्षेप

क्र०	नाम	कक्षा	स्थान	प्रति.	कुंज
१-	ब्रजकान्त	६ क	I	गोला प्रक्षेप	शौर्य
२-	अरुण	६ क	II	"	शक्ति
३-	सुनील	६ ख	III	"	धैर्य

### क्रिकेट बाल थ्रो

१-	ब्रजकान्त	६ क	I	शौर्य
२-	दीपेन्द्र	७ क	II	सत्य
३-	पवन	७ क	III	सत्य
४-	विक्रान्त	६ ख	सांत्वना	शौर्य

## १०० मीटर दौड़

क्र०	नाम	कक्षा	स्थान	कुंज
१-	राजेश सिंह	७ ख	I	सत्य
२-	पुष्पेन्द्र सिंह	७ ख	II	सत्य
३-	राजर्षि अग्निहोत्री	६ ख	III	सत्य

## लम्बी कूद

१-	कुमार विक्रान्त सिंह	६ ख	I	शौर्य
२-	धनंजय सिंह	६ ख	II	सत्य
३-	ब्रजकान्त सिंह	६ क	III	शौर्य

## ४०० मीटर दौड़

१-	राजेश सिंह		1	सत्य
२-	अंशुल खरे		II	शौर्य
३-	अपूर्व अवस्थी		III	शक्ति

## २०० मीटर फाइनल

१-	राजेश सिंह	७ ख	1	सत्य
२-	पुष्पेन्द्र सिंह	७ ख	II	सत्य
३-	कुमार विक्रान्त सिंह	६ ख	III	शौर्य

## ६०० मीटर दौड़

१-	अरुण गुप्त		1	शक्ति
२-	निशान्त प्रताप सिंह	६ क	II	सत्य
३-	आनन्द पाण्डेय	६ क	III	शौर्य
४-	प्रसून चौधरी	६ क	IV	सत्य

## ४ × १०० मीटर रिले

१-	राजेश सिंह	७ ख	सत्य, कुंज प्रथम
२-	निशान्त प्रताप सिंह	६ क	
३-	पुष्पेन्द्र सिंह	६ ख	
४-	दीपेन्द्र साहू	७ क	

१-	कुमार विक्रान्त सिंह	शौर्य कुंज द्वितीय
२-	अंशुल खरे	
३-	ब्रजकान्त सिंह	
४-	आत्म प्रकाश शुक्ल	

१.	अरुण गुप्त			
२.	अपूर्व अवस्थी		शक्ति	कुंज
३.	अभिषेक पाण्डे		तृतीय	
४.	अवनीत गुप्त			
१-	राजेश सिंह	७ ख	शौर्य	१०० I, २०० I, ४०० I
२-	ब्रजकान्त	६ क	शौर्य	गोला I, क्रिकेट बाल I, लम्बी कूद

III

## ध्रुव दल

### गोला प्रक्षेप

क्र०	नाम	कक्षा	स्थान	कुंज
१-	विनोद सिंह	सप्तम 'ख'	I	धैर्य
२-	योगेश दीक्षित	अष्टम 'ख'	II	सत्य
३-	अनुराग यादव	अष्टम 'ख'	III	शक्ति

### लम्बी कूद

१-	विनोद सिंह	सप्तम 'ख'	I	धैर्य
२-	विवेक सिंह	अष्टम 'ख'	II	धैर्य
३-	पवन शुक्ला	अष्टम 'क'	III	शौर्य

### १०० मीटर दौड़

१-	विनोद सिंह	सप्तम ख	I	धैर्य
२-	अश्विनी गुप्त	अष्टम ख	II	शक्ति
३-	अखिलेश सिंह	सप्तम क	III	शक्ति

### २०० मीटर दौड़

१-	पारिजात सिंह	अष्टम क	I	शौर्य
२-	देवेन्द्र सिंह	अष्टम क	I	शौर्य
३-	आशीष शर्मा	अष्टम ख	II	शौर्य
४-	विनय त्रिपाठी	अष्टम क	III	धैर्य

### भाला प्रक्षेप

१-	विवेक सिंह	अष्टम ख	I	धैर्य
२-	सिद्धार्थ ठाकुर	सप्तम क	II	धैर्य
३-	उमेश अत्रि	सप्तम ख	III	शक्ति

क्र०	नाम	कक्षा	स्थान	कुञ्ज
१-	अश्विनी कुमार	अष्टम ख	I	शक्ति
२-	सौरभ	अष्टम ख	II	धैर्य
३-	अखिलेश कुमार	सप्तम क	III	शक्ति

४ × १०० मीटर रिले

१-	अश्विनी गुप्त		शक्ति	कुंज
२-	अनुराग यादव		प्रथम	
३-	अखिलेश सिंह			
४-	अमित शुक्ल			
१-	विनोद सिंह		धैर्य	कुंज
२-	विनय त्रिपाठी		द्वितीय	
३-	सौरभ श्रीवास्तव			
४-	विवेक सिंह			
१-	देवेश दीक्षित		शौर्य	कुंज
२-	मनीष द्विवेदी		तृतीय	
३-	उपेन्द्र यादव			
४-	तनय कुमार			

४०० मीटर दौड़

१-	अश्विनी कुमार	I	शक्ति
२-	सौरभ	II	धैर्य
३-	शरद कुमार	III	धैर्य

# पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर वार्षिक आख्या १९६०-६१

बीसवाँ वार्षिकोत्सव [ दिनांक 23 से 27-9-1991 ]

आज बीसवीं बार पुनः इस मंच से राष्ट्रपुरुष पण्डित दीन दयाल उपाध्याय का पावन स्मरण हो रहा है। उनकी स्मृति में स्थापित इस विद्यालय ने उनके जीवना-दशों पर चलने का सत्प्रयास करते हुये जो पहचान समाज के बीच बनायी है, उसके मूल में पण्डित जी के अतिरिक्त पूज्य श्री गुरु जी ब पुण्यशीला ममतामयी "बूजी" का तप और त्याग है, जिन्होंने इस विद्यालय की भावना को मूर्त रूप देने में अत्यन्त सक्रिय भूमिका निभायी।

इस विद्यालय के संस्थापकों ने उस राष्ट्रपुरुष के निधन को एक दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना मात्र न मानकर, देश-द्रोहियों की सोची-समझी साजिश का परिणाम माना। एतदर्थ इस धिनौनी मनोवृत्ति को सदा सर्वदा के लिये समाप्त करने के सकारात्मक उपाय सोचे। उनके बोझिल अन्तर्मनों की भावनायें उद्वेलित हुई और विचार सक-ल्पबद्ध। वे संकल्पवान विचार ही इस विद्यालय की पूर्व-पीठिका हैं। पं० दीनदयाल उपाध्याय के उदात्त विचारों को शतधा स्वरूपों को अंकुरित और पल्लवित करना ही इस विद्यालय का लक्ष्य रखा गया। परिणामस्वरूप २३ फरवरी १९७० को परम पूज्य श्री गुरु जी के परम पावन हाथों से इसका शिलान्यास हुआ और १८ जुलाई १९७० को गुरु पूर्णिमा के दिन इसकी विधिवत् कक्षायें प्रारम्भ हो गयीं।

पं० दीन दयाल जी भारत, भारती और भारती-यता के मूर्तिमान स्वरूप थे। इस विद्यालय के प्रयोग और परिणाम उनकी इसी भावना की प्रतिकृति हैं। दृढ़ इच्छाशक्ति सम्पन्न आदर्श पीढ़ी जनैः-जनैः अपना अस्ति-तत्व प्रकट करने लगी है और इसीलिए हम विश्वास पूर्वक कह सकते हैं कि यह विद्यालय ब्रिटिश दासता के काल से चली आ रही पब्लिक स्कूलों की चकाचौंध भरी भ्रामक परम्परा में एक सुस्पष्ट, गतिमान, तेजो-दीप्त और प्रभावी उपक्रम है।

भवन :

जिस भूमि पर यह विद्यालय स्थित है वह ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल के द्वारा प्रदत्त है। महामण्डल की इस उदारता का विद्यालय चिर ऋणी रहेगा। भवन निर्माण का पूर्ण श्रेय स्वर्गीया श्रीमती सुशीला नरेन्द्र जीत सिंह को है, जिनको हम लोग स्नेहवश "बूजी" कहा करते थे। उन्होंने इसके निर्माण का पूरा व्यय वहन करके तथा अपनी देख-रेख में ही इसको बनवाकर अपने अप्रतिम विद्या-प्रेम के साथ-साथ अगाध देश-प्रेम का भी परिचय दिया है। वस्तुतः उनके प्रति श्रद्धा की अभिव्यक्ति उनसे सुपरिचित किसी भी व्यक्ति के लिये शब्दातीत है। आवश्यकतानुसार विद्यालय-भवन का और भी विकास हो रहा है।

## शिक्षण :

यह विद्यालय पष्ठ कक्षा के मात्र २४ छात्रों से प्रारम्भ होकर निरन्तर प्रगति करता हुआ आज पूर्ण विकसित वैज्ञानिक वर्ग में मान्यता प्राप्त विशेष कोटि का इण्टरमीडिएट विद्यालय है। प्रत्येक कक्षा में दो अनुभाग हैं और विद्यालय के १४ अनुभागों में इस समय छात्रों की संख्या ६८७ है। इस विद्यालय को शासन के द्वारा विशिष्ट विद्यालय के रूप में कुछ विशेषताओं के आधार पर ही मान्यता दी गयी थी, जिनमें छात्रों पर व्यक्तिगत ध्यान प्रमुख है।

शिक्षा विभाग के द्वारा निर्धारित विषयों के अतिरिक्त छात्रों को उनकी अभिरूचियों के अनुरूप सक्षम बनाने का प्रयास अन्य पाठ्येतर गतिविधियों एवं प्रशिक्षणों द्वारा किया जाता है। पाठ्य-विषयों का स्तर ऊँचा रखने हेतु हम सतत् प्रयासशील हैं।

## वेश :

अनुशासन की दृष्टि से निर्धारित वेश में ही विद्यालय आना पड़ता है जिसमें ऋतु के साथ-साथ परिवर्तन होता रहता है।

## आचार्य :

विद्यालय में पढ़ाने वाले आचार्यों की संख्या प्रधानाचार्य सहित इस समय २४ हैं। लगभग सभी प्रशिक्षित परास्नातक हैं। अवकाश प्राप्त आचार्य श्री जागेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव भी अपने ज्ञान और अनुभव से हमारे छात्रों को लाभान्वित कर रहे हैं। विद्यालय के संस्थापक प्राचार्य श्री चन्द्र पाल सिंह का निस्पृह जीवन हम सबको सतत् प्रेरणा देता रहता है। हम इन महानुभावों का आभार शब्दों में प्रकट नहीं कर सकते।

## परीक्षा-परिणाम :

प्रारम्भ से अब तक परीक्षा-परिणाम उत्तम ही रहता रहा है। विगत सत्र का परीक्षा परिणाम इस प्रकार रहा—

	हाई स्कूल	इण्टरमीडिएट
कुल छात्र	९५	९३
प्रथम श्रेणी	९४	८२
द्वितीय श्रेणी	०१	११
ससम्मान	७७	१८
प्रदेश में स्थान	२२ स्थान	सातवाँ, आठवाँ-२, तेरहवाँ
विशेष योग्यतायें	४००	१२७
<b>प्रतियोगी परीक्षायें :</b>		
जे० ई० ई० (आई० आई० टी०)		०७
रुडकी	—	०५
सी० ई० ई० (एम०— एन० आर० ई०)	—	१५
अन्य (दयालबाग आदि)	—	०४
सी०बी०एस०ई०— (मेडिकल)	—	०३
सी० पी० यम० टी०— (मेडिकल)	—	०३

बोर्ड परीक्षा के अतिरिक्त शिक्ष - विभाग द्वारा संचालित एकीकृत छात्रवृत्ति परीक्षा तथा राष्ट्रीय प्रतिभा खोज ( छात्रवृत्ति ) परीक्षा में भी हमने एक कीर्तिमान स्थापित किया है।

अखिल भारतीय परीक्षा ( आई० ए० पी० टी० संचालित ) में भी हमारे विद्यालय के छात्रों ने एक उज्ज्वल परंपरा स्थापित की है। इस वर्ष हमारे दो छात्रों ने उच्चयम अंक प्राप्त कर स्वर्ण पदक प्राप्त किये।

विद्या भारती द्वारा संचालित अखिल भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में भी हमारे छात्र प्रति वर्ष बैठते हैं तथा शत प्रतिशत सफल होते हैं। इसी प्रकार श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल द्वारा संचालित मानस प्रवेश, मानस-किशोर व मानस-प्रवीण व अन्य स्थानों पर होने वाली वाद-विवाद भाषण प्रतियोगिता आदि में हमारे छात्र उत्कृष्ट स्थान पाकर पुरस्कृत होते रहते हैं।

### राष्ट्रीय प्रतिभा खोज :

एन० सी० ई० आर० टी० के द्वारा आयोजित यह परीक्षा तीन चरणों में होती है। प्रथम राज्य स्तर पर, द्वितीय राष्ट्रीय स्तर पर तथा तृतीय साक्षात्कार। साक्षात्कार के बाद चयनित विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति उस समय तक मिलती रहती है जब तक वह अपने ही देश में अध्ययन करते हैं। इस वर्ष अपने विद्यालय के ५४ छात्र राज्य स्तरीय परीक्षा में सम्मिलित हुये जिनमें से राष्ट्रीय स्तर की परीक्षा के लिये २६ छात्र चुने गये। साक्षात्कार हेतु ०७ छात्रों का चयन हुआ साक्षात्कार के पश्चात अंतिम परिणाम प्रतीक्षित है।

### छात्रवृत्तियाँ :

पिछले परीक्षा परिणामों के आधार पर हमारे अनेक छात्र विविध प्रकार की छात्रवृत्तियाँ पाने के अधिकारी घोषित हुए हैं। इस समय विद्यालय में विभिन्न छात्र-वृत्तियाँ पाने वाले छात्रों की कुल संख्या ३९७ है। जिसका विवरण निम्नांकित है -

(१) एकीकृत छात्रवृत्ति	-	१३४
(२) एकीकृत छात्रवृत्ति-क	-	०२
(३) राष्ट्रीय छात्रवृत्ति	-	८८
(४) राष्ट्रीय प्रतिभा खोज	-	०४
(५) योग्यता छात्रवृत्ति, उ० प्र०	-	७३
(६) जू० हा० स्कूल यो० छात्रवृत्ति	-	७६
(७) सैनिक छात्रवृत्ति	-	०१

(८) दानदाता छात्रवृत्ति	-	१९
कुल	-	३९७

सरकारी छात्रवृत्तियों के अतिरिक्त कुछ दानशील महानुभावों तथा न्यासों से भी हमारे १९ छात्रों को जिनकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है, सहायता मिलती है। इनमें जय नारायण चेरिटेबिल ट्रस्ट, श्री सोमनाथ चोपड़ा, लायन्स क्लब ईस्ट कानपुर तथा श्री मोल्हू सिंह भगवान महावीर निर्माण स्मृति ट्रस्ट श्री चन्द्र भान पाण्डेय तथा विद्यालय के पूर्व छात्र श्री राजेश गर्ग आदि प्रमुख हैं।

इस वर्ष से हम एक अभिनय के क्षेत्र में पुरस्कार देना प्रारम्भ कर रहे हैं। इस पुरस्कार का नाम होगा "गुरुवर शरण अवस्थी पुरस्कार"। यह पुरस्कार हमारे विद्यालय के पूर्व छात्र स्वर्गीय गुरुवर शरण अवस्थी की स्मृति में होगा, जो अपनी अद्भुत प्रतिभाओं की एक झलक मात्र देकर इस संसार को त्याग कर चले गये। उसके पूज्य पिता डा० सन्तशरण अवस्थी, निदेशक कानपुर विश्व विद्यालय ने उसकी स्मृति में इस पुरस्कार की स्थायी व्यवस्था की है। उनकी उदारता के लिए उन्हें धन्यवाद।

### शारीरिक शिक्षा :

मानसिक विकास के साथ-साथ हमारे विद्यालय में शारीरिक कार्यक्रमों की भी विशेष योजना है। सामू-हिकता की भावना हेतु योगासन व समता पर विशेष ध्यान देते हैं। अपने विद्यालय में पर्याप्त क्रीडा-क्षेत्र न होने के कारण हम हॉकी-फुटबाल जैसे खेलों को भली प्रकार नहीं सिखा पाते हैं, किन्तु हमने अपने सीमित साधनों में कबड्डी, खो-खो, वांलीबाल, जैसे मैदानी खेल तथा टेबिल-टेनिस जैसे अन्तर्कक्षीय खेलों को विकसित करने का सफल प्रयास किया है।

### एन० सी० सी० :

सुरक्षा सेवाओं में भी हमारे विद्यालय का योगदान रहे, इस दृष्टि से अपने विद्यालय में राष्ट्रीय कैंडेट कोर

की सीनियर तथा जूनियर इकाइयाँ सफलता पूर्वक चल रही हैं। जिनका सफल संचालन विद्यालय के ही दो आचार्य कर रहे हैं।

#### पुस्तकालय :

विद्यालय व पुस्तकालय विकासशील है। इसमें लगभग ७०,००० रु० मूल्य की लगभग १०,००० पुस्तकें हैं। विद्यालय के वाचनालय में ६ दैनिक, ४ साप्ताहिक, ४ पक्षिक, ११ मासिक पत्र, पत्रिकाएँ आती हैं। मुख्य समाचार, सुभाषित, सामान्य ज्ञान की बातें श्याम पट्ट पर भी लिख दी जाती हैं।

#### पाठ्यक्रमेतर गतिविधियाँ :

पाठ्येतर क्रियाकलाप भी शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग है। अतः बच्चों में उत्तरदायित्व की भावना के विकास के लिये स्वशासित बाल भारती [कक्षा अष्टम तक के लिये] किशोर भारती [कक्षा नवम से द्वादश तक] तथा तरुण भारती पूर्व छात्रों के लिये गठित की गयी है। विद्यालय की संस्थायें पूर्णरूप से क्रियाशील हैं। तरुण भारती की सक्रियता भी बढ़ रही है। उनके तत्वावधान में समय-समय पर होने वाले विभिन्न कार्यक्रम जैसे वाद-विवाद, महापुरुषों की जयन्तियाँ उनकी प्रतिभा के विकास में सहायक होते हैं। छात्रों की प्रतिभा विकसित करने हेतु विद्यालय में दो कम्प्यूटर सेट लगाए गए हैं।

प्रायः प्रतिवर्ष ही हमारे बच्चे दीपावली के अवकाश में देश-दर्शन हेतु बाहर जाते हैं। जिसमें न केवल उन्हें देश के भाग विशेष की कुछ व्यवहारिक जानकारी मिलती है वरन् उन्हें सामान्य ज्ञान में भी वृद्धि होती है।

#### छात्रावास :

विद्यालय के ऊपरी खण्ड में तथा पीछे छात्रावास है। इसकी व्यवस्था एक मुख्य अधीक्षक तथा दो सहायक अधीक्षक करते हैं। इस समय छात्रावासीय छात्रों की संख्या १७२ है। छात्रावास-अधीक्षक छात्रावास में ही रहकर अनुशासन, स्वास्थ्य, भोजन, पढ़ाई आदि की देख-रेख करते हैं। आवासीय बच्चों में बिहार तथा उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों के छात्र हैं।

#### नैतिक शिक्षा :

पाठ्य-विषयों के अतिरिक्त समय-सारणी में प्रति-दिन नैतिक शिक्षा तथा सदाचार का प्रावधान है। वन्दना के पश्चात् अध्ययन प्रारम्भ होने से पूर्व निर्धारित आचार्य नियमित रूप से शिष्टाचार अथवा नैतिक गुणों के सम्बन्ध में चर्चा करते हैं अथवा किसी महापुरुष के जीवन पर प्रकाश डालते हैं। साथ ही रामायण, गीता आदि ग्रन्थों से चुने हुये अंश भी कण्ठस्थ कराये जाते हैं। प्रत्येक मंगलवार को रामचरित मानस पर साप्त हिक प्रवचन भी होता है।

इस प्रकार हम छात्रों को आदर्श नागरिक बनाने एवं समाजोन्मुखी जीवन-यापन करने की प्रेरणा देने का प्रयास कर रहे हैं। ईश्वर से अनुग्रह एवं आप से सद्भाव बनाये रखने की कामना है।

—प्राचार्य

---

---

संस्कृत विभाग

---

---

# श्रीरामः

-गणेश शंकर बाजपेयी

आचार्य

'रम' रमणे घातोः राम-शब्दः निष्पद्यते । अयं शाश्वत् अस्ति । सर्वकालिकता सर्वव्यापकत्वं च तस्य प्रधानगुणोऽस्ति । अद्यत्वे महात्मनः तुलसीदासस्य रामः जनानाम् आश्रयः, जनानां त्राता अस्ति । सोऽस्माकं जीवनपथस्य अनुपमं सशक्तं च संबलमस्ति ।

ऋग्वेदस्य दशममण्डले 'राम' शब्दस्य प्रयोगमस्ति ।-

“रामेवोच्चम सुरेमघवस्तु”

बाल्मीकि रामायणे तु रामस्यैवाख्यानमस्ति, परंच तत्र रामः ईश्वरः नहि ईश्वर इव अस्ति । श्रीरामः महान् पराक्रमसम्पन्नः, प्रियः चन्द्र इव, क्रोधे कालाग्निः, क्षमया पृथ्वी समः अस्ति । यथा रामायणे-

“विष्णुना सद्दृशोवीर्ये सोमवत्प्रियदर्शनः ।  
कालाग्नि सद्दृशः क्रोधे क्षमया पृथिवीसमः ॥”

बाल्मीकेः एतत्कथनं रामस्य महिमानं पुरुषत्वं च प्रकटयति ।

पुराणेष्वपि रामस्य चर्चा सर्वत्र अस्ति । महाभारते 'रामोपाख्यानम्' रामस्य प्रभावं प्रकटयति । वायु-विष्णु पुराणे, हनुमन्नाष्टके, अध्यात्म रामायणे, श्रीमद्भागवत महापुराणेत्यादि ग्रन्थेषु रामस्य उल्लेखः येषु प्रसंगेषु अस्ति । ते सकलाः एकतः रामस्य अति प्राचीनतां सिध्यन्ति अन्यतः तु तस्य सर्वत्र व्यापकत्वं प्रकटयन्ति ।

रामचरितमानसे (बालकाण्डे) महाकविना तुलसीदासेन रामस्य प्रादुर्भावं वर्णितम्-

“व्यापक ब्रह्म निरंजन, निर्गुन विगत विनोद ।  
सो अज प्रेम भगतिबस, कौशल्या के गोद ।”

रामस्य ब्रह्मत्वं विविध स्थलेषु अस्ति यथा-एकदा माता कौशल्या बालं रामं स्नात्वा वस्त्राभूषणैः अलंकृत्य पालनायां शाययित्वा स्वयम् इष्टदेवं पूजितम् अगच्छत् । तत्रगते भोगस्थले अपि बालं रामं दृष्ट्वा सा पुनः पालनायाः समीपं प्रत्यागच्छत् तत्रापि शयानं रामं दृष्ट्वा आश्चर्यचकिता जाता । एकस्मिन्नेव काले मित्र-भित्त-दशायां रामं प्राप्य माता कौशल्या भीता । भीतां जननीं श्रीरामः स्वपरिचयमयच्छत्-

“देखि राम जननी अकुलानी । प्रभु हँसि दीन्ह मधुर मुसुकानी ॥  
 दो०- देखरावा मार्ताह निज अद्भुत रूप अखण्ड ।  
 रोम-रोक प्रति लागे कोटि-कोटि ब्रह्मण्ड ॥

अस्माकमियं मान्यता यत् धर्मस्य स्थापनाय अधर्मस्य च विनाशाय निगुण-ब्रह्म समये-समये सगुणः  
 साकारोऽपि भवति । यथा हि वर्णितम्—

“जब-जब होइ धरम के हानी । बाढ़हि असुर अधम अभिमानी ॥  
 तब-तब प्रभु धरि विविध सरीरा । हुरहि कृपानिधि सज्जन पीरा ॥

श्रीमद् भगवद्गीतायाम्—

यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।  
 अभ्युत्थामधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥  
 परिव्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।  
 धर्मं संस्थापनार्थाय संभवामि युगे-युगे ॥

साधूनां परिव्राणार्थं ब्रह्मोऽवतरति । यथाहि-  
 रामचरित मानसे वर्णनमस्ति-

एकदा रामः मुनिभिः सह वनमगच्छत् । मार्गं तेन अस्थिनां संचयं दृष्टम् । रामस्य हृदयम-  
 वसीदत् । निशाचराणां सहारस्य निश्चयमकरोत्-

“पनि रघुनाथ चलेवन आगे । मुनिवर वृन्द विपुल संग लागे ॥  
 अस्थि समूह देखि रघुराया । पूछिअ मुनिन्ह लागि अति दाया ॥  
 जानतहूँ पूछिअ कस स्वामी । सबदरसी तुम्ह अतरजामी ॥  
 निसिचर निकर सकल मुनिखाये । सुनि रघुवीर नयन जल छाये ॥  
 निसिचर हीन करऊँ महि, भुज उठाइ पन कीन्ह ।  
 सकल मुनिन्ह के आश्रमन्हि, जाइ-जाइ सुख दीन्ह ॥”

रामनाम महिमा अपिवर्णिता-

वरतऊँ राम नाम रघुवर को । हेतु कृसानु भानु हिमकर को ॥

राम नाम्नि र् + आ + म वर्णानां योगोवर्तते ।

‘र’ अग्निरूपे पापान् दहति ।

‘आ’ भानुरूपे अज्ञानं विनाशयति ।

‘म’ चन्द्ररूपे जीवनतापं शमित्वा सुख-शान्ति-शीतलतायाः अजस्र वर्णनं करोति ।

रामः ब्रह्ममयमस्ति । यः भक्तानां मनांसि तोषायतेषांयं, कल्याणार्थं च मानव रूपं धारयति । सः  
 मर्यादा पुरुषोत्तमः आसीत् ।

आजापालने रामः मर्यादायाः यं मानदण्डं स्थापयत् सोऽद्वितीयः । राजतिलक समये यदा रामाय पिता वनगमनम् आदिशत् तदा रामः मातरमवदत्--

“पिता दीन्ह मोहि कानन राजू । जहँ सब भीति मोर बड़काजू ॥  
आयसु देहि मुदित मन माता । जेहि मुद मंगल कानन जाता ॥  
जनि सनेह बस डरपति मोरे । आँनदु अंब अनुग्रह तोरे ॥”

ज्येष्ठानाम् अर्चनं कृतज्ञता च रामस्य स्वभावः । गुरु वशिष्ठं विश्वामित्रं वा प्रति प्रणतिः रामस्य गुस्ता । यदा रामः लंकां विजित्य अयोध्यां प्रत्यागतः । तदा माता कौशल्या रामं तथैव सुकुमारं कोमलं च अनुभवति यथा बाल्यावस्थायाम्--

“हृदय विचारति वारह बारा । कवन भीति लंकापति मारा ॥”

एतैः स्पष्टमिदं यत् रामः नररूपे मातृपितृ भक्तः, आदर्श पतिः, आदर्श भ्राता, कृपालुः स्वामी, प्रजापालकः, पाप-ताप नाशकः, सर्वव्यापी ब्रह्मा, लोकस्थानुरञ्जनकर्ता आसीत् । अतएव रामं भजेम ।

राम भजन विनु गति चहत् अथवा पद निर्वाण ।  
ज्ञानवान अति सोपि नर पशु विनु पूछ विषाण ॥

## हास्याय

( १ )

प्रथम :- (स्वमित्तं प्रति) भोः ! ब्रूहि-दिवाकरोऽस्ति दूरे आगरा नगरं वा ?

द्वितीया :- मित्र ! आगरा नगरं दूरे अस्ति ।

प्रथमः :- कथं ज्ञायते ?

द्वितीय :- प्रत्यक्षं दृश्यते अस्माभिः दिवाकरः । आगरा नगरं तु न दृश्यते ।

( २ )

पुत्र :- मात ! ममाऽयं प्रतिवेशी अतीव लोभी वर्तते !

माता :- कथमेव ब्रवीषि ?

पुत्र :- तस्य लघो तनयस्य गल नलिकायां पणमेकम् अगच्छत्, सा तम् अधोमुखं विधाय मुष्टिप्रहारं कृत्वा पणं बहिः निस्सारयत् ।

( ३ )

## श्री रामय चरित्रम्

संक्षेप गुप्त, अष्टम 'क'

भगवतः श्री रामस्य चरित्रम् अवर्णनीयमस्ति तथापि अहं तस्य चरित्रस्य संक्षिप्त वर्णनं करोमि ।  
जगति सर्वोन्नतम् चरित्रम् भगवतः रामस्य एव अस्ति । रामायण ग्रन्थे श्री राम-चरित्रस्य विशद वर्णनं विद्यते ।  
सर्वे जनाः तम् मर्यादा पुरुषोत्तमोऽपि कथयन्ति । प्रजार्थं रामः महान्तम् आदर्शं स्थापितवान् । अस्य सम्पूर्णं  
जीवनम् एव प्रेरणास्रोतम् अस्ति । पित्तोः वचांसि पूयितुं सः सीता-लक्ष्मणाभ्यां सहवनमगच्छत् । रावण  
सदृशान् अनेकान् दुर्जनान् अहनत् । सांः ताडकां सुबाहु च हत्वा सज्जनान् साधून् च अरक्षत् । अहिल्यायाः  
उद्धारमकरोत् । सः सुग्रीवाय तस्य राज्यमदापयत् । अयोध्यां गत्वा सः प्रथमं स्वां विमातां कैकेयीम् अनमत् ।  
अयोध्याः राज्यमकरोत् । तस्य राज्ये प्रजाः अतीव सुखिनः आसन् । प्रजार्थं सः सीतामपि अत्यजत् ।

यदा श्री रामः सीता-लक्ष्मणाभ्यां सह वनमगच्छत्तदा तान् आनेतुं भरतोऽपि ऋषिभिः सह  
रामस्य समीपे वनमगच्छत् । यदा महर्षिः जाबालिः राममकथयत् यत् सः अयोध्यां गत्वा राज्यं करोतु तदा  
श्री रामः अवदत् यत् भो ! महर्षे, भवान् यत् किञ्चित् अपि कथयति तत् सर्वं मम मंगलेच्छयैव । परं तदहं  
स्वीकृतुं मसमर्थोऽस्मि यतः हि तत् उत्तमपुरुषाणां मार्गः नास्ति । चरित्रमेव कुलीनपुरुषस्य आत्मा अस्ति । चरित्रे  
च प्रतिज्ञा पालनं सर्वथः मुख्यमस्ति । महर्षे ! --

ऋषयश्चैव देवाश्च सत्यमेव हि मेनिरे ।

सत्यवादी हि लोकेऽस्मिन् पदं गच्छति-चाक्षयम् ॥

सत्यमेवेश्वरो लोके, सत्ये धर्मः सदाश्रितः ।

सत्यमूलानि सर्वाणि, सत्यान्नास्ति परं पदम् ॥

नैवं लोभात् न मोहाद् वा न चाज्ञानात् तमोन्वितः ।

सेतुं सत्यस्य भेत्स्यामि गुरोः सत्य पतिश्रवः ॥



# अस्माकं विद्यालयस्य वार्षिकोत्सवः

## (पं० दीनदयाल उपाध्याय जयंती)

प्रवीन कटियार

अष्टम 'क'

अस्माकं प्रेरणा-स्रोतुः युगद्रष्टा पं० दीनदयाल उपाध्यायस्य पञ्चसप्त जन्म दिवसस्य एक दिवस प्रथमे एव अस्माकं विद्यालयस्य विशः वार्षिकोत्सवः प्रारम्भः जातः । अयम् उत्सवः चतुर्षु दिवसेषु सम्पन्नः अभवत् ।

वार्षिकोत्सवस्य पूर्वम् एव सकलाः विद्यार्थिनः अध्यापकाः अन्ये चापि कर्मचारिणः कार्येषु व्यस्ताः आसन् । मार्जकाः सर्वत्र मार्जनं कृत्वा विद्यालयपरिसरं स्वच्छं व्यवस्थितं चाकुर्वन् ।

### प्रथमः दिवसः

प्रथमे दिवसे (२४ तम् सितम्बरे) सर्वे छात्राः सायंकाले विद्यालये उपस्थिताः अभवन् । समारोहस्य प्रबन्धमतीव शोभनमासीत् । आकर्षकं द्वारं मंचं च सर्वेषाम् चित्तं अहरताम् । उत्सवस्य कालः शीघ्रमेव सञ्जातः । अस्य वार्षिकोत्सवस्य समारोहस्य मुख्य अतिथिः राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघस्य विशिष्ट सदस्यः, अस्माकं विद्यालयस्य प्रबन्ध समितेः सदस्यः, विद्या भारती समितेः संरक्षकः माननीय भाऊ राव देवरस महोदयः आसीत् ।

यदा मुख्य-अतिथिः अन्येचापि गणमान्य-जनाः मंचे आगच्छन् तदावयं सकलाः छात्राः सावधानाः उत्तिष्ठन् । ततः सर्वतः प्रथमं विद्यालयस्य परम्परानुसारं वयं सर्वे छात्राः विद्यायाः देव्याः सरस्वत्याः स्तुतिम् अकुर्वन् । तदनन्तरम् मुख्य अतिथिः अन्ये चापि गणमान्याः अतिथयः पं० दीनदयाल उपाध्यायस्य चित्रे माल्यार्पणम् अकुर्वन् । मुख्य-अतिथेः स्वागतार्थं सैनिक छात्राः पथसंचलनम् अकुर्वन्, एकं विशति च गुलकाभिः ध्वनिः अपि अभवत् ।

“मानसिक-विकासेन सह शारीरिकविकासमपि आवश्यकम् ।” “स्वस्थ शरीरे एव स्वस्थ मस्तिष्कं निवसति ।” एतत् चरितार्थं कुर्वन्तः पृथक्-पृथक् चतुर्णाम् दलानां छात्राः योगासनानि अकुर्वन् । तदनन्तरम् अस्माकं विद्यालयस्य प्रधानाचार्यः श्री ओमशङ्कर त्रिपाठी महोदयः वार्षिक विवरणं प्रस्तुतसः मकरोत् । स अकथयत् यत् श्रीमती सुशीला नरेन्द्रजीत सिंह महोदया जनाः स्नेहेन “बूजी” इति कथयन्ति स्म सा विद्यालयस्य निर्माणमकारयत् । सः च कथयति स्म यत् एकः दीनदयालः गतः तर्हि किमभवत् ? अस्मात् विद्यालयात् अनेके दीनदयालाः निर्मिताः भविष्यन्ति । ततः सर्वे छात्राः “ये उथल-पुथल, उत्ताल लहर” इत्यादि गीतम-

गायन् । ततः विद्यालय-प्रबन्ध समितेः अध्यक्षः बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंहः मुख्य अतिथेः परिचयम् आकारयत् । तदा मुख्य अतिथिः परिषदस्य परीक्षायाम् ससम्मान-अंकैः उत्तीर्णैः छात्रैः पारितोषिकम् अयच्छत्, अस्मान् सम्बोधयत् च यत्-भो छात्राः । यूयं शिक्षया सह देशस्य समस्यासमाधानार्थम् अपि कार्यं कुरुत, देशं प्रति स्व कर्तव्यम् पालयत च ।

यदा मुख्य अतिथेः महोदयानां भाषणम् पूर्णम् अभवत् । तदैव जलवृष्टिः संजातः । परं वयं सर्वे छात्राः शान्तिपूर्वकं राष्ट्रगानम् अकुर्वन् । राष्ट्रगानस्य अनन्तरम् प्रथम दिवसस्य कार्यक्रमाः समाप्ताः अभवन् ।

### द्वितीयः दिवसः

द्वितीय दिवसे (२५ तम् सितम्बरे), सायं षट्वादने सर्वप्रथमं बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह महोदयः अन्ये चापि गणमान्याः अतिथयः पं० दीनदयाल उपाध्यायस्य चित्रे माल्यार्पणम् अकुर्वन् । तदनन्तरं सांस्कृतिक-कार्यक्रमाः अभवन् ।

कार्यक्रमाणाम् श्रृंखलायां सर्वप्रथमं छात्राः संभूय अभिनय गीतम् अगायन् । तदनन्तरम् संस्कृत-भाषायाम् 'लवकुश जयम्' इत्याताख्यं एका नाटिका अभवत् । अस्याः नाटिकायाः पश्चात् आंग्ल भाषायाः एकांकी अभवत् । तत्पश्चात् हास्य नाटिकायाः प्रस्तुतिः हिन्दी भाषायाम् अभवत् । तत्पश्चात् आंग्ल भाषायाम् एका अन्या लघु नाटिका अभवत् । अन्ते च हिन्दी भाषायाम् एकं नाटकम् अभवत् । रात्री सार्धनववादनकाले सांस्कृतिक कार्यक्रमाः समाप्ताः । सांस्कृतिक कार्यक्रमान् दृष्ट्वा जनाः अति प्रसन्नाः भूत्वा गृहं गताः ।

### तृतीयः दिवसः

तृतीये दिवसे विद्यालयस्य विशालकक्षे वाद-विवाद प्रतियोगिता अभवत् । अस्याम् प्रतियोगितायाम् अनेकेषां विद्यालयानां बालकाः बालिकाः च सम्मिलिताः अभवन् । बालिकानाम् वाद-विवाद प्रतियोगितायाः विषयः आसीत्-“रामजन्मभूमिः बाबरी मस्जिदः च ।” बालिकानाम् वाद-विवाद प्रतियोगितायाः विषयः आसीत्-“आरक्षणः आर्थिक आधारे भवेत् ।” बालकाः बालिकाः च विषयस्य पक्षे-विपक्षे वा स्वान् स्वान् तर्क-पूर्णान् विचारान् अप्रकटयन् । निर्णायकाः निर्णयम् अकुर्वन् पुरस्कार वितरणम् च अभवत् ।

### चतुर्थः दिवसः

अद्य वार्षिकोत्सवस्य अन्तिम दिवसः आसीत् । अद्य विद्यालयस्य सभागारे कवि-गोष्ठी अभवत् । अस्मिन् कार्यक्रमे अनेके विद्वांसः, हास्य कवयः च काव्यपाठमकुर्वन् ।

इत्थम् अस्माकं विद्यालयस्य विशः वार्षिकोत्सवः सम्पन्नः अभवत् ।



मातृदेवो भव  
पितृदेवो भव  
आचार्यदेवो भव

विश्वम्भर दयाल

दशम 'क'

अस्मभ्यं अत्यावश्यकम् यत् वयम् पित्रोः आचार्यस्य च सेवा कुर्याम । एतस्य सन्दर्भे मनुः अकथयत्—  
पित्रोः आचार्यस्य च सेवा एव परमोधर्मः, अन्ये उपधर्माः—

“त्रिष्वेतेष्वतिकृत्यं हि पुरुषस्य समाप्यते ।

एषः धर्मः परः साक्षादुपधर्मोऽन्य उच्यते ॥”

(इन तीनों की सेवा से ही पुरुष का सब कृत्य समाप्त हो जाता है यानी उसे कुछ भी करना शेष नहीं रहता । यही साक्षात् परमधर्म है; इसके अतिरिक्त अन्य सब उपधर्म कहे जाते हैं ।)

“ते एव हि त्रयो लोकास्त एव त्रय आश्रमाः ।

ते एव हि त्रयो वेदास्त एवोक्तास्त्रयोऽजनयः ॥”

(वे ही तीनों लोक, वे ही तीनों आश्रम, वे ही तीनों वेद और वे ही तीनों अग्नि कहे गये हैं ।)

ईश्वरोऽपि गीतायाम् अकथयत् यत् देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं एव शरीरस्य तपः --

“देवद्विज गुरु प्राज्ञपूजनं शीघ्रमार्जवम् ।

ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तपउच्यते ॥”

गुरुजनानां सेवा

मनुष्यः केवलं गुरोः सेवया अपि परब्रह्म परमात्मा प्राप्तुं शक्नोति । गीतायां अपि वर्णनं यत्—

“अन्ये त्वेवमजानन्तः श्रुत्वान्येभ्य उपासते ।

तेऽपि चातितरन्त्येव मृत्युं श्रुतिपरायणः ।”

गुरुः अस्माकम् रक्षकः अस्ति । तैस्तस्य सन्निधौ एव वयम् ईश्वरस्य दर्शनं कर्तुं शक्नुमः । अतीव महत्त्वम् गुरोः । मनुः अकथयत्--

“नीचं शय्यासनं चास्य सर्वदा गुरुन्निधौ ।  
गुरोस्तु चक्षुर्विषये न यथेष्टासनो भवेत् ॥”

### पित्रोः सेवा

सर्वोच्चः पित्रोः सेवा । मनुः कथयति--

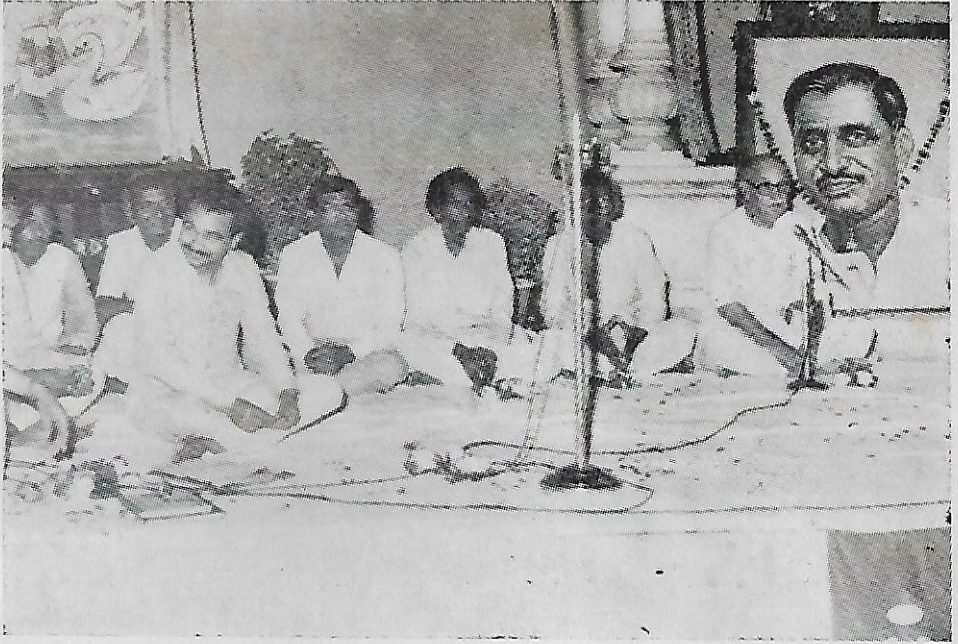
“उपाध्यायान्दशाचार्यं आचार्याणांशतंपिता ।  
सहस्रं तु पितृन्माता गौरवेणाति रिच्यते ॥”

(बड़प्पन में दस उपाध्यायों में से एक आचार्य, सौ आचार्यों में से एक पिता ओर हजार पिताओं में एक माता बड़ी है ।)

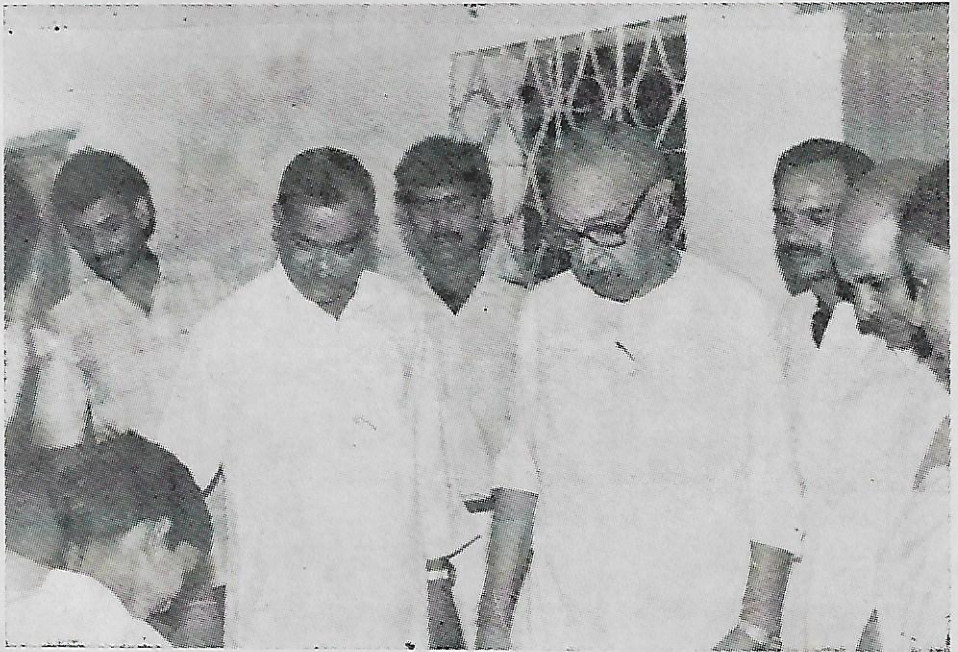
“यं मातापितरौक्लेशं सहते सम्भवे नृणाम् ।  
न तस्य निष्कृतिः शक्या कर्तुं वर्षशतैरपि ॥”

(मनुष्य की उत्पत्ति के समय में जो क्लेश माता-पिता सहते हैं उसका बदला सौ वर्षों में भी सेवादि करके नहीं चुकाया जा सकता ।)





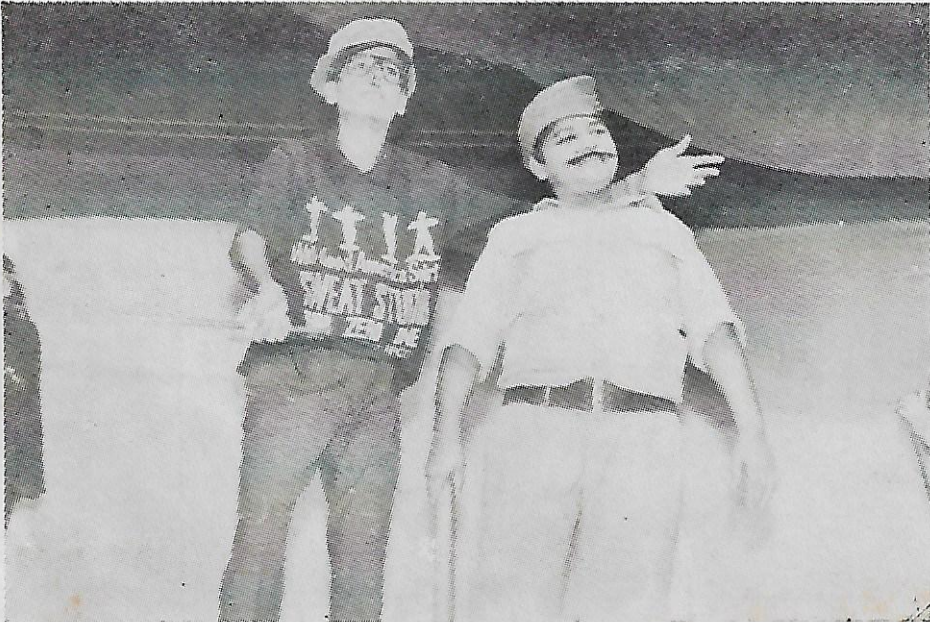
कवि सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए माननीय बैरिस्टर साहब तथा आमंत्रित कविगण



विज्ञान प्रदर्शनी का उद्घाटन करने जाते हुए माननीय बैरिस्टर साहब । साथ में हैं  
विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री ओम शङ्कर जी ।



बायें से—अम्बरीश अवस्थी नवम क (चन्द्रकेतु की भूमिका में) मध्य में—सौरभ शुक्ल दशम क (राम की भूमिका में) अन्त में—राजेश अवस्थी नवम क (लव की भूमिका में) ।



हास्य नाटिका का एक दृश्य—प्रशान्त शुक्ल (१२ क) एवं विकास ठाकुर (६ क)

# भारतीय संस्कृतिः

अभिनव मिश्र

अष्टम 'ख'

अस्मिन् संसारे बहवः संस्कृतयः संति । किन्तु तेषाम् भारतीय संस्कृतिः सर्वोत्कृष्टा, प्रचीनतमा संस्कृतिः अस्ति । संस्कारणां परिष्करणं संस्कृतिः भवति । सा संस्कृतिः कथ्यते या दुर्गुणान्, दुर्व्यसनांनि, पापानि, पाप-भावनाश्च हृदयेभ्यो निस्सार्य हृदयानि निस्पापानि निर्मलानि सत्वभावो पेतानि च करोति । प्राचीनानाम् आर्याणाम् संस्कृतेः एताएव विशेषताः संति । तेषां संस्कृतिः मनुष्यान् सर्वविधिपापेभ्योनिवारयति, तान् सन्मार्गम् उपनयति, तेषां हृदयेषु सत्यस्य, धर्मस्य, परोपकारस्य, धैर्यस्य, त्यागस्य, शीलस्य, अहिंसायाः, दयायाः, सहानुभूतेः, दानानामादिगुणानाम् च स्थापनां करोति ।

भारतीय-संस्कृतेः विशेषगुणाः संक्षेपेण एते संति--

१- धर्मप्राधान्यम्--“यतोऽभ्युदये निश्चयसिद्धः सद्धर्मः” इति लक्षणानुसारेण यतः लौकिकं च कल्याणं भवति तदैव कर्म कर्तव्यं नान्यत् । धर्म एव मनुष्येषु पशुभ्यो विशेषः अस्ति । इति तेषां मतम् ।

२- वर्णव्यवस्था-ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्राः चत्वारो वर्णाः संति । ते स्व-स्व कर्मकुर्युः वर्णव्यवस्था गुण कर्म अनुसारेण आसीत् । न तु जन्ममात्रेण । गीतायाः उपदेशेन भगवता कृष्णं कथितम्--

“चतुर्वर्णं मया सृष्टं गुण कर्म विभागसः ।  
तस्य कर्ताऽपि माम विद्धि अकर्ताऽपि अव्ययम् ॥

३- आश्रम व्यवस्था-ब्रह्मचर्यः, गृहस्थः, वान-प्रस्थः, सन्यासः चत्वारः आश्रमाः संति । मनुष्यस्य आयुं शत वर्षमत्वा एकः आश्रमः पंचविंश वर्षस्य आसीत् । ते सर्वे रपि पालनीयः । मनुष्याक्रमेण आश्रमेषु प्रवसन्ति ।

४- कर्मवाद-मनुष्यः स्वकर्मानुसारं फलं प्राप्नोति पुण्य कर्मणं पुण्यं, पाप कर्मणं पापं । “अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम् ।” पुण्यो वै पुण्येन कर्मणा भवति पापं पाप नैवेति ।

५- यज्ञस्य महत्त्वम्-सर्वमनुष्यैः पञ्च यज्ञ अवश्यं कार्या ।

६- पुनर्जन्मवादः-मानवस्य कर्मानुसारेण पुनर्जन्म भवति । उक्तं च गीतायाम् “जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः ध्रुवः जन्म मृतस्य च ।”

७- मोक्षम्-मनुष्यः ज्ञानाग्निना सर्व कर्माणि प्रदह्य मोक्षं लभते । मोक्षं प्राप्ती जीवनस्य पुरावृत्तिं भवति । मोक्षः एव परमः पुरुषार्थः ।

८- श्रुतीनां प्रमाण्यम्-वेदाः परम प्रमाणभूताः संति । वेदोक्त मार्गेण सदा प्रवृत्तितव्यम् ।

६- अध्यात्म प्रवृत्तिः-भीतिकवादं त्यक्त्वा आध्यात्मे प्रवृत्तिः कार्याः ।

१०- त्यागः-जनः संसारे विषयेषु असक्तो भूत्वा कर्मं कुर्यात् तथा च गीतायाम् निष्काम कर्मयोगः प्रतिपादित उक्तं चोपनिष्टे अपि "तेन व्यक्तेन भुञ्जीथाः मागृधः कस्यविद् धनम् ।"

११- तपोमयं जीवनम्-मनुष्याणां जीवनं तपोमयं स्यात् न तु भोग प्रधानम् ।

१२- तपोवनस्य महत्त्वम्-मनुष्यो ब्रह्मचर्ये, वानप्रस्थ, सन्यासश्च काले वनं सेवेत् ।

१३-मातृपितृगुरुभक्तिः-"मातृदेवोभव", "पितृदेवो भव", "गुरुदेवोभव" इति ।

१४- सत्यनिष्ठ-सत्यमेव ग्राह्यम् नासत्यम् । "सत्यमेव जयतेनाऽतम्" इति ।

१५- अहिंसापालनम्-अहिंसा परमोधर्मः इति ।

तस्मात् स्पष्टमेतदस्ति यद् भारतीय-संस्कृत्येव विश्वस्य कल्याणं भवितुम् अर्हति ।



# अस्माकं मातृभूमिः

नरेश चन्द्र गुप्त  
अष्टम 'ख'

“जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी”

जननी जन्मभूमिः च स्वर्गात् अपि श्रेष्ठतरः अस्ति । अस्माकं जननी जन्मभूमिः च भारत भूमिः अस्ति । अस्माकं प्रियः देशः हिन्दुस्तानः अद्वितीयः, अनुपमः च अस्ति । अस्मिन् देशे सर्वत्र हरीतिमा अस्ति ।

अस्य उत्तरदिशायां स्थितः गिरिः पर्वतराजः हिमालयः अस्ति । हिमालयस्य हिमधवलानि, विविध पुष्प-फलयुक्तानि वनानि च शोभन्ते । अयं पर्वतराजः भारतवर्षस्य उत्तर सीमायां स्थितः तत् प्रहरी इव सततं शत्रुभ्यः रक्षति ।

भारतस्य दक्षिणभागे विशालः हिन्द महासागरः स्थितः अस्ति । अयं महासागरः दक्षिणभागे अस्माकं मातृभूमिः भारतस्य चरणानि प्रक्षालयति । अयं दक्षिण-दिशायां भारतस्य प्रहरी इव अस्ति ।

अस्माकं देशे समये-समये च अस्य उत्थानाय, एकता-स्थापनाय, घृणायाः विनाशाय च अनेके महा-पुरुषाः प्रादुर्भूत । भगवान् श्रीरामः, श्रीकृष्णः, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्यः, महाराणाप्रतापः, गुरु गोविन्द सिंहश्चै-त्यादीनि अस्माकं देशस्य गौरवमवर्धयन् ।

अत्र धेनुं माता इव पूज्यते । शास्त्रेषु अपि अस्य गौरवस्य वर्णनम् अस्ति ।

“माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः”

अस्य निवासिनः सम्पूर्णं विश्वस्य जनानां भ्रातृ समः स्वीकारयन्ति । तेषाम् उद्देश्यम् अस्ति--

“संगच्छध्वम् संवदध्वम्”

ते सम्पूर्णविश्वं स्व गृहम् इव मन्यन्ते ।

“अयं निजः परोवेति, गणना लघुचेतसाम् ।  
उदार चरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥”

अस्माकं देशे विविधाः भाषाः सम्प्रदायाः च सन्ति । अस्माकं भारतभूमिः च एका । ते सर्वे एव भारतस्य सुताः सन्ति ।

देवाः अपि अत्र जन्मप्राप्तुम् इच्छां कुर्वन्ति । यत् शास्त्राणि अपि कथयन्ति । ते अपि भारतस्य गौरवस्य गीतानि गायन्ति ।

“गायन्ति देवा किलगीतकानि,  
धन्यास्तु ते भारतभूमि भागे ।  
स्वर्गा पवर्गस्पद भार्गभूते,  
भवन्ति भूयः पुरुषः सुरत्वात् ॥”

कलाकृतिषु अपि अस्माकं देशः विश्वे श्रेष्ठतमः अस्ति ।

(१)

“उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणं ।  
वर्षं तद् भारतं नाम, भारती यत्र सन्ततिः ॥”

(२)

“धन्यो हि भारतवर्षः, धन्या भारत संस्कृतिः ।  
भारतीयाः जनाः धन्याः, धन्याऽस्माकं परम्परा ॥”

अन्ते अहं ईश्वरेण कामना करोमि—

वयं मातृभूमेः सुताः पुण्यभूमेः,  
प्रतिष्ठाऽत्र देशे विदेशे च यस्याः ।  
ऋषीणां मुनीनां कवीनां च माता,  
भवेत् रक्षकः सृष्टिकर्ता विधाता ॥

## कालिदासस्य काव्य-प्रतिभा

अक्षय माथुर

एकादश 'ख'

सरस्वत्याः देव्याः मन्दिरे येः श्रद्धालुभिः भक्तैः आराधना कृताः अप च गीर्वाणवाण्याः पूतयो-  
श्चरणयोः काव्य कुसुमानि च यैः समर्पितानि, तेषां महाकविः कालिदासः 'कवि कुलगुरुः' इत्युपाधिना विभू-  
तोऽस्ति । अयमीदृशः कविः अस्ति यः न केवलं संस्कृत साहित्येव अपितु सम्पूर्णे विश्व-साहित्ये विख्यातो  
लोकप्रियः चास्ति । संस्कृत साहित्यस्य तु शाश्वत विभूतिरेवायम् तस्य साहित्यं देववाण्याः कण्ठस्य मुक्तमालायाः  
अमूल्यं रत्नमस्ति यस्य प्रकाशेन संपूर्णं संस्कृत साहित्यं प्रकाश्यते । अस्य कारणमस्ति तस्य सर्वतोन्मुखी काव्य-  
प्रतिभा । कवेः अलौकिकी प्रतिभा तस्य सर्वासु रचनासु, नाटकं भवतु महाकाव्यं वा, सर्वत्र दृश्यते । कालिदासस्य  
प्रतिभा । तस्य काव्यानां नाटकानाञ्च तपोवनानां परमपावनी नायिकास्ति । तस्येयं तपोवन विरहिणी प्रतिभा  
काननानां महिमानं संवर्धयन्ती अपि लौकिकोल्लासं न विस्मरति । मानव हृदयस्य सूक्ष्माणं भावनानां  
निरीक्षणं प्रकृतेः रहस्योद्घाटनम् यादृशं तत्र भवतः कालिदासस्य कृतिषु प्राप्यते, अन्यत्र तादृशं दुर्लभमस्ति ।  
प्रासादस्य अगाधता माधुर्यस्य मधुरः संनिवेशः, शब्दानां सुगुम्फनं, अर्थगौरवं, भावनां सौष्ठवम् इत्यादीनां  
मञ्जुलसमन्वयः सहजमेव पाठकानां हृदयमावर्जयन्ति ।

कालिदासः स्वकाव्य सम्पदायाः द्वारमुद्घाट्य स्वयुगस्य शीलसौन्दर्ययोः राशिं पद्यरूपिरत्नानां रूपे  
वितनोति । तदैव तु विशेष साज-सज्जया रहितां, वल्कलं धारिणीं, केवलं शील-सौन्दर्यस्य साक्षात् प्रतिमां-  
शक्रुन्तलां, दृष्ट्वा दुष्यंत सदृशोऽपिनृपः सहसा कथयितुं विवशी भवति--

सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापिरम्यं,

मलिनपि हिमांशोर्लक्ष्य लक्ष्मीं तनोति ।

इयमधिक मनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी,

किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् ॥

अस्तमयम् अपि कृत्रिमतायां स्वाभाविकतायाः भौतिकतायां आध्यात्मिकतायाः विजयः वैभवस्य  
प्रधानता, आचारस्य प्राथमिकता च । कालिदासस्य संपूर्णे साहित्येऽस्याः प्राथमिकतायाः दर्शनं भवति ।

कालिदासः मुख्यरूपेण प्रेमसौन्दर्ययोः भक्तोऽस्ति । तस्व अभिज्ञान-शांकुतले संयोगशृंगारस्य वैदग्ध्यं  
वर्णनमस्ति । इदं प्रेम संयमेन आकांक्षयते--

वारीनाहि पर परिग्रह संश्लेष पराङ्गमुखी वृत्तिः ।

कालिदासस्य लोकप्रियतायाः प्रमुख आधारेऽस्ति तस्य रसानुभूतिः । येन कौशलेन सःश्रृंगार-वाथाः संयोग वियोगानां रत्नानि आहस्य पाठकान् रसान्वितान् करोति, तेनैवकौशलेन नृपस्याजस्य अश्रु-प्रवाहस्य औचित्यमपि ।

कालिदासस्य करुणा, निश्चलां जगं प्रकृतिमपि रोदितुं विवशी करोति, किमुत मानवाम्--  
तथाह्ये--

विलपन्निति कोसलाधिपः करुणार्धं ग्रथितां प्रियां प्रति ।

अकरोत्पृथ्वी सुहानपि, स्त्रुतशाखारस वाष्प दूषितान् ॥

भावानां सूक्ष्मवर्णनं यया कुशलतया प्रस्तुतं करोति, सः साहित्य जीवनयोः अविच्छिन्नं संबंधं स्थापितं करोति । अस्मात् कारणात् सः आङ्गलकेवः शेक्सपियरादपि श्रेष्ठः निगद्यते ।

कालिदासस्य विशेषताऽस्ति यत्सः दैवी विभूतीनां मानवीकरणमपि स्वभाविकतया सार्धं करोति । सः लोक पुरुषाणां आदर्शं संसारस्य समदो प्रस्तुतीकरणं कांक्षति । इमान् लोकपुरुषान् सः संसारात् अदूरीकृतम् संसारस्य शुभ्रैषितार्थं तस्य सम्मुखे प्रस्तुतान् करोति । दिलीप रघु अज दशरथ रामादयः इमे लोकनेतारः आसन् एवमेव सीता पार्वती शकुन्तलाः एतादृश्यांश्च लोकमातरो महामहिलाः । कालिदासस्य असहाया शकुन्तला विषणामेषां परिस्थितीनां साक्षात्कारं कुर्वन्ती, दुष्यन्तस्य संसदि, पुरोहितानां, सेनापतीनां च समक्ष तेषां सम्राजं अनायेति उवहैयं शांता न भवति, प्रत्युत साकपयति--

“अनार्य ! आत्मनो हृदयानुमानेन पश्यसि । क इदानीमन्ये धर्मकञ्चुकप्रवेशिनः स्तृणाच्छन्न कूपो-  
पमस्य तवानुकृतिम् प्रतिपत्स्यते ।”

वस्तुषु व्यापारेषु वा सशब्दै चित्रप्रस्तुतीकरणेन चित्रात्मकता इति कथ्यते । कालिदासस्य स्वभावोक्तिषु चित्रात्मकता च अनुपमाऽस्ति । रूप वर्णनेऽपि पटुतरः कालिदासः अभिज्ञान-शाकुन्तलस्य नायिका शकुन्तला ‘अनाघ्रातं पुष्पकिसलयमलनं करसहै-रनाविद्ध रत्नं मधुनवमनास्वदिवरसन्’ तथा ‘अखण्ड पुण्यानां फलामिव’ अस्ति यतीहिः ब्राह्मणः सृष्टिरास्ति--

“चित्रे निवेश्य पटिकल्पित सत्वयोगा रूपोच्चयेन मनसा विधिना कृता नु ।”

अतएव “स्व० श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला” महोदयस्य मतानुसारं ‘नास्ति कोमलता, सोन्दर्य विषयस्य प्राथमिकी कला कालिदासस्य सदृशं संस्कृत साहित्ये अन्यत्र ।”

भारतस्य प्रकृति प्रांगणे प्रकृतिः सुरम्ये उत्तमंगे क्रीडन् कालिदासः प्रकृत्यापि उच्चस्थानं ददाति । अभिज्ञान-शाकुन्तले चन्दसूर्ययोस्तोदयो उपदेश प्रदां शोभा दर्शनीयाऽस्ति--

यात्येकतोऽस्त शिखरं पतिरोषधीनां, आविष्कृतोऽरुणपुरः सरएकतोऽर्कः ।

तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्याम्, लोकोनियम्यतः इवात्म दशान्तरेषु ॥

अनेन प्रकारेण वयं कथयितुं शक्नुमः यत् कालिदासस्य ख्यातिं विश्वसाहित्येषु अजरामरा चास्ति “डा० कीथ” महोदयः स्व-संस्कृत साहित्य इतिहासे लिखति--

“निरसंदेह कालिदासः भारतीय काव्य शैल्याः सर्वोत्तम आचार्योऽस्ति । सः स्व रचनायाः पूर्णताया परिमार्जनस्य च दृष्ट्या अश्वघोषात् श्रेष्ठोऽस्ति ।”

कालिदासस्य संबंधे कस्यचिद् आलोचकस्येययुक्तिरा सत्यमेव—

पुराकवीनां गणनाप्रसंगे, कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदासः ।

अद्यापि तत्तुल्य कवेरभावादानामिका, सार्थवती बभूव ॥



## शिष्टाचारः

शोभित श्रीवास्तव

षष्ठ 'क'

आधुनिके युगे समाजे शिष्टाचारम् अति महत्त्वपूर्णम् अस्ति । यदा मनुष्या सभ्यः अभवत् तदावत् सः शिष्टाचारम् समाचरितुं आरब्धवान् । अद्य शिष्टाचारस्य प्रभावम् प्रसारम्च अति विस्तृतम् अस्ति । सम्प्रति शिष्टाचारस्य बिना कोऽपि जनः समाजे जीवितुं नैव शक्नोति । अतः प्रत्येकम् जनम् शिष्टाचारस्य नियमान् ज्ञानं परमावश्यकम् अस्ति । समाजे शिष्टाचारस्य नियमान् पृथक्-पृथक् भवन्ति । यद्यपि तेषाम् आधारम् प्रायः समैव भवति । शिष्टाचारस्य प्रथमं गुणम् विनम्रता अस्ति । वाण्यां व्यवहारे च विनयं भवेत् । विनम्रता केवल भाषायाः वस्तुः न अस्ति परञ्च अस्माकम् कार्येऽपि विनय भवेत् । स्वगृहे कस्यापि करणीयम् ।

अस्मान् गृहे सर्वैः प्रसन्नः भूत्वा स्वागतम् यथोचितम् सत्कारं च करणीयम् । ज्येष्ठ जनानाम् उपवेशनास्तरे एव तिष्ठेयम् ।

शिष्टाचारस्य द्वितीयः गुणः परेषां कार्ये अहस्तक्षेपम् भवति । प्रत्येकस्य जनस्य एकम् निजं जीवनम् अस्ति । तस्मात्तव्यं अकारणात् कस्यापि वेतनम् आयुःजातिश्च न पृच्छेम । कस्यापि नामान् वक्तुं लेखितुमवा-  
त्तस्य पूर्वं श्री, श्रीमती, कुमारी वा अवश्यम् लिखेम । यदि कोऽपि जनः अस्माकम् साहाय्यं करोति तद् व्ययं तस्मै आभारम् अवश्यम् प्रयच्छेयम् ।

शिष्टतायाः तृतीयम् आधारम् अनुशासनम् अस्ति । अनुशासनस्य समाजस्य नैतिक-नियमानाम् अपि भवितुं शक्नोति कानूनस्यापि । समय पालनम् सामाजिक नियम पालनम् अस्ति । उचित समये उचित स्थाने गमनम् अपि अनुशासनम् अस्ति । वयम् विभिन्न-अनुशासनात् ज्ञानम् अवश्यम् जानीयेम । सभायाम् कोलाहलं न करणीयम् । राष्ट्रगानावसरे उपवेशनम् गमनम् वा अनुशासनस्य विरुद्धः अस्ति । यत्र सर्वे जनाः तिष्ठन्ति तत्र शयनम् अनुचितम् अस्ति ।

# अणुबम्बोऽणुशक्तिश्च

दीपेश सिंह

नवम 'क'

इदं हि विज्ञान प्रधानं युगम् । सम्प्रति मानवः प्रकृतिं वशीकृत्य तां स्वेच्छया कार्येषु नियुङ्क्ते । प्रकृतिः पुरुषस्य दासतामानीता इव प्रतिभाति । तथा हि-वैज्ञानिकैरेके आविष्काराः विहिताः । न केवलं याता-यात-साधनानि विद्युत्प्रभृतीनि वा सुखसाधनानि निर्मितानि, प्रत्युत चलचित्र-रेडियोयन्त्र-टेलिविजन यन्त्र प्रभृतीनि कुतूहल वृत्ति तर्पणोपकरणानि मनो विनोद-साधनानि चापि आविष्कृतान्येव । एमिश्च सार्धं कानिचिद् विध्वंस-कारुणाण्यपि सम्पादितानि । अणुबम्ब-उद्जनबम्बादीनि तु विध्वंसकास्त्रेषु प्राधान्य-मावहन्ति ।

अणुः परमाणुर्वा प्राचीनानां तत्त्वदर्शनामपि बुद्धिपथम् अवतीर्णः इति न तिरोहितमेव पुराविदाम् । महर्षिः कणादो हि भारतीयतत्त्वदर्शने परमाणोः द्रष्टेति सुविदितमेव । परं भारतीयमनीषिभिः परमाणुशक्तिः उपेक्षितेव आसीत् । अत्र विषये तैः कथम् उपेक्षा विहिता । अधुना तु वैज्ञानिक युगे परमाणुशक्तिः परी-क्षितां नियुक्ता च मानवजातेः सेवायाम् । यः परमाणु पुरा किल अभेद्यो मन्यते स्म सोऽपि अद्यतनैः विज्ञान पण्डितैः खण्डीकृतः । तत्र प्रोटॉन-न्यूट्रॉन-इलेक्ट्रॉनाभ-ध्रैयानि सकलानि जायन्ते इति च निर्धारितम् । ततश्च कूटनीति कुशलैः शासनसूत्रधारैः कानिचिद् विध्वंसका-स्थाणि निर्मापितानि ।

मानवजातेः हिताहितम् अपश्याद्भिः वैज्ञानिकैः राजनीतिविज्ञैर्वा परमाणुशक्तेः अस्त्रानर्माणे एव

विशेषतः उपयोगो विहितः । तदुत्पादितं च लोकध्वंस कार्यम् अतिघोरं निघृणं च । अणुबम्बो हि दूरतः स्फुटन्नपि लक्षशो मानवान् मृत्युप्रथं नेतुमर्हति । उद्जन-बम्बस्तु ततोऽपि दारुणं विध्वंसं कर्तुं समर्थः । एतदपि श्रूयते यद् अणुस्फोटस्य धूलि प्रसारात् मनुज सन्ततिः कालेन विकलाङ्गी क्षीणसत्त्वा च सम्पत्स्यते । किम् इदं लोकक्षेमकरम् ? किं वेदं वाञ्छनीयं मानवजातेः : धिग् इमाम आसुरीं सम्पदतम् ।

अयं च न विज्ञानस्य दोषः, न वा परमाणुशक्तेः अपराधः । पुरुषापराधः खलु सः । तथा च लोकनामा-माणकः-

“नैष स्थाणोरपराधो यदेनमन्धो न पश्यति ।”

परमाणुशक्तिस्तु अचेतनायाः प्रकृतेरेका शक्तिः । यथैव सा जनानाम् अहिते नियुज्यते तथैव हितेऽपि नियोक्तुं शक्या । प्रस्तुतीकृताश्च विज्ञान विद्विद्भिरेव तस्याः विश्वजनीना प्रयोगाः । तथा हि-तया शक्त्या विविधानि यन्त्राणि चालयितुं शक्यन्ते यैः कृषि कर्मणि, सुखसाधन-सम्पादन-कर्मणि वा प्रकामं प्रगतिर्भवेत् ।

किं वा बहुना । सत्यं यत् प्रकृतिः पुरुषस्य प्रयो-जनं सम्पादयितुं प्रवर्तते । तस्याश्च विविधाः शक्तयः न्यूनाधिकरूपेण पुरुषार्थं साधयन्ति । ततश्च परमाणु शक्तिरपि यदि पुरुषार्थाय कल्पेत तर्हि वैज्ञानिकाः पर-मार्थतो विज्ञान-वेत्तारो मनीषिणश्च भवेयुः ।

# UNTO GOD

[ The present lines are an extract from the world-famous book Gitanjali. The poet Sri Ravindra Nath Tagore prays to Almighty to bless his countrymen with all the qualities, all head and heart. ]

Editor

Where the mind is without fear and the head is held high,  
Where knowledge is free;  
Where the world has not been broken up into fragments  
by narrow domestic walls;  
Where words come out from the depth of truth;  
Where tireless striving stretches its arms towards perfection:  
Where the clear stream of reason has not lost its way  
into the dreary desert sand of dead habit;  
Where the mind is led forward by thee into even-widening  
thought and action—  
Into that heaven of freedom, my Father, let my Country awake.

(From Gitanjali)

निर्भय है मस्तिष्क जहाँ, है स्वाभिमान से उन्नत भाल,  
और अबाधित बहती रहती जहाँ ज्ञान की अविरल धार  
नित छोटे संकीर्ण घरों में बँटा न जिस दर यह संसार  
और शब्द निकला करते हैं जहाँ सत्य का ले आधार  
जहाँ पूर्णता हेतु भुजाएँ अनथक करती यत्न निरन्तर  
और तर्क की निर्मल धारा सुखा न पाता रूढ़ि-मरुस्थल  
पथ को जहाँ प्रदर्शित करते रहते संतत तुम ही केवल  
मिलती है कथनी करनी को विस्तृत धरती जिस थल प्रतिपल  
स्वतंत्रता के उसी स्वर्ग में, परमपिता हे ! जगे हमारा देश हमारा देश ।

‘निश्चल’

# The Message of Ayodhya

Sri J. P. Srivastava

[The learned writer, in the present article, describes that Ayodhya is the holiest of the holy places. The people who gathered on the bank of Saryu on Nov. 2, 1990 will not stop till their god the renovation of the ancient Ram Temple, is not achieved ]

Ayodhya is not just a city. It is something indescribable. Can the cultural legacy of a country like India be described? It is beyond words and so is Ayodhya. It has been termed as the cultural legacy of India by late Yogiraj Devraha Baba. It is appropriately that as Lord Rama was born in this holiest of the holy cities of this 'devbhoomi Bharat'. And who is Rama not just a man but God incarnate or Dharma incarnate. Rishi Valmiki rightly observes 'रामो विग्रहवान् धर्मः'. So the name of Rama has become the symbol of all that is holy and sacred, all that is right and just, all that is good and blissful and all that is noble and undying. So Rama is the synonym of India's 'Sanskriti' which is decked with daivi sampad—दैवीसम्पद् and is, therefore, for ever and ever beneficial to all mankind and all other creatures. So Ayodhya is rightly the aeliverer of Salvation i. e. Moksha मोक्ष as the following couplet shows—

अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची अवन्तिका ।  
पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिका ॥

Lord Rama Himself says in the Ramcharitmanas :—

जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि । उत्तर दिशि बहू सरजू पावनि ॥  
जा मज्जन ते विनहि प्रयासा । मम समीप नर पावहि बासा ॥  
अतिप्रिय मोहि इहाँ के बासी । मम धामदा पुरी सुखरासी ॥

The Skandpuran also says—

कपिला गो सहस्राणि यो ददाति दिने दिने ।  
तत्फलं समवाप्नोति जन्मभूमेः प्रदर्शनात् ॥

A man who earns virtue by giving away one thousand white cows every day can earn for himself the same virtue by the mere 'darshan' seeing of Ramjanma Bhoomi at Ayodhya. So Ayodhya is a place of pilgrimage for innumerable pilgrims drawn from every nook and corner of the world. The holy city echoes with songs and kirtans sung in the praise of Lord Rama, is thronged with holy men of so many sects, resounds with shouts of victory for the Lord and throbs with the inner most emotions of devotion.

For such emotional devotees, the brick walls of the city dwindle into the background of their sight and there rises before their devotion filled eyes the all pervading image of Lord Rama so that they are lost in an ecstasy which only they can feel.

Ayodhya has been glorified by the noble deeds of the worthy kings of Ikshwaku dynasty. So many warriors who ever stood in the defence of Dharma were born in this city. The many forts and temples of Ayodhya add to its glory. King Vikramaditya built a glorious temple on the spot where Lord Rama was born and he became the torch bearer of that culture which is symbolised by the name of Lord Rama. Perhaps because of our sins and weaknesses, a time came in the history of our country when we became slaves to foreigners. But Ayodhya continued to be a great centre of attraction.

Came Babar, the Moghul invader, to our country. In order to give a blow to our cultural superiority and perhaps to weaken our national will, he broke the temple built by king Vikramaditya. But people of the country, though physically vanquished, never admitted defeat. To them, the mosque like structure built with the debris of the broken temple, always remained an eyesore. History bears an evidence that more than seventy attempts have been made from time to time to restore the dignity of the temple and thousands of people laid down their lives for that noble cause of the restoration of the temple's glory. The immortal will of the people says that the fight will continue till the goal is achieved. It is not a political fight as some misguided people make it out to be. It is purely a cultural question and a nation without culture is a mere misnomer of a country. As a man cannot and does not live by bread alone so also a country does not live by economic development alone. All the right thinking people whether Hindus, Muslims, Christians or Parsis etc.etc think like this and are in favour of restoring the so called Babari mosque for the purpose of the renovation and construction of the proposed temple. A temple is already there but it has to be given a new shape befitting the glory of the name of Lord Rama.

With the dawn of freedom in 1947 and with the reconstruction of the famous Somnath temple, it was hoped and believed that the government of India would automatically rebuild a glorious temple on the Ramjanmabhoomi. But unfortunately our ruler's hunger for power blinded their eyes and in the noble efforts for the restoration of the dignity of Ramjanmabhoomi, they began to see politics and themselves began to play politics. So the unvanquished national will rise up once again like so many flames of fire rising from a sacred Yagnakunda यज्ञकुण्ड'

On November 2, 1990 thousands and thousands of Ram Bhaktas gathered at the sacred bank of the holy river Saryu and created history which is so recent and so

fresh in our memories that it needs no mention. But that history has lift are everlasting message and that is the message which only the miraculous and holiest of the holy Ayodhya can deliver. It is the message of the invincibility of the soul force before the brute power of guns. That message has created a writing on the wall for all future tyrants that they will have to submit repeatedly before the will of the people. That message echoes loudly and proclaims that people will continue dying for their noble culture which to turns is a sacred legacy of their forefathers and which is the most valuable treasure to be lift by them for the prosperity. It is the message of the victory of love over hatred, of spiritualism over materialism, of selfless devotion over selfish craving for self and power, of 'bhakti' devotion of the heart over 'Shakti' power of the body, of national will over anti national forces in various garbs and colours and of much more. It is the message of the miraculous power that the name of Lord Rama carries with it for that is the name which sanctifies all that is sinful, which grants unlimited power to those who consider themselves weak and which sows the seeds of harma in the heart that speech lessly echoes with this sacred name. Lang live Ayodhya, the city of Lord Rama.



# SOME ASHES AND SPARKS FROM AN EXTINGUISHING HEARTH

—S. S. Sharma

Sometimes a person is placed in embarrassing position when he is called upon inadvertently to do something for which he is mentally not prepared. This is what happened with me one evening when I had gone out for a walk. Shri K. K. Gupta together with Prof. C. P. Singh our common guide, philosopher and friend, met me and insisted on my writing something for the Vidyalaya Magazine. Caught unawares I expressed my reluctance to accede to their wishes. But their pleasing persuasion made me change my mind. And so I am here placing before you the following few lines under the heading "Some Ashes and Sparks from an extinguishing hearth."

To day we are in a bad way. There is no peace at home or abroad. The whole world is in the grip of misery. Bread is so dear and human flesh and blood so cheap ! But let us not lose heart; for where man is capable of doing intense evil. he is also capable of doing sublime good. We are like tiny seeds each one of which has a huge power latent in it, which we should use for doing good to others. We must not forget that even the darkest cloud has a silver lining, and we should be hopeful like Shelley: "If winter comes, can spring be far behind?"

Our failures are not without a purpose. They serve as stepping stones to success in life. We should see good even in evil, or as Shakespeare said: "Tongues in trees, books in the running brooks, sermons in stones and good in everything." We must

trust that good is the final goal of ill. We should always look to Heaven's light that ever shines.

Change is the law of Nature :

"The old order changeth yielding place to new,

And God fulfills Himself in many ways,  
Lest one good custom should corrupt the world "

We must, therefore, adapt ourselves to the changing conditions around us. We must mould ourselves in conformity with the needs and demands of our age to face the challenge of survival. A new orientation is needed to bring about unity out of the various types of divisions in our society. A broad outlook and a bold and courageous effort are required to demolish such barriers as create any feeling of inferiority or superiority in society. Redressing human wrong is an act of glory.

We should march 'breast forward' and bravely face hardships in life. Life is not a bed of roses and there is no rose without a thorn. Life is certainly thorny but it is our spirit of suffering that puts us on our mettle. We must meet all ordeals courageously to come out stronger, purer and brighter. We should always remember that the real value of life lies in the effort to achieve perfection. And this is possible through spiritual development; for spirituality crushes the weary weight of our sorrows and sufferings. We have simultaneously to play a double role;—we have to destroy the

evil and also to preserve and spread the good. And for it we have to develop spiritual strength in us. It is this inner spiritual strength that matters more than just the physical strength.

The aim of our shastras is to produce men of spiritual excellence to achieve perfection in life. We should regard our body as the temple of God (Devalaya) and awaken the Divinity in us. For the attainment of moral and spiritual values in life we have to practise penance and have to face pain and hardship; for sorrows and sufferings, in reality, are the stepping stones to higher things on the spiritual plane. That is how man transcends himself and ultimately attains perfection. Our daily prayer is very significant: "From the unreal lead me to the real. From darkness lead me to light. From death lead me to immortality."

How-so-ever miserable our circumstances may be, we should always be cheerful and keep the vision of a bright future before us. We should discard melancholy pessimism and should ever be hopeful and optimistic in our approach. We should cultivate an attitude of mind whereby a glass half-empty may appear half-full to us. This approach turns a cry of despair into a song of victory. It imparts the power of moral and spiritual inspiration and helps us to attain the real fruits of life.

We must eschew frustrative tendency and develop a strong will and determination to achieve our goal. For it we should cultivate a feeling of *divine consciousness* in us, which will be a perpetual source of strength and light that will dispel all doubt and despair and illuminate our path of life.

The service of humanity should be the chief aim of our life. Let every breath of ours set forth holy vibrations in the

atmosphere so that we may have perennial freshness about us to keep us ever fit to devote every moment of our life to the service of all creatures of God. We all believe in praying; for "More things are wrought by prayer than this world dreams of." But we should always keep in mind that—

"He prayeth best, who loveth best  
All things both great and small."

We should, therefore alchemise all hates into the gold of love even when we ourselves 'fall upon the thorns of life and bleed,' our own misery should not impair our zeal for the happiness of our fellow beings. Let humanity and humility chalk out the path of our life. We should realize there is a *spirit* that rolls through all things—both animate and inanimate—and provides an indissoluble bond between God and His creation. This spiritual realization alone can fill the human heart with universal love and bring about lasting peace and harmony in society. It is the essence of *manav dharma*. As we become more and more humane we become more and more spiritual. This *dharma* however, is to be lived and is not merely to be professed. Handsome is that handsome does. We should have purity in thought, word and deed.

We should never be a slave to our wayward senses but should always exercise self-control and subdue our desires and other harmful passions to achieve the supreme goal of human life.

According to Tennyson :

"Self-reverence, self-knowledge,  
self-control,

These three alone lead life to sovereign  
power."

And according to Mathew Arnold :

"Resolve to be thyself, and know that he,  
Who finds himself, loses his misery."

# What is Most Invaluable in Life ?

**Chandra Pal Singh**  
Ex-Principal

Of about a score of questions put by the Yaksha to Yudhishthira, who went to the enchanted pool in quest of his brothers and to fetch water for his wife Draupadi, I wonder why the above question, which forms the caption of this article, was not one. It is a pertinent question and a very important one at that. The Yaksha's questions are so many puzzles. The present one too is a puzzle and requires a good deal of mind-boggling.

What makes a thing valuable ? It is its proper utilization, which makes it valuable. Of all the material objects in this world probably platinum is regarded as the most valuable. But even platinum, if it is left buried underground and is not made use of in the proper way, is useless and consequently valueless. To a child, an ignoramus or a recluse a precious stone, however valuable, is just like a pebble on the sea-shore.

If we evaluate moral qualities like truthfulness, courage, honesty, compassion, faith, contentment, industry etc. they are equally valuable in character building. It is the particular situation in life which makes a quality valuable. Otherwise it is immaterial and immeasurable.

Can't you guess a thing which is immaterial but can be measured to its minutest particle ? The measuring instrument used in this context is so common. And yet the minutest particle of this thing is as valuable as the largest part of it. In other words it can't be evaluated. That is why I purposely call it invaluable and not valuable though it is both valuable and invaluable. I hope now you have guessed it. It is time.

In the last gulf war the American missile, Patriot, fired just after 1/200th part of a second of the Iraqi Scud could intercept the latter and

neutralise it. This shows the value or importance of minutest particle of time. The battle of Waterloo was lost by the French, only because the French commander failed to reach the crucial spot by a few seconds. Astronomers tell us that if we miss a particular auspicious moment we lose a life's chance of success or prosperity.

A short life, every minute or second of which has been fully and properly utilised, turns out to be more valuable than the long life of a centenarian. Shankaracharya, who lived only up to the age of hardly 32 years, was during this short span able to write his famous commentaries on the Gita, the Upanishads and the Brahmasutras, defeated the rival religious leaders after holding discussions with them, rejuvenated Vedic religion, toured the whole India on foot, established four maths- in the four corners of the country and thus established the cultural unity and integrity of Bharat. He thus did a millennium's work in his short life and immortalised himself in history.

Other things of the world that are material can be recovered, if lost, for ever. You have to be very vigilant in making the full and the best use of time. Treat time my young friend as a divine gift, too precious to fritter away. If once you let time pass unused, you will have nothing but remorse and repentance to torture you the rest of your life.



# LIFE WITHOUT NEWSPAPERS

Ashish Kumar Singh

XI-B

'One man's meat is another's poison' is a common adage. By the same token, life without newspapers viewed in the abstract could be plain unmitigated hell or sheer unadulterated joy depending upon the individual. An Amitabh Bachchan or even for that matter a Rajiv Gandhi, would in all probability love to dwell in a world bereft of the Hindu. The Indian Express, N Rams and Arun Shauries, especially at a time like the present when they are distanced from the seats of power.

Be that as it may, to the common populace, the silent majority to which this writer is proud to belong, a newspaper is a mirror to the outside world. It bridges the gulf between continents, across vast expanses of land and water day in and day out enabling us to share the experiences of our brethren in other parts of the globe.

A majority of the educated section of the society would not like to miss the morning newspaper at the breakfast table for the world. Without newspaper, life would become a void, a meaningless charade without direction or purpose. The loss, I dare say would be felt by many as acutely as the death of a near relative or a dearly loved friend.

What would the parents of prospective brides and grooms do without the facility of the matrimonial columns of the newspaper? How would prospective candidates apply for and later get enplaced in suitable jobs commensurate with their qualifications? How would industries and other employers satisfy their requirements of skilled manpower? How would students desirous of prosecuting higher studies apply for admission to various universities and other centres of advanced training if they were to be suddenly deprived of the benefit of perusing admission notices in the daily newspapers? And, indeed how would the government itself invite competitive bids for execution of important large scale projects or dispose of excess inventory without the convenient option of advertisements in newspapers?

In a democratic set-up where freedom of speech is a vanguard of parliamentary institutions, the newspapers have almost single handedly defended the rights of the citizens when the same were threatened and the events have shown that the newspapers were instrumental in bringing the downfall of governments who have systematically defied the democratic institutions. The newspapers

act as watch dog of the Government administration and officials ever on the vigil for malpractice, corruption, lethargy and indolence on the part of the Government services. No other period of human history as the present one has seen the importance of the role played by newspapers. The downfall of some governments, the suffering caused by natural calamities like earthquakes the pangs of separation caused by terrorist activities and the horrifying malaise of famine in some

other parts of the world are the few examples the knowledge of which we can get by newspapers. The newspapers, thus are the only means of touching the heart of mankind and bringing the world much closer.

A life without newspapers is hence a life frightfully unimaginable and incredibly hard in a sense it takes the life-style of mankind to the premedieval times, reducing life to a mere-existence.

## MY SWEET LOVE

—Chakra Pani Singh Sengar  
XI A

I cannot say whether she loves me or not but I do love her dearly. She is very helpful and sympathetic. I know her since my childhood days.

She is my dearest friend after a hard day's work. I lie down and start thinking of her. She comes and makes me calm and fresh. Sometimes I get lost in her company and forget all sorrows and miseries of the world.

She visits me daily-once twice or even thrice. I know her well. She understands me better than any one else.

My parents and others elder do not like her frequent visits. My mother delivers me lectures advising me not to waste my time in her company. But I cannot help because she is very dear to me.

She comes to me particularly when I am studying. She hates my attachment to books. She does not understand my problems regarding my study. She offers me best cure when I have a headache.

I cannot keep myself away from her for long. I need her company everyday as without her I shall lose my health, peace and happiness.

Who, then is this beloved of mine, this sweet, calm friend not only to me but also to you?

My sweet love sleep.

# NATIONAL INTEGRATION

—Rajiva Kumar Rana

XIIth B

We may shut our eyes to the differences between one nation and another, and pretend that they are superficial, but thereby we lay up for ourselves a store of future trouble, and rob mankind of untold blessings inherent in the nationality.

What is 'national integration?' A German writer offers the following definition: National integration means the unity and solidarity of the country. It is the need of the hour and most pressing need of the day. One wrong step will create anarchy. Right step means prosperity and progress of the country.

India is a land of different religions, languages and communities. Unity amidst diversity is the special feature of our country. Our constitution has acknowledged it. We are free to use any language. No one can force us to adopt or reject any custom. It is based on the principle of live and let live.

But recently a tendency is found to be growing. The tendency that only I am right. My religion is the best. All concessions and privileges should be for me. Self interest is the root cause of disintegration. A patriot is one who thinks of his country and not of his interest. A time may come when the interest of the individual and country's good do not go together. For such a conflicting state we should remember—Who stands if India falls?

Good education is the best means. Education makes us enlightened. According to Arnold the aim of education should be to teach us rather how to think, than what to think rather to improve our minds, so as enable us to think ourselves than to load the memory with the thoughts of other men. Education gives grace to our character.

It is fatal to disruptive tendencies like Jealousy, hatred, corruption and favouritism. It sows the seeds of nobility in us. It makes us conscious of our duties. A common language will be a cementing force. The gap between the rich and the poor is to be bridged so that one group of people may not be Jealous of the other.

Our government knows well the dangers of disintegration. The starting of Navodaya Vidyalayas is also a step in this direction. President Jaffersan once said, "Eternal Vigilance is the price of liberty." For maintaining our freedom the government and the people should see that nothing should divide us. At last we can say.

"Lives of great men all remind us,  
We can make our lives sublime,  
And, departing, leave behind us  
Foot prints on the sands of time."

—H. W. Longfellow



# What is Beauty in Real Sense ?

—Shashi Bhal Singh Sengar

“All that glitters is not gold.” (Shakespear)

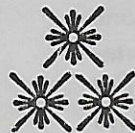
Shakespear, the most famous British poet and dramatist has rightly remarked about beauty. In my opinion beauty is of two kinds viz. Physical Beauty and Spiritual Beauty. Physical Beauty is short-lived while spiritual beauty is everlasting.

Physical Beauty is the beauty of eyes, lips, cheeks, brows, hair, hands and feet etc. Time swallows this beauty. Hence it cannot be called true beauty

Spiritual beauty is the beauty of mind and heart. It can't be seen It is within not without. It lies in the human soul. It has to do with our handsome action It is the source of peace and joy. It gives birth to submission and dedication. It is a state of mind. It is the happiness of hearts. It never fades out. It transcends time Hence it is true beauty.

Physical beauty is like a flower where as spiritual beauty is fragrance of the flower and not the flower itself. It is not visible. It is purely abstract. It is not an outer appearance. True beauty is only skin deep.

Nothing indeed, can match the beauty of true love, politeness, modesty, simplicity, gentle thoughts and calm desires. In short, Real Beauty is beauty of 'character' and 'conduct' which we all should try to imbibe and cultivate.



# INSAT-1D

—Ajay Kumar Shukla  
XII A

On June 12, 1990, India's three in one satellite INSAT-1 D was launched from Cape Canvera by a three stage Delta launch rocket-4925. It was constructed by Ford Aerospace communication at a cost of Rs. 136 Crore. It is placed in geostationary orbit 83 degrees east longitude and about 3900 km. above the earth.

The injection of INSAT-1 D ocurred over the continent of Africa at 11.46a.m. I.S.T. The master control facility (MCF) of Hassan in Karnataka acquired the satellite telemetry signal at 12.03 pm I.S.T. The separation of INSAT-1 D from the pay load-assisted module, which is the last stage of the rocket, was commanded from Hassan at 12.38 pm I S.T. Thereafter, a check on satellite's health was performed and satellite was despun and commanded to the sun acquisition mode whereby the western face of satellite was oriented towards the sun.

Though basically identical in configuration with other INSAT satellites, INSAT-1 D has a larger and better capacity, higher rebundancy for out put devices and larger fuel tank. The satellite is designed to last for seven years.

INSAT-1 D is a multipurpose operational satellite, similar to INSAT-1B and INSAT-1C, which are already in orbit. INSAT-1D is intended to replace INSAT-1B which is coming to the end of its useful life.

If the deployment of INSAT-1 D's instruments and facilities are on schedule, the satellite, the fourth and last mishap-relieved INSAT-1 series, will be ready for operational use by the first week of July.

The Indian National Satellite (INSAT) system is a joint venture of the department of Space, Department of Tele-communications, the Indian

# MAHATMA GANDHI

—Arun Yadav  
VII B

**M— Man of High Culture.**

**A—Admitted by one and all.**

**H—Humbly served the poor.**

**A—Active he was till he breathed his last.**

**T—Truth was his life.**

**M—Made India independent.**

**A—Avoided Personal Comfort.**

**G—Genius in all Respect.**

**A—Ahimsa he preached.**

**N—Noble were his thoughts.**

**D—Devoted his life-to the nation.**

**H—Honestly he led his Life.**

**I—Indian he was in all Respect.**

# 'A' To 'Z' of Success

—Anurag Singh  
IX 'B'

- A Avoid waiting for tomorrow.
- B Be prompt an all your dealings.
- C Consider well before you commit yourself.
- D Dare to do right, fear to do wrong.
- E Eschew evil.
- F Feed the needy.
- G Go not into the company of the vicious.
- H Hold integrity sacred.
- I Injure not another's reputation.
- J Jump not ere you think twice.
- K Know what's what.
- L Lie not for any consideration.
- M Make the most of the Gods creation around us,
- N Never try to appear what you are not.
- O Observe good manners.
- P Pay your debts promptly.
- Q Question not the veracity of a friend.
- R Respect the counsel of parents.
- S Save when you are young, spend when you are old.
- T Touch not, take not, handle not what is bad.
- U Use your leisure time for improvement.
- V Venture not to do injustice to your walk.
- W When depressed, look at the cheerful side.
- X Extend to every one a kindly solution
- Y Yield not to discouragement.
- Z Zealously labour for the right, success is certain.

# If I were the Prime Minister

Ankur Saxena

VIII-B

I wish I were the prime minister ! It may be a vain idea on my part but I really feel that I could do my little bit for the country.

The prime minister is the biggest servant of the country. He must be unselfish, devoted and ready to make any sacrifice for the common good of the nation. I am by nature soft hearted. Another's wound pains me as surely as my own. my sense of self respect is injured when I find poverty sticking to my countrymen like some ugly, disreputable disease. My head hangs in shame when I see my brethern leading their lives at a sub-human level. As the prime minister of my country it will be my care and ambition to bring prosperity to the hungry millions.

No country can progress unless her citizens are educated enough to make a distinction between right and wrong. A very high percentage of young boys and girls still go without schooling. I will make education free so that all children can go to schools. Education today is not of a uniform character. There should be no corruption in education.

I would keep my country strong by keeping a strong army. I would not like to start war. The strength of Indian army will keep others away from our border.

Internal strength depends on the economic development of a country. I shall try to make India as much self-sufficient as is possible. Thus I would raise the status of my country day by day.

Thus I would make India the country of my dreams. May god help me.



# Dowry : A Curse

Bhawjeet Singh

XI-B

Dowry is a cancer to the beautiful and healthy body of social life in India. It is undoubtedly a hurdle to the allround development of the country. It has knocked man down from his ideals.

Most of the people in our country are engaged in earning money by hook or by crook, because they have to feed the yawning ghost of dowry.

At the advent of the English reign, a materialistic culture and mechanical civilization entered the Indian society, which has enhanced the importance of wealth more than enough. As a result a tendency grew in many families to exploit the bride and her parents beyond their capacity. Formerly dowry was a coveted gift. Now it became a painful tax.

It is a matter of great misfortune and shame that the dowry system grew to be a cancer of our society even after 43 years of independence. It has ruined the dreams of many innocent brides. Many parents have gone down to bear the yoke of debt for their whole life and there seems no way to kill this demon of dowry.

Dowry is a curse for the society. The efforts on both levels, the government and the society are essential to root it out. The government should declare it a legal offence and should arrange heavy punitive fine on all those who give or take it. A social atmosphere should be created to crush this evil. Our media should come forward in a planned way. The grown-ups have to play an important role to irradicate it and should boycott the marriage in which the dowry is involved.

It is our pious duty to run a healthy society. We have to fight this evil with complete dedication, application and like a soldier fighting on the front, before the whole society is swallowed up by this demon of dowry.



# Press And U. P. Government On

## AYODHYA ISSUE

Vineet Mishra, XI A

Means of communication are the heart beats of any country. In these days newspapers are very popular amongst general people.

October 30, 1990 was a great day for Hindus of the world. Many Lakhs of people (Car Sewaks) were going to re-construct their Ram - Mandir which was destroyed by Mughal barbarian Babar. The U. P. Govt. took very-very hard steps to stop this "Car Sewa" of Ram-Mandir. It was a horrible mistake of Govt. to stop "Car Sewa" forcibly. On 30th Oct the scheduled day, 'Car Sewa' was started at about 11-30 A. M. This was a hidden news & not known to general public of the country. Newspapers were only a source to get this news to public that 'Car Sewa has been started'. This news was published in the special bulletins of newspapers. The famous Hindi newspaper "Nav Bharat Times" published that the mosque was nearly destroyed by Car Sewaks. 16 people were killed in police firing. The newspaper "Aaj" published in headlines that a bullet was shot at Ashok Singhal's head, Indian army surrendered 'Baba Paramhans'

was injured etc. When these sensational news reached the general people, they were, excited. I call such news sensational because the next day 'Aaj' published the news that the surrendering of Army & firing at Ashok Singhal were wrong. 'Nav Bharat Times' also changed its statement & published that eleven people were killed. When car sewa was again started on 2nd November the 'Daily Jagran' published in headlines that hundred people died in Ayodhya in firing.

So we can say that these news were mixture of false & truth and were very near to bitter truth. But U. P. Govt. adopted very repressive attitude. The Govt. banned, the special bulletins of 'Daily Jagran', 'Nav Bharat Times' & 'Swatantra Bharat'. Govt. prosecuted the editors of "Daily Jagran" Mr. Rajnath Singh, and the editor of 'Swatantra Bharat'. Some policemen beat a few journalists, entered the offices of some newspapers and broke their furniture. Thus we can say about the Ayodhya incidents that although, newspaper reports were emotional and exciting the Govt. behaved most undemocratically and inhumanly.



# JOKES

—Manish Gupta  
12th A

1- A foreigner did n't know that crime in India was so high. He arrived in New Delhi, and when he was travelling buy a DTC bus, a man came and sat next to him and asked, "Want to by a watch?"

"How much for one?" asked the foreigner.

"Sssh!" said the man. "The guy next to you is still wearing it!"

2- Why do surgeons wear mask during Operation because, if they make a mistake, no one will know who did it.

3- Waiter—Would you like to have black coffee, Sir?

Customer—What other colours do you have?

4- A man was seen walking in an awkward manner, with anger writes large on his face, wearing a pair of tight shoes. A passer by who happened to go that way, stoped and asked the man, 'Bhaisahib, from where have you purchased such tight shoes?'

"Mister, you better mind your own business. I've plucked them from a tree! But I wonder what's the trouble with you?" asked the man in reply.

"Absolutely no. But friend, you have made some haste. If you had plucked them two-three months, hence, they would have fitted your feet well," chirped the passer by.

5- We know a gentleman who, after a medical examination, was told by the doctor that he was in a pretty bad way. "Too little blood in your alcohol stream."



# Ram Janm Bhoomi Vs Babari Masjid

—Shambhu Shanker

X—A

India, the seventh biggest country, has a glorious past and her noble culture embraced everyone that came here in olden times and offered hospitality to friends and foes alike. We see now that disruptive forces are raising their heads to create chaos and confusion which is likely to lead to disintegration. Alas! this land of the Aryans is about to be divided and destroyed by anti Indian elements. The great and wise among the Indians have visualised this horrible prospect and so making Lord Rama the rallying point of their movement and a source of inspiration for the Hindus, they are trying to keep the country united.

The question of Babri Masjid which has been raised by a number of politicians is simply a propoganda to enlarge their Vote bank. They forget that in medieval ages when the Hindus were divided, foreigners came and tried to dominate and convert Indians. With this aim they tried to humiliate the Hindus by destroying their holy places and burning their libraries but Hindu culture however has survived. Thanks to the resistance put up by such great heroes as Rana Pratap, Shivaji and Guru Govind Singh

Now when the same situation is about to develop, the Hindus have risen. They have once again united themselves to maintain their ancient glory and defend their culture. If we cast our glance at the present state of affairs in the country, we find that no part of our land has remained untouched by anti-Indian activities. Activities based on division are going on. In every part of India each community is trying to capture only the high offices of the country, without caring for the national interest. In such a state of affairs the demand for Ram Janm Bhoomi (birth place of Rama) is timely. The Construction of Ram temple is the need of the hour.

It is the most legitimate demand, because Lord Rama is a great source of inspiration for the Indian people. The Babari Masjid, which is now no longer a place of worship for the Mohammades was raised only to humiliate the Hindus and to remind them that they were slaves. Indian Muslims, if they want to live in India, they must love India and its culture. They must respect the sentiments of the Hindus. They should treat Rama as their national hero.

I hope good sense will prevail in them and they will co-operate with the Hindus in building the Ram temple of Ayodhya. ●



# Karsewa-Satyagrah



—RAM KINKER SHARMA

XII-B

God helps those who help themselves. After all the Rambhakts proved this proverb true at the time when a large number of Rambhakts started 'Karsewa' at 12 noon on October 30, 1990. In spite of the heavy pressure of the Government the people from all over the country tried their best to reach Ayodhya. Many of them succeeded in their efforts they reached Ayodhya avoiding their arrest in the way.

The Rambhakt karsewaks of Kanpur district started 'Satyagrah' and offered themselves for arrest. Participation in this God's work was the ambition of their life. People of all communities came forward to take part in it. Whether Muslims or Sikhs, young or old, men or women all were eager to go to Ayodhya.

This 'Karsewa-Satyagrah' started on October 26 in Kanpur and continued till 30th of October, till all the jails of Fatehgarh, stable and unstable, were filled by the karsewaks. On October 28 thousands of karsewaks were arrested and the administration had no place to imprison them.

On the third day of Satyagrah, many saints and leaders were arrested in Kanpur. One of them was Swami Permanand ji.

Sadhvi Rhitambhara, the founder of Bhartiya Majdoor Sangh 'Dattopant ji

Thengdi' and some others. Hundreds of Karsewaks were arrested with them too.

My father, who is the secretary of Vishwa Hindu Parishad was also arrested with a number of Rambhakts of his area. He and his companions reached Navin Market, Kanpur for 'Satyagrah'. There arose a big rally and they were arrested there. They were sent to Panki Police Station, where the police officers made their warrants. Then all the Karsewaks were sent to 'Fatehgarh central Jail.' They sang. 'Ram nam Sankirtan' on the way to Fatehgarh. They reached the central Jail late at night.

Fatehgarh Central Jail was a big jail spreading far and wide. It covers an area of about one or two acres. It has many corn fields, play fields, a big kitchen and many huge barracks where the prisoners lived. The height of the walls is about fifteen to twenty feet.

When the Rambhakts reached the jail, there they created many worries for the jail administration. The jailor arranged some tents and canopies in the open fields for Rambhakts, but it was not enough. So many Karsewaks passed their nights under the sky. A barack was allotted to my father with some other leaders. But the night was very cold and my father did not have any blanket or quilt with him. The jail

administration could not arrange the blankets in such a huge number. So he shared a blanket to pass the first night. Next day he and some other Rambhakt were caught by cough, cold and fever. But it could not affect the enthusiasm of Rambhakts.

The Karsewaks got up early in the morning and newly arose Prabhat Feri. They welcomed the newly coming Rambhakts with great love and enthusiasm. They arranged some programmes of amusement too in the jail.

There was a big problem of food in Central Jail. The food which was given to Rambhakts was hopeless. It had small pieces of glass and stones. The Rambhakts refused to eat this food and started hunger strike against the jail administration. It is quite right that the arrival of so many Rambhakts had become a headache to the jail administration but the Government itself was responsible for it.

When the news of this food crisis reached the nearby towns of Fatehgarh and Kanpur, the people arranged the food in large quantity for Karsewaks.

On the golden day of Karsewa, when Karsewaks heard the news of Karsewa starting in Ayodhya they started to dance and sing Bhajans. They congratulated each

other.

On the second day of November, the process of releasing the Rambhakts started. But my father and other leaders were not released as the administration served NSA on them. All the leaders were transferred to Kanpur Jail except my father. It was very difficult to pass the days in the jail without any acquaintance. But after a few days, a prisoner became his friend. He looked after him very well. To passing his lovely time my father had taken with him some books to read them in the jail.

After a week, he was released on November 12, 1990. The charge of N. S. A. was cancelled. When he came back home, he told us about the Rambhakts, movement Rambhakts made very beautiful sketches of Lord Shri Ram and the prescribed model of Shri Ram Temple on the walls of the jail. Some of them wrote Hanuman Chalisa. A Gujrati Rambhakt made a beautiful sketch of a Saint of his state who was also in the jail that time.

Thus Rambhakts passed their days in the prison happily but the memories of that time cannot be forgotten by them.

In my opinion this Karsewa Satyagrah has illumined a new light of National Integration and nationalism in India.



# Decline and fall of spiritual Value

— Nishant Pratap Singh  
VI—B

Man has become too materialistic and greedy, words like sacrifice, wisdom, renunciation, contentment, contemplation, brother-hood, and 'moksha' connoting spiritual values has gone out of our vocabulary. Acquisition of wealth craving for power and fame and a hedonistic life style has become the summum bonum of life.

Greed has been condemned by all the religions as cardinal sin but today it has become the chief motivation. Man's greed is robbing this beautiful planet of ours of its scarce and non-renewable resources, taking mankind to the brink of an ecological disaster.

All great religions are attached with spiritual-values for example Hindus have (rather had) values—Dharm, Arth, Kam, Moksha, while Arth and Kam are of worldly values, Dharm and Moksha have spiritual values—It is a fine balance of spiritual and worldly values. Again, According to Hindu view of life, "sattavic" is the highest ideal, next "Rajasic" is a social necessity and "Tamsic" is the most dangerous and degrading form of activity.

But now the harmony between spiritual and worldly values is shattered due to material advancement, explosion of knowledge and human creativity. The net result has been the loss of humanness. As we have entered the 20th century, while the power curve rose sharply, the spiritual curve showed a down-ward trend, now the curve is nose diving, leading to an unprecedented crisis.

Now it is clear that "Hindutva" has to play a creative role to revive the spiritual values. But the revival of spiritual values within the fold of Hindutva can only take-place at the cerebral level and not emotional level and not in any case at political-level.

★—★

# Down Memory Lane

-Shashank Gupta

Class—VI-A

As hours, days and years pass, memories linger. It remains to be seen whether they are good or bad whether it is the fragrance of good or the stench of bad that dominates.

This year 1990 was a year of upheavals Not only in India but all over the world people witnessed political changes far beyond their conception. Prominent among them were the unification of the two Germanys, Political upheavals in Pakistan, Bangladesh, Great Britain and Suliman, counter-revolution in Russia and most important of all the Gulf crisis. These are just a few of the major international changes.

In India we saw the overthrow of the V. P. Singh Government then of Chandra Shekhar Ministry and now the for matter of Coungress I ministry. All these changes and many more are proof that people's will reigns supreme. As for as the present situation of the country is concerned what could be worse. There is chaos all over the country. The ripples created by the Mandal commission report ultimately ended in a terrible storm of destruction.

Life, starting from Kashmir, U. P., Gujrat,Punjab everywhere there is nothing but raging fire of violence and tension which shows no sign of dying out. But inspite of all the events we are not left with a bad taste in the mouth. Events like the release of Nelson Mandela fill over hearts with the hope that all is not lost.

A very important personal change that I have experienced is coming to this school is that. It is an institution far removed from others I had attended before, but old not regret this change But what is important to remember is that though old memories are precious the are still many more years to live and experience.

"The woods are lovely, dark and deep  
But I have promises to keep  
And miles to go before I sleep  
And miles to go before I sleep."



# "STAR WARS"—Threats & Counter Threats to World peace

Deepak Agarwal

XII-B

"Star Wars" programme is currently one of the most controversial issues. It not only poses a great challenge to world peace but will also accenuate arms race between the two super powers by extending it to space. The land and the seas have already been militarised and also, in part, nuclearised. Currently the outer space, the fourth dimension, so far largely free from military conflicts despite the presence of spy and military satellites, is under threat.

The "Star Wars" project was very much in President Regan's mind long before he formally expounded it for the first time, in March 1983. He felt that space based defence system is necessary against nuclear missiles. If Strategic Defence Initiative (S. D. I.), the "Star Wars" programme is pursued, space would be turned into a new and terrible theatre of war.

Despite high sounding declaration and denials, militarisation of space has been going on for about two decades. The first military related satellite was launched in 1958 and the two Super Powers have sent up into space about 2250 anti-satellite (ASAT) weapon systems. Nuclear tipped ABMs were planned by both powers to kill in space an incoming nuclear missiles by another nuclear missiles. The "Star War" programme has been planned mainly in three steps.

**First Step** :—Early warning of an attack through geo-stationery satellite equipped with sensors to detect emissions from rockets in the boost phase. The requisite sensors could

be installed on aircraft on satellites or on space platform.

**Second Step**—In this step the device assesses the magnitude of the threat, determines the number of rockets, their nature and positions. This step also includes discrimination between real and false targets. Interceptors & beam weapons would be deployed accordingly.

**Third Step** :—Assessment of damage to find out how many targets have been wrecked and to rectify the faults in defence whenever possible. The maximum time available for all the three steps of interception would not be more than half an hour in any way. The 'Star Wars' technologies are feasible and have working models of free electron laser weapons and interceptor rockets for terminal defence of selected installations. The 'Star Wars' effort had initially contemplated placing lasers in space as well as on the ground.

Many scientists as well as military authorities now favour nuclear defences. Advocates of nuclear devices believe that these offer a chance to end the world's dependence on the balance of terror, a chance for nuclear physics to do something for humanity by way of compensation for investing the hydrogen bomb. The "Star Wars" hold a promise of a distant millennium when nuclear weapons will no longer exist.

"Star Wars computers could destabilize a set up. The least error in the computer system would launch a nuclear war. But 'Star Wars' advocate conted that at worst, a mis-

fake would cause snaps, crackles and pops in outer space.

Moreover, just as an aircraft carrier today is protected by a huge and costly task force of destroyers, cruisers and reconnaissance and fighter aircraft, 'Star War' satellites targets which can be successfully defended only at a heavy cost

**NAM's Deep Concern**—The non-aligned countries concern over space weapons and the 'Star War's' programme has been repeatedly expressed. Their assessment of S. D. I. is that all attempts to defend nations from nuclear attacks by providing a new weapons system would certainly fail and would merely accentuate the arms race without benefitting any power. These countries have urged that the development of space weapons and extension of the arms race to outer space must be prevented at all costs.

#### **"Star Wars" and Asian Security :**

Apparently Asia occupies a significant place in the plans of the western and Eastern strategists for a nuclear space war. The western strategists are making persistent efforts to draw Asia and the Pacific in to the plans for the militarisation of space. A ground based electro-Optical tracking station has been setup there to monitor low-orbit space. The aim of the station is to help in knocking out artificial earth satellites of the enemy. The "Star wars" plans gives great importance to submarines which constitute a formidable force in the NATO navies deployed in the Indian and Pacific Oceans. Plans are afoot to equip submarines with systems for the vertical launching of nuclear missiles. Their energy converted into laser beams, will be used to destroy enemy missiles at their launching pads. The "Star War" also provide communication channels for the NATO naval forces

in the Pacific and the India ocean.

**India and "Star Wars"** :—India, opposed as it is to the manufacture and poliferation of all types of nuclear weapons has repeatedly denounced all programmes for militarisation of space. 'Star Wars' project is the implicit extension of the arms race to outer space.

The "Star Wars" plan came under sharp criticism at the conference of the Foreign Ministers of non-aligned countries held in Luanda in Sept. 1985 and non-aligned coordination Bureau held in New Delhi in April, 1986. Mrs. Indira Gandhi was one of the strongest critics of S. D. I. Mr. Rajiv Gandhi also sticks to India's known stand and for very good reasons. The conferences emphasised that for the attainment of general and complete disarmament under effective international control, space must be used exclusively for peaceful purposes and for the welfare of all countries and must not be turned into an area of the arms race. The members of the Bureau urged all countries to refrain from taking any steps which might lead to the development, testing and deployment of weapons in space.

India has stressed the grave implications of the new action-reaction chain which the "Star Wars" plan would set in motion. This country has infact, pointed out that the repercussions would be very serious for the whole world. India has also rejected the claim that the proposed S. D. I. plan would prompt the super power to reach an agreement on arms control.

The prospect of an arms accord of any type would be minimal in a 'Star Wars' environment. India has, therefore voiced its concern over the current attempts to develop various type of anti-satellite (A S A T) weapons.



# HINDU AND HINDUISM

—Adarsh Srivastava

XI-A

Who are Hindus and what are the broad features of Hindu religion, that must be our first and the foremost enquiry in dealing with present controversy between the parties. The historical and etymological genesis of the word 'Hindu' has given rise to a controversy amongst Indologists, but the view generally accepted by scholars appears to be that the word 'Hindu' is derived from the river Sindhu, otherwise known as hindus which flows from the Punjab. The Persian pronounced this word Hindu and named Sindhu Aryans Hindus. The Greeks who probably gained their first ideas of India from the Persians dropped the hard aspirate and called the Hindus 'Indoi'.

The Encyclopaedia of Religious and Ethics, vol. VI has described 'Hinduism' as the title applied to that form of religion which prevails among the vast majority of the present population of the Indian Empire. The Encyclopaedia of Religious & Ethic also adds. "The name Hindu appears in the form of 'HINDUS' in the inscription on the monument of Darius Hystaspes near persepolis. As Dr. Radhakrishnan has observed, the Hindu civilization is so called since its original founders or earliest followers occupied

the territory drained by the Sindhu river system corresponding to the North-west frontier province and the Punjab This is recorded in the Rigveda, the oldest of the vedas, the Hindi scriptures which give their name to this period of Indian history The people on the Indian side of the Sindhu were called Hindus by the Persians and the later Western Invaders. That is the genesis of the word—'Hindu'. It may broadly be described as a way of life and nothing more.

The Basic Hindu religious and philosophic theory is that many roads lead to God. Didn't the Bhagwat Gita say 'even those who profess other religions and worship their religious Gods in the manner prescribed by their religion, ultimately worship me and reach me.'" Therefore, we have no hesitation in holding that High Court was right in coming to the conclusion that the Swami Narayan sect to which the appellants belonged is not a religion distinct and separate from Hindu religion and consequently, the temples belonging to the said sect do fall within the ambit of 52 of the Act i.e. the Bombay. Hindu places of public worship (Entry Authorisation Act).

# पं० दीनदयाल स. धर्म विद्यालय नवाबगंज, कानपुर

## हाई स्कूल के परीक्षार्थी

रोल नं०	नाम	रोल नं०	नाम
०५२४९९९	अभिषेक कुमार गुप्त	०५२५०२६	भूपेश कुमार सिंह
०५२५०००	अखिलेश कुमार गुप्त	२७	ब्रजेश कुमार भारतीय
०१	अमित गुप्त	२८	दीपक कुमार मिश्र
०२	अमित कुमार	२९	देवेन्द्र कुमार शुक्ल
०३	अमित कटियार	३०	धर्मेन्द्र प्रताप सिंह
०४	अमित पाण्डेय	३१	धर्मेन्द्र वर्मा
०५	अमित प्रकाश गुप्त	३२	धीरेन्द्र गुप्ता
०६	अमित कुमार	३३	दिनेश प्रताप सिंह
०७	अमित प्रशान्त	३४	गौरव गुप्त
०८	आनन्द सिंह	३५	गौरव दीक्षित
०९	अंकुश शर्मा	३६	ज्ञान सिंह
१०	अंशुमान त्रिपाठी	३७	हिमांशु निगम
११	अंशू सिंह	३८	जय कुमार सिंह
१२	अनुभव कुमार वर्मा	३९	जैनेन्द्र कुमार बाजपेयी
१३	अनुराग त्रिवेदी	४०	कुलदीप शर्मा
१४	अनुराग दुवे	४१	महेन्द्र प्रताप सिंह
१५	अनुराग गुप्त	४२	मानस रतन वर्खी
१६	अनुराग तिवारी	४३	मनीष सिंह राजपूत
१७	अर्जुन सिंह	४४	मनीष कुमार
१८	अरुण अवस्थी	४५	मनीष त्रिपाठी
१९	असीम खरे	४६	मंजुल पाण्डेय
२०	आशीष श्रीवास्तव	४७	मोहित शर्मा
२१	आशुतोष मिश्र	४८	मुदित जैन
२२	आशुतोष तिवारी	४९	मुकेश चन्द्र उत्तम
२३	अतुल खन्ना	५०	मुकेश श्रीवास्तव
२४	अतुल कुमार मिश्र	५१	नरेन्द्र कुमार चौरसिया
२५	अवनीश त्रिवेदी	५२	नवीन कुमार सिंह

०५२५०५३

५४	पंकज रूसिया
५५	पारस नाथ बाजपेयी
५६	प्रद्युम्न मिश्र
५७	प्रणय यादव
५८	प्रशांत कटियार
५९	प्रशांत श्रीवास्तव
६०	प्रशांत अग्रवाल
६१	प्रशांत त्रिवेदी
६२	प्रवीण कुमार सिवाच
६३	पुनीत कुमार गुप्त
६४	राघवेन्द्र गुप्त
६५	राजेन्द्र सिंह चन्देल
६६	रवि चोपड़ा
६७	रवि श्रीवास्तव
६८	संदीप श्रीवास्तव
६९	संदीप सिंह
७०	संजय कुमार गुप्त
७१	सतेन्द्र मिश्र
७२	सौरभ शुक्ल
७३	शंभु शंकर गुप्त

०५२५०७३

७४	शशांक ओमर
७५	शेखर भरतिया
७६	श्यामेन्द्र सिंह
७७	सिद्धार्थ श्रीवास्तव
७८	सुधीर कुमार सिंह
७९	सुकीर्ति गुप्त
८०	सुनील कुमार अग्रवाल
८१	सुनील कुमार पाण्डेय
८२	सुनील श्रीवास्तव
८३	सुरेन्द्र कुमार अग्निहोत्री
८४	स्वयं प्रकाश मिश्र
८५	उपेन्द्र सिंह
८६	विकास त्रिपाठी
८७	विक्रांत शुक्ल
८८	विनय कुमार शुक्ल
८९	वीरेन्द्र विक्रम सिंह
९०	विशाल निगम
९१	विश्वम्भर दयाल
९२	विवेक कुमार

**पं० दीनदयाल स. धर्म विद्यालय नवाबगंज कानपुर**  
**इण्टरमीडिएट के परीक्षार्थी**

रोल नं०	नाम	रोल नं०	नाम
२६९८७८	अभिषेक श्रीवास्तव	२६९९०६	भूपेश राय
७९	आदर्श कुमार पुरवार	०७	दीपक अग्रवाल
८०	अजय कुमार कटियार	०८	दीपक दुबे
८१	अजय कुमार कोष्ठा	०९	दीपक गंगवार
८२	अजय कुमार शुक्ला	१०	दीपक मिश्रा
८३	आलोक सिंह	१२	दिनेश प्रताप सिंह
८४	अनिल वर्मा	१३	गौरी शंकर गुप्ता
८५	अमित अग्रवाल	१४	गोपाल मिश्रा
८६	अमित गुप्ता	१५	ज्ञान प्रकाश बाजपेयी
८७	अमित जैन	१६	हर्ष श्रीवास्तव
८८	अमित जैन	१७	हेमन्त अग्रवाल
८९	आनन्द कुमार शर्मा	१८	हेमन्त मिश्रा
९०	अंशु बड़ौनी	१९	जगन्नाथ त्रिवेदी
९१	अंशुमान शुक्ला	२०	जगदीश कुमार त्रिपाठी
९२	अनूप कुमार	२१	कमलेश अग्निहोत्री
९३	अनुराग गुप्ता	२२	कनवार रोहिताश्व
९४	अनुराग पाण्डेय	२३	लोकेश चन्द्र पाठक
९५	अनुराग सिंह	२४	महेन्द्र पाल सिंह
९६	अरविन्द त्रिपाठी	२५	मनीष बाजपेयी
९७	आशीष कुमार	२६	मनीष कुमार गुप्ता
९८	आशीष कुमार तिवारी	२७	मनीष कुमार सिंह
९९	आशीष निगम	२८	मनीष निगम
२६९९००	आशीष शुक्ला	२९	मनीष शर्मा
०१	आशू दुबे	३०	मनीष यादव
०२	आशुतोष सचान	३१	मनीष वर्मा
०३	अश्विनी कुमार	३२	मनोज कुमार
०४	अतुल मिश्रा	३३	मनोज कुमार गुप्ता
०५	अतुल सिंह	३४	मोहित अग्रवाल

२६९९३५	मोहित जोशी
३६	नवीन मिश्रा
३७	निहार रंजन पाण्डेय
३८	निखिल उपेन्द्र गौर
३९	निर्मल पाण्डेय
४०	निर्वेद शुक्ला
४१	पंकज कुमार पाण्डेय
४२	पंकज मिश्रा
४३	पंकज श्रीवास्तव
४४	परितोष श्रीवास्तव
४५	प्रदीप कुमार
४६	प्रदीप सिंह राठौर
४७	प्रकाश अवस्थी
४८	प्रशान्त शुक्ला
४९	पुष्कर कुमार
५०	राजेन्द्र कुमार सिंह
५१	राजेश शुक्ला
५२	राजेश कुमार वर्मा
५३	राजीव कुमार राना
५४	रजनीश कुमार द्विवेदी
५५	राकेश कुमार मिश्रा
५६	राम किंकर शर्मा
६७	राम नरेश राठौर
५८	रत्नाकर त्रिपाठी

२६९९५९	रवि खन्ना
६०	रिशेन्द्र मौर्य
६१	सलिल श्रीवास्तव
६२	संदीप बोड़स
६३	संदीप वर्मा
६४	संजय कुमार श्रीवास्तव
६५	संजीव कुमार
६६	सतीश चन्द गुप्त
६७	सतीश कुमार
६८	सत्य नारायण यादव
६९	सत्येन्द्र
७०	शैलिश दीक्षित
७१	शरद कुमार सिन्हा
७२	शिव सिंह
७३	सुधेन्दु बाजपेयी
७४	सुधीर कुमार पोरवाल
७५	संजय सिंह
७६	सुरजन सिंह निरंजन
७७	तरुण कुमार अग्रवाल
७८	वीर सिंह
७९	विकास मिश्रा
८०	विनय प्रताप सिंह
८१	विनोद कुमार तिवारी
८२	विपिन कुमार शर्मा

## विद्यालय परिवार

- १- श्री ओम शङ्कर त्रिपाठी एम० ए० [हिन्दी] बी० एड०, प्राचार्य  
 २- श्री प्रयाग सिंह एम० एस-सी० [गणित] बी० एड०, उपप्राचार्य  
 ३- श्री जागेश्वर प्रसाद, श्रीवास्तव अंश कालिक प्रवर आचार्य  
 ४- श्री प्रकाश नारायण बाजपेयी एम० एस-सी० [जन्तु वि०] बी० एड० प्रवर आचार्य  
 ५- श्री राजेश कुमार शुक्ल एम० एस-सी [रसायन विज्ञान] बी० एड० प्रवर आचार्य  
 ६- श्री रामतीर्थ मिश्र एम० ए० [हिन्दी] बी० एड० प्रवर आचार्य  
 ७- श्री आनन्द प्रसाद वर्मा आई० जी० डी० [बाम्बे] कला आचार्य  
 ८- श्री महेश चन्द्र श्रीवास्तव एम० एस-सी० [गणित] एम० ए० [समाज शास्त्र] बी० एड० आचार्य  
 ९- श्री दीपक राजे बी० ए०, बी० एड० आचार्य  
 १०- श्री सुभाष चन्द्र शर्मा, एम० ए० [भूगोल] बी० एड०, डी० पी० एड० व्यायाम-विशारद आचार्य  
 ११- श्री वीरेन्द्र सिंह पाण्डेय एम० ए० [समाजशास्त्र] बी० एड० आचार्य  
 १२- श्री बिहारी लाल मिश्र एम० ए० [अंग्रेजी] बी० एड० आचार्य  
 १३- श्री गणेश शंकर बाजपेयी एम० ए० [संस्कृत] बी० एड० शास्त्री, आचार्य  
 १४- श्री गया प्रसाद वर्मा एम० ए० [अंग्रेजी] बी० एड०, आचार्य  
 १५- श्री रमाकान्त कटियार एम० एस-सी० [गणित] बी० एड० आचार्य  
 १६- श्री सतीश चन्द्र गुप्त एम० ए० [प्राचीन इतिहास राजनीति शास्त्र] एम० एड०, आचार्य  
 १७- श्री लल्लू राम चन्देल एम० एस-सी० [गणित] बी० एड०, आचार्य  
 १८- श्री हरिनाम सिंह एम० एस-सी० [रसायन] बी० एड०, आचार्य  
 १९- श्री हेमन्त शुक्ल एम० एस-सी० [भौतिकी] प्रवर आचार्य  
 २०- श्री महेंद्र प्रताप दुबे 'सुमन' एम० ए० [हिन्दी दर्शनशास्त्र] बी० एड०, आचार्य  
 २१- श्री उमेश चन्द्र तिवारी एम० एस-सी० [वनस्पति विज्ञान] बी० एड०, आचार्य  
 २२- श्री कृष्ण कुमार गुप्त एम० ए० [अंग्रेजी] एल० टी०, प्रवर आचार्य  
 २३- श्री जय पाल सिंह एम० ए० [भूगोल] आचार्य  
 २४- श्री दिनेश सिंह भदौरिया एम० एस-सी० [रसायन] बी० एड०, आचार्य  
 २५- श्री रमाकान्त मणि पुस्तकालयाध्यक्ष  
 २६- श्री रमेश चन्द्र अवस्थी बी० काम०, एम० ए०, साहित्य रत्न, कार्यालय अधीक्षक  
 २७- श्री ओंकार नाथ कार्यालय सहायक  
 २८- श्री श्याम लाल कार्यालय कर्मचारी  
 २९- श्री राम भजन प्रयोगशाला सहायक  
 ३०- श्री राम लाल प्रयोगशाला सहायक  
 ३१- श्री सुरेश चन्द्र प्रयोगशाला सहायक  
 ३२- श्री रमेश चन्द्र स्वच्छकार

# पद्यानि

( १ )

जनिता चोपवेता च यश्च विद्यां प्रयच्छति ।  
अन्नदाता भयत्राता पञ्चैते पितरः स्मृताः ॥

( २ )

पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम् ।  
मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते ॥

( ३ )

विश्वास प्रतिपन्नानां वञ्चने का विदग्धता ।  
अङ्कमारुह्य सुप्तानां हन्तुः किं नाम पौरुषम् ॥

( ४ )

भये वा यदि वा हर्षे सम्प्राप्ते यो विमर्शयेत् ।  
कृत्यं न कुरुते वेगात् स सन्तापमाप्नुयात् ॥

( ५ )

अधमाः धनमिच्छन्ति धनं मानं च मध्यमाः ।  
उत्तमाः मानमिच्छन्ति मानो हि महतां धनम् ॥

( ६ )

कार्यार्थी भजते लोको न प्रियः परमार्थिकाः ।  
वत्स क्षीरक्षयं दृष्ट्वा परित्यजति मातरम् ॥

( ७ )

कुसुमस्तवकस्येव द्वयी वृत्तिर्मनस्विनः ।  
मूढिनं वा सर्वलोकस्य विशीयेत वनेऽथवा ॥

## ॥ विद्यालय की प्रबन्ध-समिति ॥

अध्यक्ष	: श्री नरेन्द्रजीत सिंह, बैरिस्टर,	कानपुर
उपाध्यक्ष	: श्री शिवशरण शर्मा, अवकाश प्राप्त प्राचार्य वी० एस० एस० डी० महाविद्यालय,	कानपुर
मंत्री	: श्री वीरेन्द्रजीत सिंह चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट,	कानपुर
सहमंत्री	: डा० जगमोहन गर्ग, उद्योगपति,	गाजियाबाद
सदस्य	: श्री भाऊराव देवरस, सामाजिक कार्यकर्ता, प्रो० राजेन्द्र सिंह, सामाजिक कार्यकर्ता	नागपुर दिल्ली
	डा० भूषणलाल धूपड़, प्राध्यापक (आई. आई. टी.)	कानपुर
	श्री राम बालक मिश्र, एडवोकेट,	कानपुर
	श्री इन्द्रजीत जैन, एडवोकेट,	कानपुर
	श्री प्रेमचन्द्र गुप्त, व्यवसायी,	कानपुर
	श्री गौरीशंकर भार्गव, एडवोकेट,	कानपुर
	श्री हरिशंकर शर्मा, अवकाश प्राप्त अतिरिक्त शिक्षा निदेशक, उ० प्र०	कानपुर
	श्री ओम शङ्कर त्रिपाठी, प्रधानाचार्य दो शिक्षक प्रतिनिधि	कानपुर